सामुदायिक

RNI No. MPBIL02443/2020-TC

GOONJ

National News Magazine

वर्ष : 02 अंक : 12 दिसंबर 2022 मूल्य: ₹ 50 पृष्ठ : 52

इतिहास और संस्कृति की झलक दिखता

ग्वालियर मेला

नवंबर 2022 का अंक

ग्वालियर, दिसंबर 2022
(वर्ष 01, अंक 02, , पृष्ठ 52, मूल्य 50 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक
कृति सिंह

उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह

कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह

सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी

कानूनी सलाहकार
एड. अरविन्द दूदावत

न्यूज एंकर
प्रिया शिन्दे, कल्पना पाल

एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह

संकलन
भरत सिंह, स्निग्ध तोमर

छायांकन/सिटी रिपोर्टर
अनिल सिंह सिकरवार

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्क: 7880075908)

इस अंक में

नए साल से नई उम्मीदें....

महिला हिंसा उन्मूलन...26

महिला सूबेदार सोनम सम्मानित 45

जागरूकता अभियान....23

जादूगर सिकंदर...46

सोनम के जज्बे को सलाम

सीक्रेट सेंटा से...48

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक कृति सिंह के लिए गूंज ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित । संपादक-कृति सिंह
RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC

नए साल से नई उम्मीदें....

नए साल पर गूंज मीडिया ग्रुप के सभी सुधि पाठकों को नव वर्ष 2023 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं, मेरी कामना यही है कि नए साल में हम नए संकल्प लें और पुरानी गलतियों से सबक लें। पिछले साल 2022 में कई घटनाएं घटित हुईं। कई कीर्तिमान भी देश ने स्थापित किए। जी-20 की अध्यक्षता भारत को मिली, कई बड़ी मिसाइलों की लॉचिंग की गई। कूनों अभ्यारण में विदेश से चीते लाए गए जो हर्ष उल्लास का विषय रहा। इसके अलावा दीपावली पर अयोध्या में रिकार्ड दिए जलाने का नया इतिहास बना। कृषि के क्षेत्र में देश में कई कीर्तिमान स्थापित किए गए। वहीं बात अगर फीफा विश्वकप की करें तो लियोनेल मेस्सी का विश्व कप जीतने का अधूरा सपना पूरा हुआ। एक ऐसा सपना जो उनके साथ पूरी दुनिया ने देखा और उसके पूरे होने की दुआ की। केरल से लेकर कश्मीर तक भारत भर में और विश्व के हर कोने में इस फाइनल ने पूरी दुनिया को मेस्सी के रंग में रंग दिया। मैदान के बाहर उनका करिश्मा ऐसा कि उनका सपना हर फुटबॉलप्रेमी का सपना बन गया। फाइनल में टीम को खिताब दिलाकर वह फुटबॉल के इतिहास की जीवित किंवदंती बन गए। वहीं भारतीय क्रिकेट टीम ने भी इस साल कई रिकार्ड बनाए। कई दिग्गज फिल्मी सितारे हमें इस साल छोड़कर चले गए जिनकी कमी खलती रहेगी। कहा जाए कि यह साल कुछ खट्टा तो कुछ मीठा साबित हुआ है। अब एक बार फिर से चीन सहित कई देशों में कोरोना अपने पांव पसार रहा है। चीन में तो हालत काफी खराब हैं। लेकिन अच्छी बात यह है कि वैक्सीनेशन से भारत कोरोना को मात देने में कामयाब रहा है। लेकिन कोरोना के बढ़ते मामलों ने इस बार फिर चिंताएं बढ़ा दी हैं। पीएम मोदी ने सभी से मास्क लगाने और नियमों का पालन करने की अपील की है।

कोरोना महामारी हमें बहुत कुछ सिखा गई है जिंदगी में कई उतार चढ़ाव हमने देखे अब 2023 से यही आशा है कि कोरोना जैसी महामारी से हमें छुटकारा मिले और अंधेरे में उजाले की तरह कोरोना वैक्सीन से यह महामारी समाप्त हो और पूरी दुनिया में फिर एक नई सुबह हो। कोई भी नया वक्त, नया साल या नया दशक एक स्वाभाविक खुशी और उम्मीद के साथ अवतरित होता है। खुशी यह होती है कि हम पुराने से नए की ओर जा रहे हैं और उम्मीद यह कि जो होगा, पहले से बेहतर होगा।

मैं अपने देश के कोरोना वॉरियर्स को सलाम करना चाहूंगी, जिन्होंने महीनों अपने घर न जाकर, अपने घर-परिवार की रक्षा-सुरक्षा की परवाह न करते हुए खुद को जनसेवा में झोंक दिया। उन्होंने कड़ी गरमी, बरसात और इस जाड़े में लगातार काम करते हुए, एक सीमा के बाद सब्र खो देने वाली जनता के गुस्से, उसकी आक्रामकता को भी बिना शिकायत सहन किया और उनकी पीड़ा, वेदना को अपनी सदाशयता से शांत करने में कोई कोर-कसर न छोड़ी। दोस्तो, आपका यह हीरो पिछले पूरे साल भी आपके साथ लगातार बना रहा है।

नया साल उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने का समय भी है। ऐसे अधूरे संकल्प भी बहुत सारे हैं। अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई पर ले जाने के संकल्प, बेरोजगारी को खत्म करने के संकल्प, देश को विकसित राष्ट्र और विश्व शक्ति बनाने के संकल्प। ये सभी ऐसे संकल्प हैं, जो हमारे पास एक-दो साल से नहीं, बल्कि कई दशकों से हैं। हमारी अर्थव्यवस्था की नई चुनौतियों के बीच ये समस्याएं भी लगातार जटिल होती जा रही हैं। अच्छा होगा कि हम साल 2023 में उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने में जान लगा दें। यह भी अपने आप में एक नई शुरुआत ही होगी। यकीन मानिए, जो बीत गया, उसमें भी बहुत कुछ अच्छा था, जिसे साथ लिए चलना होगा। जैसे, महामारी के दौर में हम जिस तरह मिलकर लड़े, जिस तरह से हमने एक-दूसरे की चिंता की, वह काबिले तारीफ है।

कृति सिंह
संपादक

"नया साल उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने का समय भी है। ऐसे अधूरे संकल्प भी बहुत सारे हैं। अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई पर ले जाने के संकल्प, बेरोजगारी को खत्म करने के संकल्प, देश को विकसित राष्ट्र और विश्व शक्ति बनाने के संकल्प। ये सभी ऐसे संकल्प हैं, जो हमारे पास एक-दो साल से नहीं, बल्कि कई दशकों से हैं। हमारी अर्थव्यवस्था की नई चुनौतियों के बीच ये समस्याएं भी लगातार जटिल होती जा रही हैं। अच्छा होगा कि हम साल 2023 में उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने में जान लगा दें। यह भी अपने आप में एक नई शुरुआत ही होगी। यकीन मानिए, जो बीत गया, उसमें भी बहुत कुछ अच्छा था, जिसे साथ लिए चलना होगा। जैसे, महामारी के दौर में हम जिस तरह मिलकर लड़े, जिस तरह से हमने एक-दूसरे की चिंता की, वह काबिले तारीफ है।

इतिहास, संस्कृति की झलक दिखाता ग्वालियर मेला

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

मध्य प्रदेश के ग्वालियर व्यापार मेले की शुरुआत 1905 में तत्कालीन शासक कैलाशवासी माधवराव सिंधिया जी ने की थी। खास बात यह है इतने साल गुजर जाने के बाद भी यह मेला जवान है। इसके चेहरे का नूर हर साल बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि यहां पहुंचने वाले सैलानियों को सौगातें देने के लिए सरकार निरंतर प्रयासरत रहती है। ग्वालियर व्यापार मेला परिसर 104 एकड़ में फैला हुआ है। इसमें बनी कच्ची-पक्की दुकानों में ग्वालियर के अलावा अन्य राज्यों से आए व्यापारी अपने उत्पादों को सजाते हैं। कुछ चबूतरे भी हैं, जिन पर बैठकर खाने-पीने वाले अपने सामान का विक्रय करते हैं। रेसक्रास स्थित व्यापार मेला मैदान को मध्यप्रदेश का प्रगति मैदान भी कहा जाता है। यहां होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का कैलेंडर हर वर्ग को ध्यान में रखकर डिजाइन किया जाता है। जिसमें कव्वाली, मुशायरा, कवि सम्मेलन ही नहीं चित्रकला स्पर्धा तक को भी शामिल किया जाता है। व्यापारिक दृष्टिकोण से ग्वालियर व्यापार मेला काफी महत्वपूर्ण है। खरीदार और व्यापारियों के लिए शुरू किए आफर पूरे मप्र में लागू हो जाते हैं। अगर व्यापार मेले के आटोमोबाइल सेक्टर में सजे किसी कंपनी के शोरूम पर डिस्काउंट दिया जा रहा है तो वह आफर प्रदेश के हर शोरूम पर शुरू किया जाता है। इतना ही यहां लगने वाली प्रदर्शनी में सरकार की योजनाएं भी सामने आती हैं। इसका फायदा अंचल के ग्रामीण क्षेत्रों से आए किसानों को मिलता है। वे योजनाओं को जान पाते हैं और फिर फायदा भी लेते हैं।

ऑटोमोबाइल सेक्टर में आरटीओ टैक्स छूट की घोषणा

ग्वालियर। श्रीमन्त माधवराव सिंधिया ग्वालियर व्यापार मेला व्यापारी संघ के पदाधिकारियों एवं ऑटोमोबाइल व्यापारियों ने ग्वालियर मेला के ऑटोमोबाइल सेक्टर में राज्य शासन द्वारा आरटीओ टैक्स में पचास प्रतिशत छूट दिए जाने की घोषणा पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, मुख्यमन्त्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, प्रदेश के परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत, प्रभारी मंत्री तुलसी सिलावट एवं एमएसएमई मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा का हृदय से आभार व्यक्त किया है। ग्वालियर व्यापार मेला व्यापारी संघ के अध्यक्ष महेन्द्र भदकारिया, सचिव महेश मुदगल, उमेश उप्पल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता अनिल पुनियानी, उमेश उप्पल, भाजपा नेता आशीष प्रताप सिंह राठौर ने आभार व्यक्त करते हुए कहा है कि मेला ऑटोमोबाइल सेक्टर में आरटीओ टैक्स छूट दिए जाने के लिए ज्योतिरादित्य सिंधिया, मुख्यमन्त्री शिवराज सिंह, प्रदेश के परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत एवं प्रभारी मंत्री तुलसी सिलावट को मेला व्यापारी संघ के पदाधिकारियों एवं ऑटोमोबाइल व्यापारियों ने कई बार ज्ञापन दिया था।

मैरी क्रिसमस...

बचपन से हम हम सभी सेंटा के बारे में सुनते हुए आये हैं। कहा जाता है कि 'जिंगल बेल जिंगल बेलज' की धुन ठंड के मौसम में हवा से घुल जाती है और इन्ही सर्द रात में के महीने में क्रिसमस का त्यौहार मनाया जाता है। अमेरिका, नार्वे, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में तो दिसंबर का पूरा महीने क्रिसमस मनाया जाता है। कुछ उसी तरह जब हम दशहरे से लेकर दिवाली तक के पीरियड को एंजोय करते हैं। लेकिन आज हम बात दिसंबर महीने की और क्रिसमस की करेंगे। क्रिसमस से जुड़े कई सवाल है जो कई बार लोगों के जहन में आते हैं जैसे- क्रिसमस 25 दिसंबर के दिन ही क्यों मनाते हैं? क्रिसमस के दिन एक बुजुर्ग शख्स क्यों तोहफे बांटता है, आखिर सीक्रेट सेंटा कौन होते हैं? क्रिसमस के अवसर पर हम आपको इन सवालों के जावाव देते हैं।

क्रिसमस ईसा मसीह के जन्म की याद में मनाया जाने वाला एक वार्षिक त्यौहार है, जिसे मुख्य रूप से 25 दिसंबर को दुनियाभर के अरबों लोगों के बीच एक धार्मिक और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्रिसमस डे कई देशों में एक सार्वजनिक अवकाश है। इस त्यौहार को अधिकांश ईसाइयों द्वारा धार्मिक रूप से मनाया जाता है, साथ ही सांस्कृतिक रूप से कई गैर-ईसाइयों द्वारा मनाया जाता है। और एक इसके आसपास आयोजित छुट्टियों को भी लोग जमकर एंजोय करते हैं। यीशु के जन्म की तारीख के बारे में अलग-अलग परिकल्पनाएं हैं और चौथी शताब्दी की शुरुआत में चर्च ने 25 दिसंबर की तारीख तय की थी। रोमन कैलेंडर में यह शीतकालीन संक्रांति की पारंपरिक तारीख से मेल खाती है। यह 25 मार्च को घोषणा के ठीक नौ महीने बाद है आता है। अधिकांश ईसाई 25 दिसंबर को ग्रेगोरियन कैलेंडर में मनाते हैं, जिसे दुनिया भर के देशों में उपयोग किए जाने वाले नागरिक कैलेंडर में लगभग

सार्वभौमिक रूप से अपनाया गया है। हालाँकि, पूर्वी ईसाई चर्चों का हिस्सा पुराने जूलियन कैलेंडर के 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाता है, जो वर्तमान में ग्रेगोरियन कैलेंडर में 7 जनवरी से मेल खाता है। ईसाइयों के लिए, यह मानना कि ईश्वर मानवता के पापों का प्रायश्चित करने के लिए मनुष्य के रूप में दुनिया में आए, न कि यीशु की सही जन्मतिथि जानने के लिए, क्रिसमस मनाने का प्राथमिक उद्देश्य यहीं माना जाता है।सीक्रेट सेंटा कौन होते हैं?

जैसे-जैसे दिन छोटे होते हैं और छुट्टियों का मौसम करीब आता है, लोग हमेशा परिवार और दोस्तों के साथ एकजुटता और खुशी में इकट्ठा होते हैं। क्रिसमस में अपनी जड़ों के साथ, छुट्टियों की भावना में परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ मनाने के लिए गुप्त सांता सबसे लोकप्रिय परंपराओं में से एक बन गया है। लेकिन छुट्टियां तो ठीक है पर सीक्रेट सैंटा क्या है और यह कैसे आया? ये बड़ा सवाल है। सीक्रेट सेंटा एक पश्चिमी क्रिसमस परंपरा है जिसमें एक समूह या समुदाय के सदस्यों को यादृच्छिक रूप से एक व्यक्ति सौंपा जाता है जिसे वे उपहार देते हैं। सीक्रेट सांता एक उपहार एक्सचेंज परंपरा है जो क्रिसमस की शुरुआती परंपराओं में अपनी जड़ें रखती है। उपहार देने वाले की पहचान गुप्त रखनी है और उसे प्रकट नहीं करना चाहिए। सीक्रेट सांता एक उपहार विनिमय परंपरा है जिसकी जड़ें क्रिसमस की शुरुआती परंपराओं में हैं। मूल सीक्रेट सैंटस सेंट निक के उपहार देने वाले मददगार थे। आज इसे एक उपहार विनिमय अवसर के रूप में मनाया जाता है जो परिवार और दोस्तों के बीच संबंधों को नवीनीकृत करता है, और आम तौर पर व्यस्त सहकर्मियों के बीच संबंधों को मजबूत करने के क्षण के रूप में मनाया जाता है। एक गुप्त सांता उपहार विनिमय बनाने का अर्थ है एकता और प्रसन्नता का क्षण बनाना। मेरा गुप्त सांता कौन होगा? यह हमेशा एक मजेदार आश्चर्य होता है!

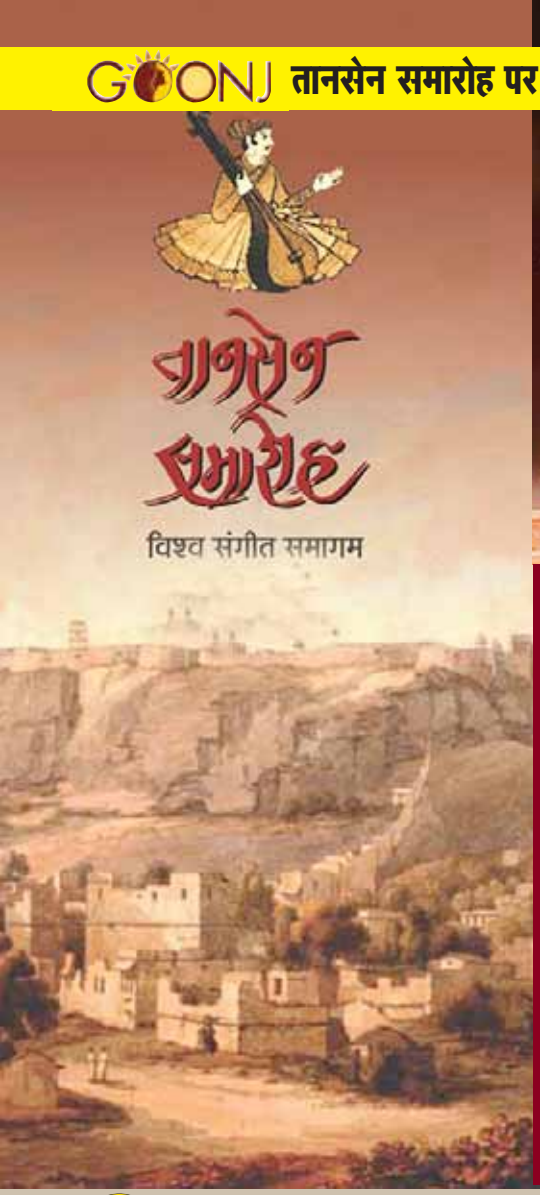

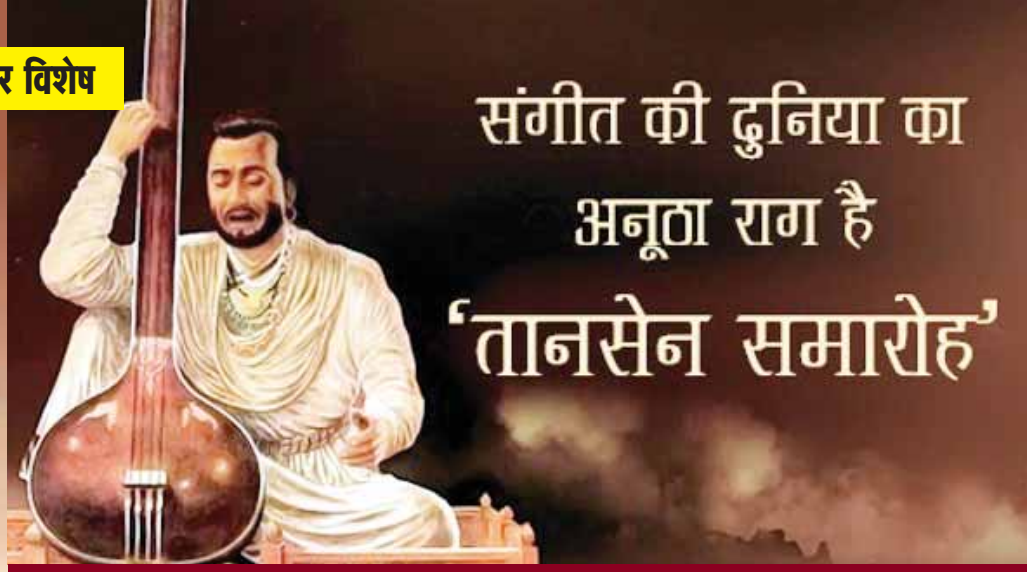

तानसेन समारोह में गंगा-जमुनी तहजीब के सजीव दर्शन

भारतीय शास्त्रीय संगीत की अनादि परंपरा के श्रेष्ठ कला मनीषी तानसेन की स्मृति में ग्वालियर में आयोजित होने वाले तानसेन समारोह का इस साल 98वाँ वर्ष है। इस समारोह की सबसे बड़ी खूबी सर्वधर्म समभाव और इससे जुड़ी अक्षुण्ण परंपराएँ है। भारतीय संस्कृति में रची बसी गंगा-जमुनी तहजीब के सजीव दर्शन तानसेन समारोह में होते हैं। मुस्लिम समुदाय से बावस्ता देश के ख्यातिनाम संगीत साधक जब इस समारोह में भगवान कृष्ण व राम तथा नृत्य के देवता भगवान शिव की वंदना राग-रागनियों में सजाकर प्रस्तुत करते हैं तो साम्प्रदायिक सदभाव की सरिता बह उठती है। रियासतकाल में फरवरी 1924 में ग्वालियर में उर्स तानसेन के रूप में शुरू हुए इस समारोह का आगाज हरिकथा व मौलूद (मीलाद शरीफ) के साथ ही हुआ था। तब से अब तक उसी परंपरा के साथ तानसेन समारोह का आगाज होता आया है। इतनी सुदीर्घ परंपरा के उदाहरण बिरले ही हैं।

तानसेन समारोह में नए आयाम तो जुड़े पर पुरानी परंपराएँ अक्षुण्ण रही हैं। अब यह समारोह विश्व संगीत समागम का रूप ले चुका है। साथ ही समारोह की पूर्व संध्या पर उपशास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम गमक का आयोजन भी होता है। इस साल भी 97 साल से चली आ रही परंपराओं का निर्वहन करते हुए 98वें तानसेन समारोह का आयोजन 19 से 23 दिसम्बर तक आयोजित हुआ। तानसेन समारोह का प्रारंभ शहनाई वादन से होता है। इसके बाद ढ़ोली बुआ महाराज की हरिकथा और फिर मीलाद शरीफ का गायन। सुर सम्राट तानसेन और प्रसिद्ध सूफी संत मोहम्मद गौस की मजार पर चादर पोशी भी होती है। ढ़ोली बुआ महाराज अपनी संगीतमयी हरिकथा के माध्यम से कहते हैं कि धर्म का मार्ग कोई भी हो सभी ईश्वर तक ही पहुँचते हैं। उपनिषद् का भी मंत्र है ÷एकं सद् विप्र- बहुधा वदन्ति। हर जाति, धर्म व सम्प्रदाय से ताल्लुक रखने वाले श्रेष्ठ व मूर्धन्य संगीत कला साधकों ने कभी न कभी इस आयोजन में अपनी प्रस्तुति दी है। शास्त्रीय गायक सुश्री असगरी बेगम, पं. भीमसेन जोशी व डागर बंधुओं से लेकर मशहूर शहनाई नवाज उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, सरोद वादक अमजद अली खाँ, संतूर वादक पं. शिवकुमार शर्मा, मोहनवीणा वादक पं. विश्वमोहन भट्ट जैसे मूर्धन्य संगीत कलाकार इस समारोह में गान महर्षि तानसेन को स्वरांजलि देने आ चुके हैं। वर्ष 1989 में तानसेन समारोह में शिरकत करने आये भारत रत्न पंडित रविशंकर ने कहा था यहां एक जादू सा होता है, जिसमें प्रस्तुति देते समय एक सुखद रोमांच की

अनुभूति होती है। एक बार मशहूर पखावज वादक पागलदास भी तानसेन के उर्स के मौके पर श्रद्धांजलि देने आये, लेकिन रेडियो के ग्रेडेड आर्टिस्ट नहीं होने के कारण समारोह में भाग नहीं ले सके। उन्होंने तानसेन की मजार पर ही बैठ कर पखावज का ऐसा अद्भुत वादन किया कि संगीत रसिक मुख्य समारोह से उठकर उनके समक्ष जा कर बैठ गये। राष्ट्रीय तानसेन समारोह की यह भी खूबी रही है कि पहले राज्याश्रय एवं स्वाधीनता के बाद लोकतांत्रिक सरकार के प्रश्रय में आयोजित होने के बावजूद इस समारोह में सियासत के रंग कभी दिखाई नहीं दिये। यह समारोह तो सदैव भारतीय संगीत के विविध रंगों का साक्ष्य बना है। आधुनिक युग में शैक्षिक परिदृश्य से जहां गुरू शिष्य परंपरा लगभग ओझल हो गई है। भारतीय लोकाचार में समाहित इस महान परंपरा को संगीत कला के क्षेत्र में आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। तानसेन समारोह में भी भारत की इस विशिष्ट परंपरा के सजीव दर्शन होते हैं। संगीत सम्राट तानसेन की नगरी ग्वालियर के लिए कहावत प्रसिद्ध है कि यहां बच्चे रोते हैं, तो सुर में और पत्थर लुढ़कते है तो ताल में। इस नगरी ने पुरातन काल से आज तक एक से बढकर एक संगीत प्रतिभायें संगीत संसार को दी हैं और संगीत सूर्य तानसेन इनमें सर्वोपरि हैं। लगभग 505 वर्ष पूर्व ग्वालियर जिले के बेहट गाँव की माटी में मकरंद पाण्डे के घर जन्मा तन्ना मिसर अपने गुरू स्वामी हरिदास के ममतामयी अनुशासन में एक हीरे सा परिस्कार पाकर धन्य हो गया। तानसेन की आभा से तत्कालीन नरेश व सम्राट भी विस्मित थे और उनसे अपने दरबार की शोभा बढ़ाने के लिये निवेदन करते थे।

भारत रत्न

अटल बिहारी वाजपेयी

ग्वालियर के गौरव
अटलजी की जयंती पर गूंज विशेष

भारत माँ के सच्चे सपूत, राष्ट्र पुरुष, राष्ट्र मार्गदर्शक, सच्चे देशभक्त ना जाने कितनी उपाधियों से पुकार जाता था भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी को वो सही मायने में भारत रत्न थे। इन सबसे भी बढ़कर पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी एक अच्छे इंसान थे। जिन्होंने जमीन से जुड़े रहकर राजनीति की और ''जनता के प्रधानमंत्री'' के रूप में लोगों के दिलों में अपनी खास जगह बनायी थी। एक ऐसे इंसान जो बच्चे, युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों सभी के बीच में लोकप्रिय थे। देश का हर युवा, बच्चा उन्हें अपना आदर्श मानता था। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया और जिसका उन्होंने अपने अंतिम समय तक निर्वहन किया। बेशक अटल बिहारी वाजपेयी जी कुंवारे थे लेकिन देश का हर युवा उनकी संतान की तरह था। देश के करोडो बच्चे और युवा उनकी संतान थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का बच्चों और युवाओं के प्रति खास लगाव था। इसी लगाव के कारण पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी बच्चों और युवाओं के दिल में खास जगह बनाते थे।

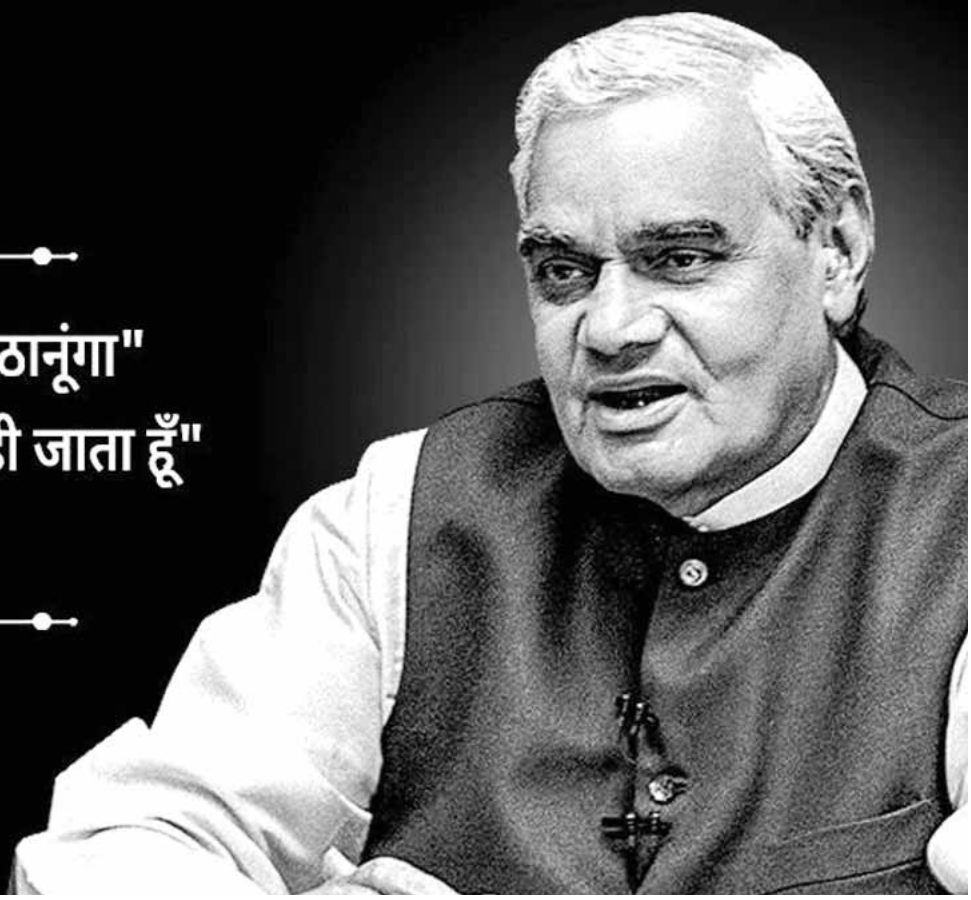

"हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा"
"काल के कपाल पर लिखता ही जाता हूँ"
-अटल बिहारी वाजपेयी

ग्वालियर के गौरव अटलजी की जयंती पर गूंज विशेष

भारत माँ के सच्चे सपूत, राष्ट्र पुरुष, राष्ट्र मार्गदर्शक, सच्चे देशभक्त ना जाने कितनी उपाधियों से पुकार जाता था भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी को वो सही मायने में भारत रत्न थे। इन सबसे भी बढ़कर पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी एक अच्छे इंसान थे। जिन्होंने जमीन से जुड़े रहकर राजनीति की और ''जनता के प्रधानमंत्री'' के रूप में लोगों के दिलों में अपनी खास जगह बनायी थी। पूर्व प्रधानमंत्री एवं ग्वालियर के सपूत अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस 25 दिसंबर को गौरव दिवस के रूप में मनाया गया। इस मोके पर ग्वालियर में अनेक आयोजन हुए। महाराज बाडे पर उत्सव के रूप में विभिन्न आयोजन आयोजित किए गए जिसमें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, प्रभारी मंत्री तुलसीराम सिलावट सहित अन्य मंत्री गण एवं नेतागणों ने शिरकत की।

भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जीवन का क्षण-क्षण भारत को परम वैभव के शिखर पर ले जाने हेतु समर्पित रहा। अटल जी जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व वाले जननेता को पाकर भारतीय राजनीति धन्य हुई है। उनका मूल्यों व आदर्शों आधारित जीवन हम करोड़ों कार्यकर्ताओं के लिए एक अनमोल धरोहर है। अटल बिहारी वाजपेयी, बिहारी का जन्म 25 दिसंबर, 1924, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत में हुआ था और वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता थे और 1996 में और फिर 1998 से 2004 तक भारत के दो बार प्रधान मंत्री रहे।

वाजपेयी पहली बार 1957 में भारतीय जनसंघ (बीजेएस) के सदस्य के रूप में संसद के लिए चुने गए थे, जो भाजपा के अग्रदूत थे। 1977 में बीजेएस जनता पार्टी बनाने के लिए तीन अन्य दलों में शामिल हो गया, जिसने जुलाई 1979 तक सरकार का नेतृत्व किया। जनता सरकार में विदेश मंत्री के रूप में, वाजपेयी ने पाकिस्तान और चीन के साथ संबंधों में सुधार के लिए

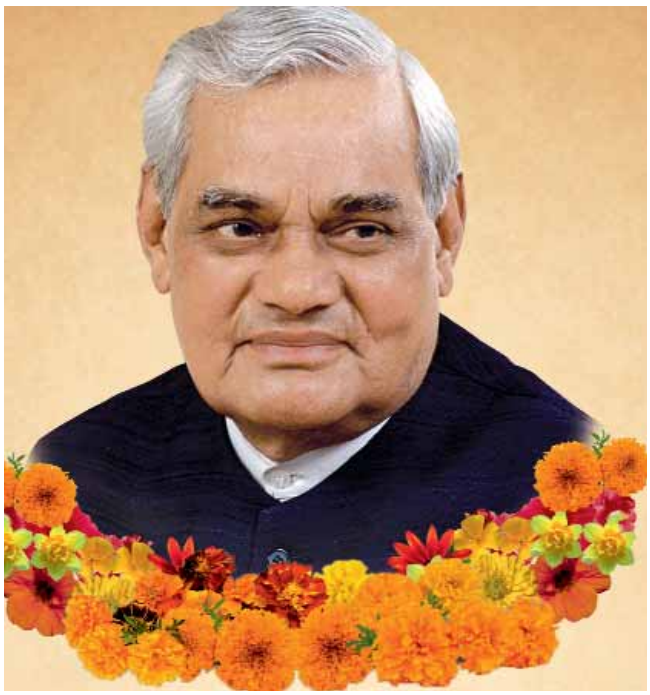

प्रतिष्ठा अर्जित की। 1980 में, जनता पार्टी में विभाजन के बाद, वाजपेयी ने बीजेएस को खुद को भाजपा के रूप में पुनर्गठित करने में मदद की।

वाजपेयी ने मई 1996 में प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ली थी, लेकिन अन्य दलों के समर्थन को आकर्षित करने में विफल रहने के बाद, केवल 13 दिनों में ही पद पर थे। 1998 की शुरुआत में वे फिर से प्रधान मंत्री बने, जिसमें भाजपा ने रिकॉर्ड संख्या में सीटें जीतीं, लेकिन उन्हें क्षेत्रीय दलों के साथ एक अस्थिर गठबंधन बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। 1999 में भाजपा ने संसद में अपनी सीटें बढ़ाईं और सरकार पर अपनी पकड़ मजबूत की।

1998 में भारत के कई परमाणु हथियारों के परीक्षण की पश्चिमी आलोचना के सामने वाजपेयी ने एक विद्रोही मुद्रा ग्रहण की। पहले भारत के मुस्लिम अल्पसंख्यक के प्रति उनके सुलह के इशारों के लिए उनकी प्रशंसा की गई थी। 2000 में उनकी सरकार ने कई प्रमुख सरकारी उद्योगों से सार्वजनिक धन के विनिवेश का एक व्यापक कार्यक्रम शुरू किया। 2002 में वाजपेयी की सरकार की गुजरात में दंगों पर प्रतिक्रिया करने में धीमी गति के लिए आलोचना की गई थी जिसमें लगभग 1,000 लोग (मुख्य रूप से मुस्लिम) मारे गए थे। फिर भी, 2003 में वाजपेयी ने कश्मीर क्षेत्र को लेकर पाकिस्तान के साथ भारत के लंबे समय से चल रहे विवाद को सुलझाने के लिए एक ठोस प्रयास किया। उनके नेतृत्व में, भारत ने स्थिर आर्थिक विकास हासिल किया, और देश सूचना प्रौद्योगिकी में एक विश्व नेता बन गया, हालांकि भारतीय समाज के गरीब तत्व अक्सर आर्थिक समृद्धि से वंचित महसूस करते थे। वाजपेयी ने 2005 के अंत में राजनीति से अपनी सेवानिवृत्ति की

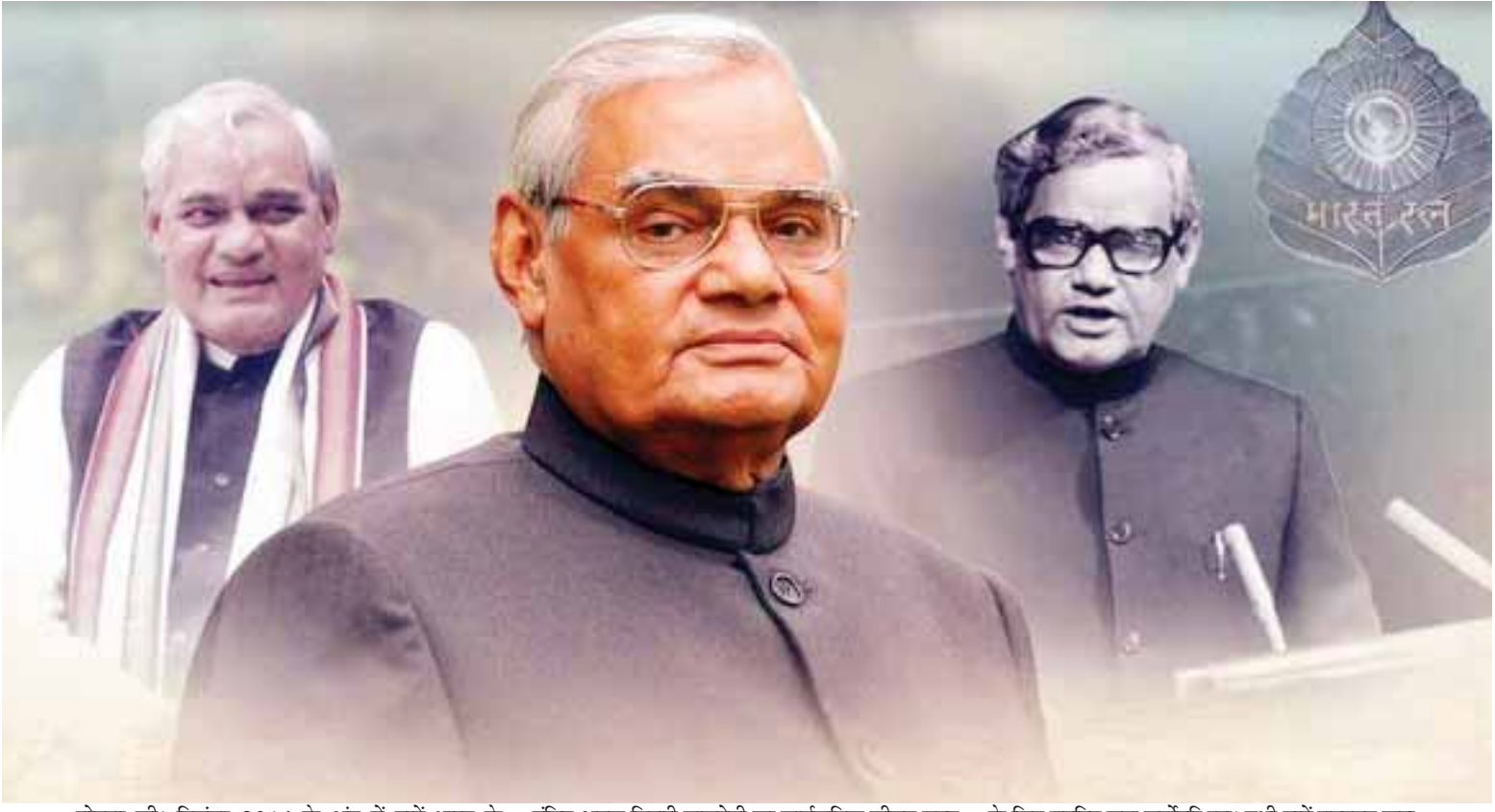

घोषणा की। दिसंबर 2014 के अंत में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। लंबी बीमारी के बाद 16 अगस्त, 2018 को 93 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। एक सांसद के रूप में वाजपेयी का करियर चार दशकों में फैला और प्रधान मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, भारत ने 1998 में पोखरण-द्वितीय नामक अपना दूसरा परमाणु बम परीक्षण किया। एक सरकारी बयान में कहा गया है कि पीएम के रूप में उनकी विरासत में चतुर और बुद्धिमान आर्थिक नीतियां भी शामिल हैं, जिन्होंने स्वतंत्र भारत के इतिहास में निरंतर विकास की सबसे लंबी अवधि की नींव रखी। उन्हें 2014 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था और उनकी जयंती, जो 25 दिसंबर को आती है, को सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाता है। अक्टूबर 2018 में गंगोत्री ग्लेशियर के पास चार हिमालयी चोटियों का नाम वाजपेयी के नाम पर रखा गया था।

एक ऐसे इंसान जो बच्चे, युवाओं, महिलाओं, बुजुर्गों सभी के बीच में लोकप्रिय थे। देश का हर युवा, बच्चा उन्हें अपना आदर्श मानता था। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लिया और जिसका उन्होंने अपने अंतिम समय तक निर्वहन किया। बेशक अटल बिहारी वाजपेयी जी कुंवारे थे लेकिन देश का हर युवा उनकी संतान की तरह था। देश के करोडो बच्चे और युवा उनकी संतान थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का बच्चों और युवाओं के प्रति खास लगाव था। इसी लगाव के कारण पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी बच्चों और युवाओं के दिल में खास जगह बनाते थे। भारत की राजनीति में मूल्यों और आदर्शों को स्थापित करने वाले राजनेता और प्रधानमंत्री के रूप में पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी का काम बहुत शानदार रहा। उनके कार्यों की बदौलत ही उन्हें भारत के ढांचागत विकास का दूरदृष्टा कहा जाता है। सब के चहेते और विरोधियों का भी दिल जीत लेने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पंडित अटल बिहारी वाजपेयी का सार्वजनिक जीवन बहुत ही बेदाग और साफ सुथरा था इसी बेदाग छवि और साफ सुथरे सार्वजनिक जीवन की वजह से अटल बिहारी वाजपेयी जी का हर कोई सम्मान करता था। उनके विरोधी भी उनके प्रशंसक थे। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी के लिए राष्ट्रहित सदा सर्वोपरि रहा। तभी उन्हें राष्ट्रपुरुष कहा जाता था। पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी की बातें और विचार सदां तर्कपूर्ण होते थे और उनके विचारों में जवान सोच झलकती थी। यही झलक उन्हें युवाओं में लोकप्रिय बनाती थी।

बहुआयामी प्रतिभा के धनी और विशाल व्यक्तित्व वाले भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति में अजातशत्रु के नाम से स्मरणीय रहेंगे। उनके विराट राजनीतिक व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा स्वतंत्र भारत के इतिहास के हर मोड़ पर खूब होती है और होती ही रहेगी। भारत की संसदीय राजनीति के वे आधार स्तंभ और शिखर पुरुष थे, जिनके इर्दगिर्द संसदीय इतिहास घूम रहा है। उनका संसदीय कार्यकाल उनके व्यक्तित्व का अनुपम अध्याय था। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और यहां की संसदीय शासन व्यवस्था में संसद सर्वोच्च है। भारतीय संसद की जब भी चर्चा होती है, उसके इतिहास को टटोला जाता है तो इसमें यदि किसी एक व्यक्तित्व का नाम हर भारतीय और राजनीतिज्ञ के मानस पटल पर उभरता है, वह नाम है श्रद्धेय अटलजी का, जिन्हें संसदीय राजनीति का शिखर पुरुष कहा जाता है।

भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाएंगे स्टार्टअप

भारत का स्टार्टअप ईकोसिस्टम समय के साथ काफी मैच्योर और मजबूत हुआ है। पूरी दुनिया इस समय मैक्रोइकोनॉमिक मुश्किलों से गुजर रही है। इसके बावजूद मेरा मानना है कि स्टार्टअप शुरू करने के लिए इससे अच्छा समय कोई नहीं हो सकता। खुद गूगल जैसी कंपनी भी ऐसे ही दौर में बनाई गई थी। यह बात गूगल फॉर इंडिया इवेंट के दौरान गूगल के सीईओ सुंदर पिचई ने कही। मप्र स्टार्टअप कॉन्क्लेव में इस साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कम समय में देश में स्टार्टअप की दुनिया ही बदल गई है। दुनिया का सबसे बड़ा स्टार्टअप ईकोसिस्टम भारत में है, यूनिकॉर्न हब में भी हम एक ताकत के रूप में उभर रहे हैं। भारत में स्टार्टअप का जितना बड़ा वॉल्यूम है उतनी ही बड़ी डायवर्सिटी भी है। कमोबेश बीते कुछ सालों में भारत का स्टॉर्टअप ईकोसिस्टम मजबूत और स्वर्णिम कहानी लिख रहा है। यहीं नहीं एक समय पहले हम इस बात को लेकर जश्न मनाते थे कि सिलिकॉन वैली में अमुक स्टॉर्टअप का प्रमुख भारतीय मूल का है, लेकिन आज नया दौर है, नया भारत है जहां स्टॉर्टअप भारत के लोगों द्वारा खोले जा रहे हैं। हमारे देश में एक जमाने पहले सबसे अधिक आईटी के स्टॉर्टअप हुआ करते थे, लेकिन अब स्पेस समेत अन्य क्षेत्रों में भी स्टॉर्टअप बड़ी संख्या में खुल रहे हैं। भारत सरकार ने देश को 2025 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में स्टार्टअप महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पिछले कुछ सालों में भारतीय युवाओं ने अपनी उद्यमिता का शानदार प्रदर्शन किया है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने लोकसभा में बताया कि भारत में स्टार्टअप का सक्सेस रेट बाकी दुनिया की तुलना में कहीं ज्यादा है। केंद्र सरकार ने स्टार्टअप को फलने-फूलने का बेहतर माहौल प्रदान करने के लिए 16 जनवरी, 2016 को स्टार्टअप इंडिया की शुरुआत की थी।देश में मान्यता प्राप्त स्टॉर्टअप 2016 में 452 थे। ये बढ़कर 30 नवंबर, 2022 तक 84,012 हो चुके हैं। पिछले 6 सालों में स्टार्टअप की संख्या में लगभग 185 गुना इजाफा दर्ज किया गया है। वहीं अगर यूनिकॉर्न की बात करें तो भारत ने चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। जनवरी से जुलाई 2022 के बीच भारत के 14 स्टार्टअप यूनिकॉर्न (यूनिकॉर्न उन स्टार्टअप्स को कहा जाता है जिनकी वैल्यूएशन 1 अरब डॉलर के पार निकल जाए) बने, जबकि इसी अवधि में चीन के सिर्फ 11 स्टार्टअप यूनिकॉर्न बने। यूनिकॉर्न की कुल संख्या के हिसाब से अमेरिका और चीन के बाद भारत तीसरे नंबर पर है।भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई में सबसे ज्यादा स्टॉर्टअप शुरू हुए हैं। 2016 में जहां इनकी संख्या 86 थी वहीं 2022 में इनकी संख्या 15,571 तक पहुंच गई है। 2022 में महाराष्ट्र में स्टार्टअप ने लगभग 163,451 लोगों को रोजगार दिया जो देश में सबसे ज्यादा है। महाराष्ट्र के बाद दिल्ली में सबसे अधिक स्टार्टअप खुले हैं। देश में सभी सरकारी मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स में से लगभग 58 प्रतिशत सिर्फ पांच राज्यों में है। महाराष्ट्र 15,571 सरकारी मान्यता प्राप्त स्टार्टअप के साथ टॉप पर है। कर्नाटक में 9,904, दिल्ली में 9,588, उत्तर प्रदेश में 7,719 और गुजरात में 5,877 मान्यता प्राप्त स्टार्टअप हैं।

36 साल बाद अर्जेंटीना ने रचा इतिहास

आखिरकार लियोनेल मेस्सी का विश्व कप जीतने का अधूरा सपना पूरा हुआ। एक ऐसा सपना जो उनके साथ पूरी दुनिया ने देखा और उसके पूरे होने की दुआ की। केरल से लेकर कश्मीर तक भारत भर में और विश्व के हर कोने में इस फाइनल ने पूरी दुनिया को मेस्सी के रंग में रंग दिया।

बरसों में बिरला ही कोई खिलाड़ी होता है जिसका इस कदर असर मैदान पर और मैदान के बाहर नजर आता है। मैदान पर असर ऐसा कि पहले कदम पर मिली हार के बाद पूरी टीम का मनोबल यूं बढाना कि फिर आखिरी मोर्चा फतेह करके ही दम ले। शायद पेले और डिएगो माराडोना के बाद वह पहले फुटबॉलर हैं जिनका जादू पूरी दुनिया के सिर चढ़कर बोला है । यह ट्रॉफी उनके लिये कितना मायने रखती है, यह इसी बात से साबित हो गया कि गोल्डन बॉल पुरस्कार लेने के लिये जब उनका नाम पुकारा गया तो पहले वह रूके और ट्रॉफी को चूमा।

मैदान के बाहर उनका करिश्मा ऐसा कि उनका सपना हर फुटबॉलप्रेमी का सपना बन गया। पल पल पलटते मैच के हालात के साथ दर्शकों की धड़कने भी तेज होती रही। मेस्सी के हर गोल पर जश्न मना और खिताब जीतने पर अर्जेंटीना से मीलों दूर शहरों में भी आतिशबाजी की गई। मात्र 11 बरस की उम्र में ग्रोथ हार्मोन की कमी (जीएचडी) जैसी बीमारी से जूझने से लेकर दुनिया के महानतम फुटबॉलरों में शामिल होने तक मेस्सी का सफर जुनून, जुझारूपन और जिजीविषा की अनूठी कहानी है और रविवार को फाइनल में टीम को खिताब दिलाकर वह फुटबॉल के इतिहास की जीवित किंवदंती बन गए।

अब इस बहस पर भी विराम लग जायेगा कि माराडोना और मेस्सी में से कौन महानतम है। देश के लिये खिताब नहीं जीत पाने के मेस्सी के हर घाव पर भी मरहम लग गया। सात बार बलोन डिओर, रिकॉर्ड छह बार यूरोपीय गोल्डन शूज, बार्सीलोना के साथ रिकॉर्ड 35 खिताब, ला लिगा में 474 गोल , एक क्लब (बार्सीलोना) के लिये सर्वाधिक 672 गोल कर चुके मेस्सी को विश्व कप नहीं जीत पाने की टीस हमेशा से रही। उन्हें पता था कि यह उनके पास आखिरी मौका है और 23वें मिनट में पेनल्टी पर गोल करने से पहले आंख मूंदकर शायद उन्होंने इसी प्रण को दोहराया।

अर्जेंटीना ने जब आखिरी बार 1986 में विश्व कप जीता तब माराडोना देश के लिये खुदा बन गए हालांकि फाइनल

में उन्होंने गोल नहीं किया था। उनके आसपास पहुंचने वाले सिर्फ मेस्सी थे लेकिन विश्व कप नहीं जीत पाने से उनकी महानता पर ऊंगलियां गाहे बगाहे उठती रहीं। ऊंगली तब भी उठी जब 2014 में फाइनल में जर्मनी ने अर्जेंटीना को एक गोल से हरा दिया था। सवाल तब भी उठे जब इस विश्व कप के पहले ही मैच में सउदी अरब ने मेस्सी की टीम पर अप्रत्याशित जीत दर्ज की।उस हार ने मानो अर्जेंटीना और मेस्सी के लिये किसी संजीवनी का काम किया। मैच दर मैच दोनों के प्रदर्शन में निखार आता गया और पिछली उपविजेता क्रोएशिया को एकतरफा सेमीफाइनल मुकाबले में हराकर वह फुटबॉल के सबसे बड़े समर के फाइनल में पहुंच गए।

इस जीत के सूत्रधार भी मेस्सी ही रहे जिन्होंने 34वें मिनट में पेनल्टी पर पहला गोल दागा और फिर जूलियर अलकारेज के दोनों गोल में सूत्रधार की भूमिका निभाई।

आर्थिक अस्थिरता से जूझ रहे अपने देशवासियों के लिये मसीहा बन गए मेस्सी और पूरे अर्जेंटीना को जीत के जश्न में सराबोर कर दिया। मेस्सी का विश्व कप का सफर 2006 में शुरू हुआ और अब तक वह सबसे ज्यादा 26 मैच खेल चुके हैं । विश्व कप के इतिहास में अर्जेंटीना के लिये सर्वाधिक 13 गोल कर चुके हैं। वह उम्र को धता बताकर इस विश्व कप में सात गोल कर के तीन मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर के पुरस्कार जीत चुके हैं। रोसारियो में 1987 में एक फुटबॉल प्रेमी परिवार में जन्मे मेस्सी ने पहली बार घर के आंगन में अपने भाइयों के साथ जब फुटबॉल खेला तो किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि एक दिन दुनिया के महानतम खिलाड़ियों में उनका नाम शुमार होगा।बार्सीलोना के लिये लगभग सारे खिताब जीत चुके पेरिस सेंट जर्मेन के इस स्टार स्ट्राइकर ने 2004 में बार्सीलोना के साथ अपने क्लब कैरियर की शुरूआत 17 वर्ष की उम्र में की। उन्होंने 22 वर्ष की उम्र में पहला बलोन डिओर जीता। अगस्त 2021 में बार्सीलोना से विदा लेने से पहले वह क्लब फुटबॉल के लगभग तमाम रिकॉर्ड अपने नाम कर चुके थे।मेस्सी ने विश्व कप में पदार्पण 2006 में जर्मनी में सर्बिया और मोंटेनीग्रो के खिलाफ ग्रुप मैच में किया जिसे देखने के लिये माराडोना भी मैदान में मौजूद थे। 18 वर्ष के मेस्सी 75वें मिनट में सब्स्टीट्यूट के तौर पर मैदान पर उतरे थे। बीजिंग ओलंपिक 2008 में अर्जेंटीना ने फुटबॉल का स्वर्ण पदक जीता तो 2010 विश्व कप में मेस्सी से अपेक्षायें बढ़ गईं। अर्जेंटीना को क्वार्टर फाइनल में जर्मनी ने हराया और पांच मैचों में मेस्सी एक भी गोल नहीं कर सके। चार साल बाद ब्राजील में अकेले दम पर टीम को फाइनल में ले जाने वाले मेस्सी अपने आंसू नहीं रोक सके जब उनकी टीम एक गोल से हार गई।इसके बाद 2018 में रूस में पहले नॉकआउट मैच में अर्जेंटीना को फ्रांस ने 4 . 3 से हरा दिया और तीन में से दो गोल मेस्सी के नाम थे।पिछले चार साल में इस महान खिलाड़ी ने एक ही सपना देखा जविश्व कप जीतने का । क्वार्टर फाइनल में मिली जीत के बाद खुद मेस्सी ने कहा था डिएगो आसमान से हमें देख रहे हैं और विश्व कप जीतने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। उम्मीद है कि आखिरी मैच तक वह ऐसा ही करते रहेंगे। निस्संदेह माराडोना का आशीर्वाद इस मैच में मेस्सी के साथ था।

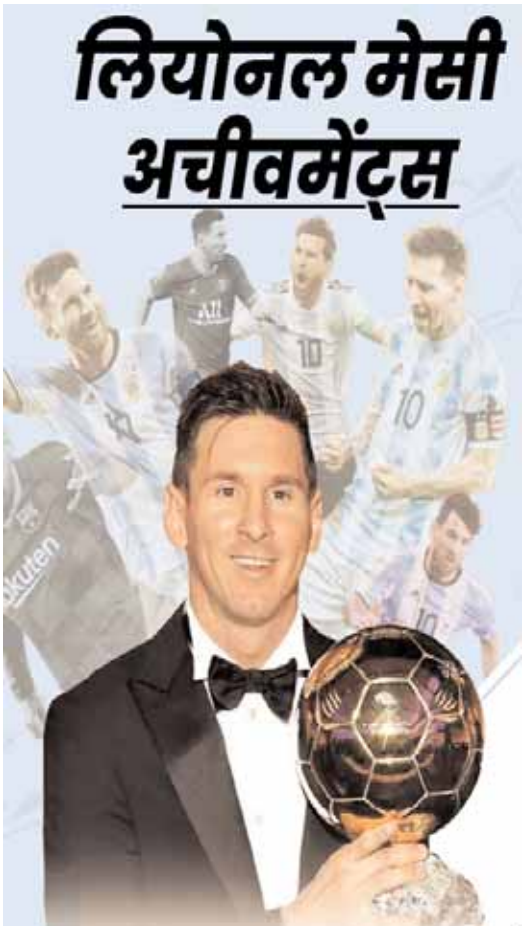

चीन में कोरोना का महाविस्फोट भारत पर होगा असर?

नए साल की शुरुआत से पहले कोरोना के विस्फोट ने एक बार फिर लोगों में डर पैदा कर दिया है। चीन में कोरोना विस्फोट से भयावह स्थिति हो गई है। यहां हालात ऐसे हैं कि एक तरफ जहां अस्पतालों में लोगों के लिए बेड नहीं मिल रहा है। वहीं, पूर्वोत्तर चीन इलाकों के अस्पतालों में लाशों का अंबार लगा है। अस्पतालों में बेड के अभाव में लोग जमीन पर लेटकर इलाज कराने को मजबूर हैं। कई एक्सपर्ट कह रहे हैं कि चीन में हालात साल 2019 से भी बदतर हो चुके हैं। अनुमान है कि चीन में कोरोना से 20 लाख लोगों की मौत हो सकती है। वहीं, 80 करोड़ लोगों के कोरोना संक्रमित होने की आशंका भी जताई गई है। ऐसे में सवाल उठ रहा है चीन में फिर से कोरोना विस्फोट भारत के लिए कितना खतरा है।

एक बार फिर से चीन में कोरोना विस्फोटक रूप से फैल रहा है अन्य विदेशी देशों में भी कोरोना बढ़ रहा है। पूरी दुनिया चीन में कोरोना विस्फोट की आशंका जता रही है कई विशेषज्ञों का दावा है कि चीन में हालात 2019 से भी बदतर हैं। वहीं चीन के अस्पतालों के हालात भी कुछ वैसे ही नजर आ रहे हैं जैसे की कोरोना की दूसरी लहर के दौरान भारत में देखने को मिले थे। मरीजों की संख्या इतनी हो गई है कि उन्हें जमीन पर लिटाना पड़ रहा है। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि आने वाले तीन महीनों में करीब 80 करोड़ लोग संक्रमित हो सकते हैं। हेन्नान प्रांत से आई तस्वीरें चीन के दावों की पोल खोलने के लिए काफी हैं। सोशल मीडिया पर सामने आए वीडियो में साफ नजर आ रहा है कि अस्पतालों के फर्श पर लाशों का ढेर लगा है। इसके अलावा चोंगकिंग के एक अस्पताल के इमरजेंसी रूम के वीडियो में देखा जा सकता है कि मरीज इधर-उधर फर्श पर लेटे हुए हैं। एक तरफ कमरे के सभी बेड मरीजों से पटे पड़े हैं तो वहीं दूसरी तरफ डॉक्टर फर्श पर लेटे मरीजों को सीपीआर दे रहे हैं। चीन से शुरू हुए कोरोना ने बाद में पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया था। अब अगर वहां फिर से

संक्रमण फैल रहा है तो इसकी वजह जानने को लेकर हर कोई उत्सुक है।

कोविड एक्सपर्ट्स का कहना है कि चीन में कोरोना को लेकर जीरो टॉलरेंस पॉलिसी है। यानी एक भी मरीज ना हो इसके लिए लगातार जांच की जा रही है। वहां अभी से मॉस स्क्रिनिंग हो रही है। एक्सपर्स्ट का कहना है कि चीन की पॉलिसी की वजह से वहां पर नैचुरल इन्फेक्शन काफी कम रहा। इस वजह से वहां के लोगों को नैचुरल इम्यूनिटी जितनी मिलनी चाहिए थी, वो नहीं मिल पाई। भारत में ऐसा नहीं है। भारत में अधिकांश लोगों को नैचुरल इम्युनिटी मिली है। खासकर ओमिक्रॉन वेरिएंट के पीक के दौरान पूरे देश में असर देखा गया था।

अभी तक कोरोना के बढ़ते मामले चीन तक ही सीमित है, हालांकि ऐसी आशंकाएँ हैं कि यह अन्य देशों में भी फैल सकती है। अंतर्राष्ट्रीय यात्रा अब लगभग पूर्व-कोविड स्तरों पर वापस आ गई है। एक और बड़ी चिंता, यह देखते हुए कि चीन में बड़ी संख्या में संक्रमण हो रहे हैं, वायरस के और अधिक खतरनाक रूपों में विकसित होने की संभावना है। यह निश्चित रूप से आशंकाओं में से एक है। दिल्ली स्थित इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक इंजीनियरिंग एंड बायोटेक्नोलॉजी के पूर्व प्रमुख डॉ वीरेंद्र चौहान ने कहा कि जैसे-जैसे वायरस अधिक से अधिक होस्ट पाता है, उसके नए रूपों में म्यूटेट की अधिक से अधिक संभावनाएं होती हैं। कोई भी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है कि ये नए म्यूटेशन कितने खतरनाक हो सकते हैं।

चीन में कोरोना के विस्फोट ने गंभीर चेतावनी दी है जो देश में संभावित रूप से लाखों मौतों की ओर इशारा करती है। नेचर में प्रकाशित एक रिपोर्ट में एक अध्ययन

वेंटिलेटर पर चीन

का हवाला दिया गया है जिसमें कहा गया है कि चीन में अगले कुछ महीनों में लगभग 10 लाख लोगों की मौत हो सकती है। रॉयटर्स ने हाल के तीन अन्य अध्ययनों को सूचीबद्ध किया है जिनमें चीन में 1 मिलियन से 2.1 मिलियन मौतों का अनुमान लगाया गया है। जबकि अतीत में इस तरह के अनुमान अपने मार्क से दूर ही रहे हैं। महामारी की शुरुआत में एक अध्ययन में कहा गया था कि अप्रैल 2020 के मध्य तक भारत में 1-3 मिलियन लोगों के मरने की संभावना जताई थी। अभी चीन में स्थिति काफी अलग है अन्य देशों ने क्या सामना किया है। चीन में लगभग 1.4 बिलियन लोग हैं, जिनमें से अधिकांश संक्रमण के प्रति संवेदनशील हैं। वायरस के तेजी से फैलने का मतलब एक ही समय में बहुत बड़ी संख्या में लोग बीमार पड़ सकते हैं। चीनी टीके, सिनोवैक और साइनोफार्म भी बहुत प्रभावी नहीं बताए जा रहे हैं। चीन पहला देश था जिसने जून 2020 में ही अपने लोगों का टीकाकरण शुरू कर दिया था। लेकिन इसका मतलब यह भी था कि उस समय टीका पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ था। टीकों ने किसी भी महत्वपूर्ण तरीके से संक्रमणों को नहीं रोका है, लेकिन वे कहीं और गंभीर बीमारियों और मौतों को रोकने में काफी प्रभावी रहे हैं। लेकिन चीन में अब इस पर संदेह है। चीन में मौजूदा कोविड संकट के परिणाम को तय करने में चीनी टीकों की प्रभावशीलता सबसे महत्वपूर्ण कारक होगी।

भारत के लिए कितना खतरा?

भारत में चीन के मुकाबले स्थिति बेहद अच्छी है। अब तक कोरोना वायरस की तीन लहरें झेलने वाले भारत के लिए डेल्टा वैरिएंट की सबसे ज्यादा खतरनाक साबित हुई थी, जिसके परिणाम स्वरूप दूसरी लहर देखने को मिली थी। हालांकि पिछले कुछ महीनों की स्थिति पर नजर डालें तो ये काफी बेहतर और नियंत्रित स्थिति में है। बीएफ7 समेत चीन में ओमीक्रोन के जो भी वैरिएंट्स फैल रहे हैं, वे भारत के लिए नए नहीं हैं। सार्क कोव-2 पर बने जीनॉमिक कंसोर्टियम उंसाकोग ने ऐसे स्ट्रेन्स के मामलों का पता लगाया है। यहां कई महीनों में बीएफ7 मौजूद हैं, मगर चीन जैसी चिंताजनक स्थिति पैदा नहीं कर सका।

भारत में भी आ गई वॉर्निंग

चीन के लगातार बिगड़ते हालात के बाद अब भारत ने भी पहले से ही कोरोना के लिए कमर कस ली है। चीन

के मौजूदा हालात को देखते हुए भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने हाई लेवल मीटिंग बुलाई। इस बैठक में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया समेत स्वास्थ्य राज्य मंत्री भारती पवार, स्वास्थ्य सचिव, एम्स डॉयरेक्टर, आईसीएमआर के निदेशक और एनसीडी डॉयरेक्टर शामिल हुए। समीक्षा बैठक में कोरोना के बढ़ते खतरे को देखते हुए कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। कोविड 19 पर केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया की बैठक में कई बिन्दुओं पर विचार किया गया। वहीं चीन में जारी कोविड केस के बाद कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने चीन से फ्लाइट बंद करने की मांग की है।

जीनोम सीक्वेंसिंग पर जोर

स्वास्थ्य विभाग ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश जारी करते हुए कहा है कि वो कोविड पॉजिटिव मामले की सैंपल को जीनोम सिक्वेंशिंग लैब में भेजे। ताकी देश में फैलने वाले कोरोना के नए वेरिएंट का समय से पता चल सके। इसके साथ ही इसको फैलने से रोके जाने वाले जरूरी प्रयास किए जा सके। द्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को लिखे एक पत्र में कहा है कि इस तरह की कवायद देश में वायरस के नए स्वरूपों, यदि कोई हो, का समय पर पता लगाने में सक्षम बनाएगी और आवश्यक सार्वजनिक स्वास्थ्य कदम उठाए जाने में मदद करेगी। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि परीक्षण-निगरानी-उपचार-टीकाकरण और कोविड-उपयुक्त व्यवहार के पालन के साथ भारत कोरोना वायरस के प्रसार को सीमित करने में सक्षम रहा है और साप्ताहिक आधार पर संक्रमण के लगभग 1,200 मामले सामने आ रहे हैं।

हाईलेवल मीटिंग में बोले पीएम मोदी–जीनोम सीक्वेंसिंग टेस्टिंग और मास्क पर रहे जोर

अभी खत्म नहीं हुआ है कोरोना

एक बार फिर दुनिया में कोरोना वायरस का कहर लगातार बढ़ रहा है।कोरोना के नए वैरिएंट ओमिक्रोन बीएफ.7 के सामने आने के बाद दहशत का माहौल बन गया है। इसे लेकर केंद्र सरकार सतर्क हो गई है। चीन और अन्य देशों में कोविड-19 के मामले बढ़ने के बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत में कोविड-19 की स्थिति की समीक्षा के

लिए एक उच्च स्तरीय बैठक की।पीएम मोदी ने कहा, कोविड को लेकर पूरी तैयारी रखिए। राज्यों को ऑक्सीजन सिलेंडर, पीएसए प्लांट, वेंटिलेटर और बुनियादी ढांचे की तैयारी सुनिश्चित करने के लिए ऑडिट कराने की सलाह दी। मोदी ने कोविड को लेकर ढिलाई न बरतने की सलाह देते हुए कहा कि कोराना अभी खत्म नहीं हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों और बाकी जगहों पर पर सतर्कता और बढ़ाई जाए। पीएम ने जीनोम सीक्वेंसिंग और टेस्टिंग बढ़ाने पर फोकस के साथ मजबूत निगरानी की जरूरत पर भी जोर दिया। उन्होंने साथ ही सभी लोग को मास्क पहनने को कहा है। पीएम मोदी की बैठक केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया द्वारा इसी उद्देश्य के लिए उच्च स्तरीय बैठक करने के एक दिन बाद हुई है।

मप्र में संक्रमण दर शून्य

कोरोना के नए वैरिएंट बीएफ.7 को लेकर देश-दुनिया में बढ़ती चिंता के बीच प्रदेशवासियों के लिए एक अच्छी खबर है। प्रदेश में फिलहाल कोरोना संक्रमण दर शून्य है। पिछले 24 घंटों के दौरान प्रदेश में कोरोना के एक भी नए मरीज की पहचान नहीं हुई। लेकिन मास्क अवश्य लगाएं और नियमों का पालन करें। इस दौरान जांचे गए सैंपलों में सभी की रिपोर्ट निगेटिव आई है। शुक्रवार को बातचीत के दौरान प्रदेश के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने इस बात की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पिछले 24 घंटों में कोरोना का एक भी नया केस सामने नहीं आया है। संक्रमण दर शून्य रही है। ठीक होकर अपने घरों और गंतव्य की ओर जाने वालों की संख्या भी शून्य है। पिछले 24 घंटों के दौरान कोरोना जांच के लिए 65 सैंपल लिए गए। वर्तमान में प्रदेश में कोरोना के 05 सक्रिय मरीज हैं। रिकवरी रेट 98.70न्न है। इससे पहले गुरुवार को स्वास्थ्य आयुक्त डा. सुदाम खाड़े ने सभी जिलों के कलेक्टर और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारियों को पत्र लिखकर कहा है कि कोरोना के सभी पाजिटिव प्रकरणों की जीनोम सीक्केंसिंग तुरंत कराएं। इसके लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) भोपाल और डीआरडीई ग्वालियर में सैंपल भेजने के लिए कहा गया है। उन्होंने संदिग्ध मरीजों की पहचान, जांच, उपचार, टीकाकरण और कोरोना से निपटने के लिए सावधानी बरतने की रणनीति फिर से शुरु करने को कहा है इसके अलावा भारत सरकार ने सभी राज्यों को एडवाइजरी जारी की है, जिसमें विदेश से आने वाले यात्रियों के लिए कोरोनारोधी टीका लगा होने का प्रमाण पत्र देखने के साथ ही लक्षण मिलने पर तय प्रक्रिया के अनुसार आइसोलेट करने को कहा गया है।

राहुल गांधी बोले

नहीं रूकेगी भारत जोड़ो यात्रा

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 'भारत जोड़ो यात्रा को रोकने से इनकार कर दिया है। राहुल गांधी ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया के लिखे पत्र पर जवाब देते हुए कहा कि सरकार 'भारत जोड़ो यात्रा को

रोकने के बहाने तलाश रही है। राहुल गांधी ने कहा कि मुझे चिट्ठी लिखी गई कि यात्रा बंद करो कोविड आ रहा है, लेकिन यह यात्रा रोकने के लिए बहाना बनाया जा रहा है। राहुल ने कहा कि कि आप जितनी कोशिश कर लो हम टूटने वाले नहीं हैं। राहुल ने कहा कि मुझे कहा जा रहा है कि मास्क पहनों, यात्रा बंद करो कोरोना फैल रहा है, ये सब बहाने हैं, ये लोग भारत की सच्चाई से डर गए हैं। राहुल ने कहा कि कुछ भी कर लो लेकिन हमारी यात्रा कश्मीर तक जाकर रहेगी। कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा हरियाणा पहुंच गई है। हरियाणा में यात्रा का दूसरा दिन है। राहुल गांधी ने कि यात्रा में हम 100 दिन से ज्यादा चले हैं। इसमें हिंदू, मुसलमान, सिख व ईसाई सब चले हैं, किसी ने किसी से नफरत नहीं की और न ही किसी ने यह पूछा कि तुम्हारा धर्म क्या है? जाति क्या है? सबने एक-दूसरे का सम्मान किया और गले लगे राहुल ने कहा हमारे पीसीसी प्रेसिडेंट गिर गए सबने मिलकर उन्हें उठाया, किसी ने यह नहीं पूछा कि तुम किस जाति धर्म के हो। कांग्रेस नेता ने कहा कि लोगों के आरएसएस और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नफरत का हिंदुस्तान नहीं चाहिए।

INDIAS FIRST AQUA DUCT ULTRA MODERN REWA-SIDHI 6 LANE TUNNEL WAS OBSERVED

Union Road Transport Minister Shri Nitin Gadkari did Bhoomi Poojan and dedication of road projects worth 2444 crores in Barsaita Rewa

Union Road Transport and Highways Minister Shri Nitin Gadkari has said that all-round development of Madhya Pradesh is taking place under the leadership of Chief Minister Shri Chouhan. The changing picture of Madhya Pradesh will fulfill Prime Minister Shri Narendra Modi's dream of self-reliant India. In the coming times, Madhya Pradesh will be leading among the developed states of the country. India will become a super economic power under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi and Madhya Pradesh will contribute significantly in that.

Union Road Transport and Highways Minister Shri Nitin Gadkari inaugurated and laid foundation stones of 7 road projects with a total length of 204.81 kilometers costing Rs 2443.89 crore at Barsaita Rewa today. He inaugurated 4 lane Churhat bypass and 6 lane tunnel, four lane road from Satna to Bela (with paved shoulder), concrete-cement road in Rewa city under CRIF, two lane road to Gajan, Magarwar, Itour, Khamhariya Goraiya and Sajjanpur. Inaugurated the two-lane road on Chhibora-Gajan section. Along with this, laid the foundation stone of the construction works of Beohari to Adarsh Village New Sapta Marg and Devtalab-Naigarhi road under CRIF. Chief Minister Shri Shivraj Singh Chouhan presided over the programme.

Union Minister Shri Gadkari visited

the very modern Rewa-Sidhi 6 lane tunnel and appreciated the work done. Shri Gadkari said that Rewa-Sidhi Tunnel is the first "Aqua Duct" of India. The Bansagar canal and road have been built over it. This is an important tunnel in the history of the country. This will give a new direction to the development of the region. This tunnel has connectivity to the second tunnel after 300 meters, has 46 exhaust fans, optical fiber lane, as well as LXBC system and fire fighting system. He thanked and congratulated the concerned engineers for this work.

Union Minister Shri Gadkari congratulated Shri Rahul Dubey, Shri Sanjay Kumar Singh, Shri Ajit Swain, Shri Rakesh Patel, Shri Kapil Sharma, Shri Avadh Singh, Shri Ramvilas Singh Patel, Shri Sumesh Banjal and team leader Shri Vivek Jaiswal for excellent construction work. Excellence awards were also presented. He also released a booklet based on the development of Rewa.

Union Minister Shri Gadkari said that 5 green field expressways/highways of high quality are being constructed in Madhya Pradesh. He told the Chief Minister Shri Chouhan that a logistics park and industrial area should be developed near these highways. A 245-km portion of the Mumbai-Delhi Expressway will be built in Madhya Pradesh. Atal Progress-Way, Indore-Hyderabad 6-lane, Ujjain-Garoth 4-lane and Agra-Gwalior Green Field Highway are being made. He announced completion of all missing links of Narmada Parikrama Path on the demand of Chief Minister Shri Chouhan. Also said that all road transport related proposals of the state will be approved.

एक राष्ट्र-एक राशन कार्ड से गरीबों को मिली राहत : तोमर

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना में केंद्र ने 3.90 लाख करोड़ रु. खर्च करके दिया मुफ्त खाद्यान्न

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा है कि देशभर में एक राष्ट्र-एक राशन कार्ड की महत्वाकांक्षी योजना से गरीब वर्ग को काफी राहत मिली है। श्री तोमर ने बताया कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के माध्यम से केंद्र सरकार ने 3.90 लाख करोड़ रु. खर्च करके गरीबों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराया है, वहीं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में किसानों के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता जताते हुए सरकार ने 2021-22 में एमएसपी पर 2.75 लाख करोड़ रु. की रिकार्ड खरीदी की है। केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने उपभोक्ता कार्य, खाद्य, सार्वजनिक वितरण मंत्रालय व कृषि से संबंधित उपलब्धियों का जिक्र करते हुए बताया कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना कोविड-19 महामारी के कारण हुए आर्थिक व्यवधान के चलते गरीबों को होने वाली कठिनाइयां दूर करने और खाद्य सुरक्षा पर महामारी के प्रभाव कम करने के लिए चलाई गई, जिसके सकारात्मक परिणाम परिलक्षित हुए। मार्च-2020 में प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में सरकार ने करीब 80 करोड़ लोगों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए), अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई) एवं प्राथमिकता वाले परिवारों (पीएचएच) लाभार्थियों को पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत 5 किलो प्रति व्यक्ति-प्रति माह आधार पर अतिरिक्त मुफ्त खाद्यान्न (चावल/गेहूं) के वितरण की घोषणा की थी, जिसके तहत अभी तक राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को 1118 एलएमटी खाद्यान्न आवंटित किया गया है, जिस पर 3.90 लाख करोड़ रु. से ज्यादा खर्च हुए हैं। राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में पीएमजीकेएवाई का 7वां चरण (अक्टूबर-दिसंबर, 2022) चालू है।श्री तोमर ने बताया कि एक राष्ट्र-एक राशन कार्ड सहित विभिन्न योजनाओं के तहत पोषणयुक्त चावल का वितरण, लक्षित सार्वजनिक वितरण सहित केंद्र की अन्य योजनाओं का लाभ सभी लाभार्थियों तक पहुंचाया जा रहा है। एक राष्ट्र-एक राशन कार्ड योजना की प्रगति बताते हुए उन्होंने कहा कि अगस्त-2019 में 4 राज्यों के बीच पोर्टेबिलिटी के साथ शुरूआत करते हुए अब तक सभी 36 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में इस योजना को शुरू किया जा चुका है, जिसमें लगभग 80 करोड़ एनएफएसए लाभार्थी यानी देश की लगभग सौ प्रतिशत एनएफएसए आबादी शामिल है। अगस्त-2019 में ओएनओआरसी योजना की शुरूआत के बाद से, इस योजना के तहत 93 करोड़ से ज्यादा पोर्टेबिलिटी लेन-देन दर्ज किए गए हैं, जिसमें 177 एलएमटी से अधिक खाद्यान्न वितरित किया गया है। वर्ष 2022 के दौरान 11 महीनों में 39 करोड़ पोर्टेबिलिटी लेनदेन किए गए, जिनमें एनएफएसए और पीएमजीकेएवाई के इंटर-स्टेट व इंट्रा-स्टेट पोर्टेबिलिटी लेनदेन सहित 80 एलएमटी से अधिक खाद्यान्न वितरित किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संसद के साथी सदस्यों के साथ मिलेट्स वर्ष 2023 को चिह्नित करने के लिए कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर द्वारा आयोजित लंच का आनंद लिया। प्रधानमंत्री करीब 40 मिनट तक कार्यक्रम में मौजूद रहे। इस दौरान पीएम मोदी के साथ कृषि मंत्री तोमर, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़, पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा और कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे भी बैठे हुए नजर आए। लंच के बाद पीएम मोदी ने ट्वीट कर कहा, जैसा कि हम 2023 को मिलेट्स के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के रूप में चिह्नित करने की तैयारी कर रहे हैं, संसद में एक शानदार लंच में शामिल हुआ, जहां मिलेट्स (मोटा अनाज, जैसे- बाजरा, जौ आदि) के व्यंजन परोसे गए।

सीएम ने महाकाल लोक से किया 5-जी लांच

मध्यप्रदेश में उज्जैन के महाकाल लोक से 5जी सेवा की शुरुआत हो गई। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने त्रिवेणी संग्रहालय में आयोजित कार्यक्रम में जियो की इस सेवा का आगाज किया। फिलहाल ये सुविधा सिर्फ महाकाल लोक (महाकाल मंदिर परिसर) में ही मिलेगी। सीएम ने कहा कि जनवरी से यह सेवा इंदौर में भी मिलने लगेगी।इसके साथ ही महाकाल लोक प्रदेश का पहला ट्रू 5जी और जियो ट्रू5जी पावर्ड वाई-फाई कॉरिडोर बन गया। इस मौके से सीएम ने कहा कि मध्यप्रदेश में आज क्रांति का दिन है। यहां वाईफाई के जरिए 1जीबी तक 5जी नेटवर्क का फ्री लाभ मिल सकेगा। कार्यक्रम के दौरान कंपनी ने जियो कम्युनिटी क्लिनिक और एआर-वीआर डिवाइस जियो ग्लास का डेमो भी दिया। सीएम ने भी इस डिवाइस को आंखों पर लगाकर यूज किया। जियो कंपनी ने महाकाल मंदिर, प्रशासनिक कार्यालय, महाकाल लोक और सरफेस पार्किंग तक जियो के टावर इंस्टॉल किए हैं। इससे यहां आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को 5जी सर्विस का सीधा फायदा मिलेगा। कंपनी का दावा है कि अगले 30 दिन के अंदर इंदौर में भी 5जी सुविधा की शुरुआत हो जाएगी। कार्यक्रम में उच्च शिक्षा मंत्री मोहन यादव और जियो कंपनी के अफसर मौजूद रहे। मध्यप्रदेश में सबसे पहले 5जी नेटवर्क की शुरुआत उज्जैन के महाकाल मंदिर से हुई है। यहां आने वाले जिन लोगों के पास 5जी मोबाइल की सुविधा होगी, उनको 1000 एमबीपीएस तक की स्पीड मिलने लगेगी। महाकाल मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं को वाई फाई के द्वारा सभी मोबाइल हैंडसेट पर यह सुविधा मिलेगी। महाकाल मंदिर में 5जी सेवा शुरू होने से नेटवर्क में होने वाली परेशानियों से श्रद्धालुओं को निजात मिलेगी। दरअसल, त्योहार के दिनों में और बीते 2 महीनों से लगातार लाखों की तादाद में श्रद्धालु महाकाल मंदिर पहुंच रहे हैं। ऐसे में एक ही मोबाइल टावर पर लोड बढ़ने से नेटवर्क की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। उज्जैन कलेक्टर आशीष सिंह ने बताया कि 5जी के बाद पूरे महाकाल परिसर में नेटवर्क की दिक्कत खत्म हो जाएगी। साथी महाकाल मंदिर के इंटरनेट से चलने वाले इंस्ट्रूमेंट भी बिना रुके काम कर सकेंगे। 5त सर्विस से इंटरनेट एक्सेस करने की सुविधा तो मिलेगी ही, साथ ही वाईफाई से कॉलिंग भी की जा सकेगी। अभी यह सुविधा महाकाल लोक में ही शुरू की गई है। उज्जैन शहर में इस सुविधा के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि सरकार हर सेवा को डिजिटल स्वरूप देगी। अब हर कार्य में पेट पूजा (रिश्वत लेना) होना बंद हो जाएगी। ऑनलाइन कर देंगे, तो कोई भ्रष्टाचारी हिम्मत नहीं जुटा पाएगा। गुड गवर्नेंस के लिए और जियो की 5जी सेवाएं उपयोगी साबित होगी।

INAUGURATION OF INTERNATIONAL AIRPORT AT MOPA IN PM MODI

Present on stage, the Governor of Goa Shri P.S. Sreedharan Pillai ji, popular Chief Minister of Goa Shri Pramod Sawant ji, Union Ministers Shri Shripad Naik ji, Shri Jyotiraditya Scindia ji, all other dignitaries and ladies and gentlemen! Heartiest congratulations to the people of Goa and the people of the country for this marvellous new airport. In the last 8 years, whenever I got a chance to be amidst you all, I used to repeat just one thing, that is, I will repay the love and blessings you have showered on us with interest; with development. This modern airport terminal is an attempt to pay back for the same affection. I am also delighted because this International Airport has been named after my dear colleague and the son of Goa, Late Manohar Parrikar ji. Now, through the name of Manohar International Airport, the name of Parrikar ji will be forever etched in the memory of every person who visits here. As per the decades-long approach regarding infrastructure in our country, the previous governments used to prioritize only the vote-bank rather than the needs of the people. Consequently, thousands of crores of rupees were often spent on low-priority projects. Therefore, often the need for infrastructure for the people was neglected. This International Airport of Goa is an example of the same. It was a long-standing demand not only of the people of Goa but of the people across the country. One airport was not enough. Goa needed another airport. This airport was planned when Atal Bihari Vajpayee's government was at the centre. But after Atal ji's government, not much was done for this

airport. This project was in a limbo for a long time. In 2014, Goa installed a double engine of development. We once again completed all the procedures quickly. And 6 years ago, I came here and laid the foundation stone. There were many hurdles ranging from court-cases to the pandemic from time to time. But in spite of all that, today it is ready in the form of a magnificent airport. At present, it has the facility to handle about 40 lakh passengers in a year. In the future, this capacity can reach up to 3.5 crore. Tourism will definitely get a tremendous boost with this airport. Having 2 airports has increased the possibilities for Goa to turn into a cargo hub as well. This will also boost the export of fruits and vegetables as well as pharma products. Manohar International Airport today is also a proof of the changed mindset and approach of the government regarding the country's infrastructure. Before 2014, because of the attitude of the governments, air travel had become a luxury. Mostly the rich people could take advantage of it. The previous governments did not even consider that the ordinary citizens and the middle class would also want to travel by air. That's why the governments of that time avoided investing in such fast means of transport. Not much was spent for the development of airports. As a result, despite having such a huge potential related to air-travel in the country, we were left behind.

गुजरात में खिला 'कमल' हिमाचल में चला 'पंजा'

प्रधानमंत्री की राजनीतिक पाठशाला गुजरात में भाजपा की रिकॉर्ड जीत चौंकाने वाली रही। यह आश्चर्य की बात है कि लगातार सात बार चुनाव जीतने के बाद जनता में सत्ता विरोधी रुझान बेअसर रहे। माना जा रहा था कि मोरबी हादसे, महंगाई और बेरोजगारी जैसे देशव्यापी मुद्दे अपना असर दिखाएंगे, लेकिन उलटे रिकॉर्ड मतों से जनता ने भाजपा को राज सौंपा है। कहीं न कहीं गुजरात की जनता ने नरेंद्र मोदी से अपनी अस्मिता को जोड़ लिया है। यही वजह है कि आप की आक्रामक चुनावी रणनीति व कांग्रेस के परंपरागत आधार के बावजूद भाजपा को पुनः ताज मिला। इस चुनाव का एक नतीजा यह जरूर है कि वोट प्रतिशत के आधार पर आम आदमी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा मिल गया। हां, हिमाचल की कसक जरूर भाजपा को साल रही होगी कि प्रधानमंत्री के तूफानी दौरों व तमाम प्रचार के बावजूद हिमाचल की जनता ने 'सरकार नहीं रिवाज बदलेंगे' को खारिज कर दिया। यहां हिमाचल चुनावों को लेकर चुनाव सर्वेक्षणों की विश्वसनीयता जरूर दांव पर लगी, क्योंकि तमाम चुनाव पूर्व व एक्जिट पोल हिमाचल के चुनाव परिणामों के अनुरूप नहीं रहे। कमोबेश यही स्थिति दिल्ली के एमसीडी चुनाव परिणामों को लेकर भी सामने आई। आप की इस अप्रत्याशित जीत का ठीक आकलन नहीं किया गया था। हां, गुजरात चुनावों के बारे में जरूर कहा जा रहा है कि आप की मुहिम से कांग्रेस का वोट प्रतिशत गिरा, जिसके चलते भाजपा को अप्रत्याशित कामयाबी मिली। हालांकि, इस चुनाव में भाजपा का चुनाव प्रतिशत भी बढ़ा मगर सीटों की संख्या उस अनुपात में ज्यादा रही। बहरहाल, एक बात तय है कि गुजरात के मध्यवर्ग व शहरी क्षेत्रों में मोदी का जादू कायम है। उल्लेखनीय है कि ऐसी रिकॉर्ड कामयाबी पहले 1985 में कांग्रेस ने माधव सिंह सोलंकी के नेतृत्व में 149 सीटें हासिल करके हासिल की थी, इस रिकॉर्ड को इस बार भाजपा ने तोड़ दिया। वहीं गुजरात में हिंदुत्व फेक्टर का मुकाबला करने का कांग्रेस के पास विकल्प नहीं था। वहीं कांग्रेस सुनियोजित ढंग से लड़ाई के लिये संगठन को तैयार नहीं कर पायी। उसके पास जमीन से जुड़ा कोई बड़ा नेता भी नजर नहीं आया। वहीं हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस ने चालीस सीटें जीतते हुए शानदार वापसी की, जबकि सत्तारूढ़ भाजपा 25 सीटों पर सिमट गई। इसके बावजूद कि प्रधानमंत्री, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और हिमाचल के ही भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने लगातार रैलियां व रोड शो किये। मगर हिमाचल के मतदाताओं ने भाजपा के नारे 'सरकार नहीं रिवाज बदलेंगे' पर कान नहीं धरा। लगता है कि ढाई लाख कर्मचारियों वाले राज्य में मतदाताओं ने पुरानी पेंशन स्कीम लागू करने के कांग्रेस के वायदे पर मोहर लगाई है। इससे करीब डेढ़ लाख कर्मचारियों को फायदा हो सकता है। सवाल यह भी है कि कांग्रेस इस वायदे को कैसे पूरा करेगी जबकि पिछले पांच साल में सरकारी खर्च सत्रह हजार करोड़ से बढ़कर बाईस हजार करोड़ रुपये हो गया है। पुरानी पेंशन के लिये फंड जुटाने से विकास योजनाओं पर प्रभाव पड़ेगा। लेकिन इस मुद्दे ने कांग्रेस प्रत्याशियों को मदद जरूर पहुंचायी है। वहीं दूसरी फौजी संस्कृति वाले पहाड़ी राज्य में अग्निवीर योजना का गुस्सा भी मतदाताओं पर हावी रहा। हर साल फौज में भर्ती होने वाले हजारों युवाओं पर इसका बुरा असर पड़ा।

गुजरात में बंपर जीत

मोदी के वर्षों के अथक परिश्रम का ही परिणाम है

गुजरात विधानसभा चुनावों में भाजपा ने प्रचंड जीत हासिल कर 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए अपना दावा तो मजबूत किया ही है साथ ही यह भी साबित किया है कि किसी भी अन्य पार्टी के पास ब्रांड मोदी का कोई विकल्प नहीं है। इन चुनावों ने यह भी दर्शाया कि प्रधानमंत्री मोदी जैसी मेहनत और अमित शाह जैसी रणनीति कामयाब भी होती है और नये नये रिकॉर्ड भी बनाती है। गुजरात में प्रचंड जीत के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने बिल्कुल सही कहा कि गुजरात की जनता ने रिकॉर्डों को तोड़ने का भी रिकॉर्ड बना दिया है।

गुजरात में भाजपा की प्रचंड विजय गुजरात की जनता की भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी के प्रति अटूट विश्वास की जीत है। यह उनके प्रति जनता के असीम स्नेह की विजय है। गुजरात विधानसभ चुनाव में भाजपा की विजय ने यह सिद्ध कर दिया है कि जनता को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का गुजरात मॉडल पसंद आ रहा है। इसलिए नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा का विजय रथ निरंतर आगे बढ़ रहा है। गुजरात विधानसभा के चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात की जनता से कहा था कि इस बार उनका रिकॉर्ड टूटना चाहिए। गुजरात की जनता ने उनकी बात का पूर्ण रूप से मान रखते हुए भाजपा को गुजरात के इतिहास का सबसे प्रचंड जनादेश देकर नया इतिहास रच दिया। गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 182 में से 156 सीटों पर विजय प्राप्त की है। पिछले विधानसभा चुनाव में गुजरात में भाजपा ने 99 सीटें प्राप्त की थीं, जबकि कांग्रेस ने 77 सीटें जीती थीं। राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' के पश्चात भी कांग्रेस गुजरात में कुछ विशेष नहीं कर पाई, अपितु हानि में ही रही। कांग्रेस अब 77 से केवल 17 सीटों पर सीमित होकर रह गई है।

वर्ष 1995 से भाजपा ने गुजरात में किसी भी चुनाव में पराजय का मुंह नहीं देखा है। यह सब नरेंद्र मोदी के विराट व्यक्तित्व का ही चमत्कार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गुजरात से विशेष लगाव है। इसलिए उन्होंने 6 नवंबर से 2 दिसंबर तक गुजरात में 52 विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव प्रचार करके पार्टी प्रत्याशियों के लिए समर्थन मांगा था। इस दौरान उन्होंने 34 रैलियां तथा चार रोड शो किए थे। इन 52 सीटों में से भाजपा को 46 पर विजय प्राप्त हुई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के साथ भूपेन्द्र पटेल, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सीआर पाटिल तथा विजय रूपाणी सहित अन्य पार्टी नेताओं ने भी भाजपा को

विजयी बनाने के लिए दिन-रात कड़ा परिश्रम किया।

गुजरात नरेंद्र मोदी का गृह राज्य है। उन्होंने गुजरात से ही अपना राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया था। उन्होंने पार्टी संगठन को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया। परिणामस्वरूप गुजरात के गठन के पश्चात से प्रथम बार भाजपा को अहमदाबाद नगरपालिका में बड़ी विजय प्राप्त हुई। गुजरात में निरंतर तीन वर्ष अकाल पड़ा। तत्कालीन सरकार पूर्ण रूप से असफल सिद्ध हुई। वर्ष 1987 में नरेंद्र मोदी ने न्याय यात्रा निकाली, जो गुजरात की 115 तहसीलों के लगभग 15 हजार ग्रामों में गई। इस यात्रा से पार्टी का जनाधार बढ़ा। इसके साथ ही नरेंद्र मोदी की ख्याति भी दिन प्रतिदन बढ़ने लगी। इस यात्रा की सफलता के पश्चात 1989 में उन्होंने लोक जनशक्ति यात्रा निकाली। इस यात्रा ने भी भाजपा का जनाधार बढ़ाने के साथ-साथ नरेंद्र मोदी को राजनीतिक रूप से मजबूत करने का कार्य किया।

प्रधानमंत्री बनने के पश्चात उन्होंने 'गुजरात मॉडल' को पूरे देश में लागू करने का प्रयास किया, जिसे सराहा जा रहा है। विशेष बात यह भी है कि नरेंद्र मोदी को ईश्वर ने ऐसा विशेष गुण दिया है कि वह नकारात्मकता में भी सकारात्मक गुण खोज लेते हैं। मोरबी घटना के पश्चात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वहां का दौरा किया तथा पीड़ित परिजनों से भेंट कर उन्हें सांत्वना दी थी। इसके अतिरिक्त उन्होंने तुरंत कार्रवाई करने के लिए निर्देश दिए थे। विरोधी पार्टियों ने उनके विरुद्ध दुष्प्रचार किया तथा उन्हें अपशब्द कहे। इसके पश्चात भी उन्होंने संयम एवं धैर्य बनाए रखा, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि जनता ही उनके विरोधियों का इसका उत्तर देगी। वास्तव में जनता ने भाजपा को प्रचंड बहुमत देकर विरोधियों को उत्तर दे दिया।

वास्तव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी किसी भी चुनाव को छोटा नहीं मानते। वह निकाय चुनाव, विधानसभा चुनाव से लेकर लोकसभा चुनाव तक में पूर्ण योजनाबद्ध तरीके से कार्य करते हैं। उनके साथ राजनीति के चाणक्य अमित शाह भी हैं, जो पराजय को विजय में परिवर्तित करना जानते हैं। ये दोनों ही नेता बूथ स्तर पर पार्टी संगठन को सुदृढ़ बनाने पर कार्य करते हैं, जो इनकी विजय का मार्ग प्रशस्त करता है। अब भाजपा को लोकसभा चुनाव के लिए भी इसी प्रकार पूर्ण निष्ठा एवं लगन से कार्य करना होगा।

पटेल की नई पारी शुरू

भूपेंद्र पटेल ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपनी दूसरी पारी सोमवार को शुरू की। हालांकि इनकी पहली पारी करीब एक साल की ही रही थी। उन्हें पिछले साल सितंबर में विजय रूपानी की जगह सीएम बनाया गया था। विधायक के रूप में वह उनका पहला ही कार्यकाल था। इसके बावजूद उनकी ओर से विश्वासपूर्वक यह बात कही जा सकती है कि मुख्यमंत्री पद सौंपते हुए पार्टी नेतृत्व को उनसे जो भी अपेक्षाएं थीं, वे जबर्दस्त ढंग से पूरी हुईं। पार्टी ने ऐसी जीत दर्ज की, जो नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मिली 2002 की जीत से ही नहीं, 1985 में कांग्रेस की प्रदेश के इतिहास की सबसे बड़ी जीत से भी बड़ी साबित हुई। हालांकि यह सवाल जरूर पूछा जाएगा कि इसमें मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की कितनी भूमिका मानी जाए? चूंकि बीजेपी ने अन्य तमाम चुनावों की ही तरह यह चुनाव भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे, उनके नाम और उनके द्वारा किए गए काम को सामने रखकर लड़ा था। चुनाव प्रबंधन भी प्रदेश नेतृत्व पर छोड़ दिया गया हो ऐसा नहीं था। बीजेपी में उसकी एक स्वतंत्र मशीनरी विकसित हो चुकी है, जो सफलतापूर्वक यह काम करती है और प्रदेश नेतृत्व का इसमें कोई सीधा दखल नहीं होता। लेकिन बावजूद इन सबके, यदि मुख्यमंत्री की इन सबमें कोई भूमिका नहीं होती तो चुनाव से ऐन पहले नया मुख्यमंत्री लाने की जरूरत ही क्यों पड़ती। दूसरी बात यह कि खुद भूपेंद्र पटेल भी इस बार 1.92 लाख वोटों के विशाल अंतर से जीत कर आए हैं। जाहिर है, न तो इस जीत की अहमियत कम की जा सकती है और न ही इसमें भूपेंद्र पटेल की भूमिका को कम करके आंका जा सकता है। आश्चर्य नहीं कि पार्टी नेतृत्व ने भी उनके शपथ ग्रहण समारोह को इस जीत के अनुरूप ही भव्य बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, रक्षा मंत्री समेत अनेक केंद्रीय मंत्री, विभिन्न बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और प्रमुख नेता इस मौके पर मौजूद रहे। इन सबसे इस नई पारी को लेकर मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। लोकसभा चुनाव को दो साल भी नहीं रह गए हैं। गुजरात मॉडल बीजेपी के लिए पूरे देश में वोट मांगने का एक प्रमुख आधार रहा है। यह मॉडल विकास के साथ हिंदुत्व का है, जिसे बीजेपी ने दूसरे कई राज्यों में कामयाबी के साथ भुनाया है। भूपेंद्र पटेल पर यह जिम्मेदारी होगी कि वह गुजरात की ग्रोथ ओरिएंटेड छवि को बनाए रखें। उनसे यह भी अपेक्षा है कि वह मोरबी पुल हादसे की जांच को तार्किक परिणति तक ले जाएं, जिससे इसके दोषियों को सजा मिल सके। बीजेपी का शीर्ष नेतृत्व यह भी आशा करेगा कि विधानसभा चुनाव में जबर्दस्त जीत के बाद अगले आम चुनाव में वह अधिक से अधिक सीटों पर जीत सुनिश्चित करें।

छात्राओं को महिला हिंसा उन्मूलन एवं साइबर अपराधों से बचाव के लिए किया जागरूक

● गूंज न्यूज नेटवर्क

अति0 पुलिस अधीक्षक शहर(पूर्व/अपराध)राजेश डण्डोतिया द्वारा शा.पद्माराजे कन्या उ0म0 विद्यालय ग्वालियर में अध्ययनरत छात्राओं को महिला सुरक्षा एवं

साइबर अपराधों से बचाव के संबंध में जानकारी दी गई। इस अवसर पर कार्यक्रम में लगभग 1100 छात्राएं व स्कूल के शिक्षक गण उपस्थित रहे। जागरूकता अभियान के अन्तर्गत शा.पद्माराजे कन्या उ0म0 विद्यालय ग्वालियर में अध्ययनरत छात्राओं को अति0 पुलिस अधीक्षक शहर (पूर्व/अपराध) ने समाज में महिलाओं के विरूद्ध हो रही विभिन्न प्रकार की हिंसा व भेदभाव के संबंध में अवगत कराते हुए इसके उन्मूलन हेतु चलाये जा रहे जागरूकता अभियान की जानकारी दी गई। इस अवसर पर उनके द्वारा उपस्थित छात्राओं को मध्यप्रदेश पुलिस की डायल 100/112 सेवा तथा 1090 महिला हेल्पलाइन से भी अवगत कराया गया, कि किस प्रकार आवश्यकता होने पर इसका उपयोग किया जा सकता है। इस अवसर पर उन्होने मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा तैयार कराये गये । कार्यक्रम में अति0 पुलिस अधीक्षक शहर (पूर्व/अपराध) ने कहा कि किसी भी प्रकार की घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर मानसिक एवं शारीरिक प्रताड़ना, कामकाजी महिलाओं पर टिप्पणी करना, छात्राओं पर बातचीत करने के लिए दबाब डालना, छेड़ाछाड़ जैसी किसी भी घटना के होने पर तत्काल पुलिस, परिजनों व शिक्षकों को सूचित करना चाहिए। इस अवसर पर उन्होने छात्राओं को गुड़ टच और बेड टच के बारे में भी बताया। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान अति0 पुलिस अधीक्षक शहर (पूर्व/अपराध) द्वारा वर्तमान समय में होने वाले साइबर अपराधों से अपने आप को सुरक्षित रखने के संबंध में भी जानकारी दी गई और ऑनलाइन फ्रॉड से कैसे बचा जाए इसके संबंध में भी छात्राओं को विस्तृत जानकारी दी गई। इसके साथ ही उन्होंने वर्तमान समय में पुलिस के समक्ष आने वाली सायबर क्राईम संबंधी शिकायतों को भी साझा किया। उनके द्वारा उपस्थित छात्राओं को ऑनलाईन फ्रॉड से बचाव के तरीकों से भी अवगत कराया गया और बताया गया कि मोबाइल पर आने वाले किसी भी अंजान वीडियो कॉल या मैसेज लिंक को खोलकर न देखे। एमएलबी कालोनी स्थित भौतिकी कोचिंग शिवपुरी लिंक रोड स्थित दून पब्लिक स्कूल में

अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा एवं साइबर अपराधों से बचाव के संबंध में जानकारी दी गई। इस अवसर पर कार्यक्रम में लगभग 600 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। गुड़ी गुड़ा का नाका स्थित रेडिएंट स्कूल में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा एवं सायबर अपराधों से बचाव व कैरियर मोटिवेशन के संबंध में जानकारी दी गई। निर्माण कोचिंग में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा एवं साइबर अपराधों से बचाव के संबंध में जानकारी दी गई। इस अवसर पर कार्यक्रम में लगभग 500 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

ग्वालियर पुलिस का स्कूल-कॉलेजों में जागरूकता अभियान

छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा के प्रति किया जागरूक

● गूंज न्यूज नेटवर्क

पुलिस मुख्यालय भोपाल के निर्देश पर महिला हिंसा उन्मूलन हेतु जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी,भापुसे के निर्देश पर ग्वालियर पुलिस द्वारा भी जिले के सार्वजनिक स्थानों, स्कूल कॉलेज तथा शैक्षणिक संस्थानों पर जाकर आमजन एवं छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा के लिये जागरूक किया जा रहा है। इसी अभियान के तहत अति0 पुलिस अधीक्षक शहर(पूर्व/अपराध) श्री राजेश डण्डोतिया द्वारा आज दिनांक 22.12.2022 को गजराराजे मेडीकल कॉलेज ग्वालियर के छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा एवं साइबर अपराधों से बचाव के संबंध में जानकारी दी। इस अवसर पर कार्यक्रम में मेडीकल कॉलेज के लगभग 500 छात्र-छात्राएं व कॉलेज स्टाफ उपस्थित रहा।अति0 पुलिस अधीक्षक शहर (पूर्व/अपराध) ने आज गजराराजे मेडीकल कॉलेज ग्वालियर के छात्र-छात्राओं को समाज में महिलाओं के विरूद्ध हो रही विभिन्न प्रकार की हिंसा व भेदभाव के संबंध में अवगत कराते हुए इसके उन्मूलन हेतु म0प्र0 पुलिस द्वारा चलाये जा रहे जागरूकता अभियान की जानकारी दी गई। इस अवसर पर उनके द्वारा उपस्थित छात्र-छात्राओं को मध्य प्रदेश पुलिस की डायल 100/112 सेवा तथा 1090 महिला हेल्पलाइन से भी अवगत कराया गया तथा बताया गया कि किस प्रकार आवश्यकता होने पर इनका उपयोग किया जा सकता है। इस अवसर पर उन्होने मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा तैयार कराये गये आपात एप के संबंध में भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में अति0 पुलिस अधीक्षक शहर (पूर्व/अपराध) ने कहा कि छात्राओं पर किसी भी प्रकार की टिप्पणी करना, बातचीत करने के लिए दबाब डालना या छेड़ाछाड़ होने पर तत्काल पुलिस व परिजनों को सूचित करना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान अति0 पुलिस अधीक्षक शहर (पूर्व/अपराध) द्वारा वर्तमान समय में होने वाले साइबर अपराधों से सुरक्षित रहने के संबंध में भी जानकारी दी गई और ऑनलाइन फ्रॉड से कैसे बचा जाए इसके संबंध में भी छात्र-छात्राओं को विस्तृत जानकारी दी गई। इसके साथ ही उन्होंने वर्तमान समय में पुलिस के समक्ष आने वाली सायबर क्राईम संबंधी शिकायतों को भी साझा किया। उनके द्वारा उपस्थित मेडीकल कॉलेज के स्टूडेंट को ऑनलाइन फ्रॉड से बचाव के तरीकों से भी अवगत कराया गया और बताया गया कि मोबाइल पर आने वाले किसी भी अंजान वीडियो कॉल या मैसेज लिंक को खोलकर न देखे। उन्होने कहा कि किसी भी लाटरी निकलने या फ्री गिफ्ट के चक्कर में नही पड़ना चाहिए जैसे- कौन बनेगा करोड़पति या बिजली का बिल जमा न होने संबंधी आने वाली किसी भी लिंक पर क्लिक न करें और न ही अपनी व्यक्तिगत जानकारी किसी को उपलब्ध करायें।

"गजराराजे मेडीकल कॉलेज" के छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा एवं साइबर अपराधों से बचाव के लिए किया जागरूक

सुर सम्राट तानसेन की सभा में दो तहज़ीबों के सुरों का संगम

● टीम गूंज न्यूज़ नेटवर्क

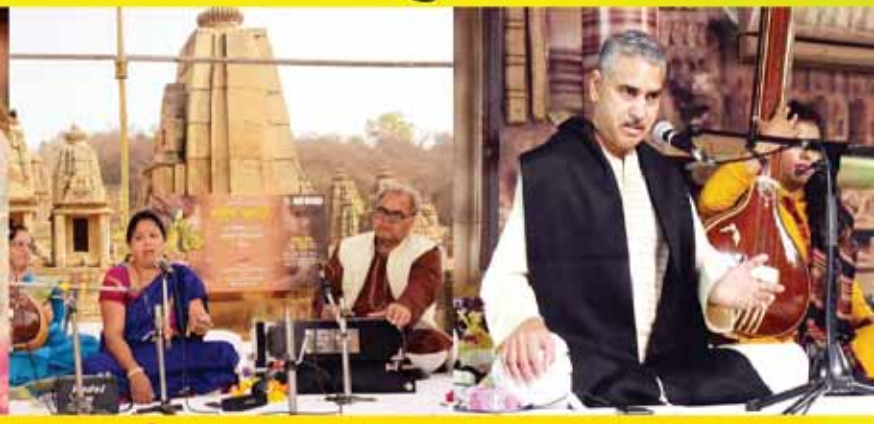

गान महर्षि तानसेन की याद में आयोजित हो रहे सालाना संगीत महोत्सव विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह में गुरुवार की प्रातःकालीन सभा में संगीत रसिक हिंदुस्तानी, अफगानी व अमेरिकन तहज़ीबों के मिलन के साक्षी बने। शुद्ध शास्त्रीय प्रस्तुतियों के साथ सात समंदर पार संयुक्त राज्य अमेरिका से आए कलाकार मिस्टर विलियम रीस हॉफमैन ने जब पश्चिमी व अफगानी सुरों को छेड़ा तो मिले सुर मेरा तुम्हारा... की भावभूमि साकार हो उठी। वास्तव में सुरों का एक ऐसा कोलाज़ बना, जिसमें संगीत का हरेक रंग नुमाया हो रहा था। उनकी सांगीतिक प्रस्तुतियों का बड़ी संख्या में मौजूद गुणीय रसिकों ने जी-भरकर आनंद उठाया। सभा का आगाज़ पारंपरिक ढंग से सारदा नाद मंदिर ग्वालियर के विद्यार्थियों व आचार्यों द्वारा प्रस्तुत ध्रुपद गायन से हुआ। राग परमेश्वरी ताल चौताल में निबद्ध बंदिश के बोल थे सरस्वती आदि रूप। पखावज पर यमुनेश नागर व हारमोनियम पर अनूप मोघे ने साथ निभाया। भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में देश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित महोत्सव विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह का संगीतधानी ग्वालियर में भव्य शुभारंभ हुआ। यहाँ हज़ीरा स्थित सुर सम्राट तानसेन की समाधि के समीप चैन्नकेशव मंदिर बेलूर की थीम पर बने भव्य एवं आकर्षक मंच पर सोमवार की सांध्यबेला में आयोजित हुए भव्य एवं गरिमामय समारोह में देश के सुप्रतिष्ठित बाँसुरी वादक पं. नित्यानंद हल्दीपुर मुम्बई को वर्ष 2021 के राष्ट्रीय तानसेन सम्मान से विभूषित किया गया। साथ ही मुम्बई की संस्था सामवेद सोसायटी फॉर परफार्मिंग आर्ट को वर्ष 2021 के राजा मानसिंह तोमर सम्मान से अलंकृत किया गया। यह सम्मान कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रही संस्था को दिया जाता है। इस अवसर पर संस्कृति मंत्री सुश्री उषा ठाकुर ने कहा कि प्रदेश सरकार कला व संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के लिये पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है।

प्रख्यात बाँसुरी वादक पं. नित्यानंद हल्दीपुर तानसेन सम्मान से विभूषित

पाश्चात्य व अफगान लोक धुनों की मनोहारी प्रस्तुति

विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह में सुदूर देश संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिष्ठित रबाब वादक ने मिस्टर विलियम रीस हॉफमैन ने सुर सम्राट तानसेन के दरबार में पाश्चात्य व अफगान लोक धुनों से स्वरांजलि दी। उन्होंने अफगानी वाद्य यंत्र रबाब से उत्कृष्ट वादन कर मैहर घराना एवं काबुल के उस्ताद नबी गोल की सांगीतिक परंपरा की मीठी-मीठी धुनें निकाल कर सुधीय रसिकों पर गहरी छाप छोड़ी। विलियम रीस भारतीय सरोद वादन में भी निपुण हैं।

नैना मोरे तरस गए आजा बलम परदेशी..

तानसेन समारोह की गुरुवार की प्रातःकालीन सभा में माँ सारदा की नगरी मैहर से आए युवा शास्त्रीय गायक विनोद मिश्रा की दूसरी कलाकार के रूप में प्रस्तुति हुई। उन्होंने ख्याल गायन के लिये राग बिलासखानी तोड़ी चुना। इस राग में उन्होंने तीन बंदिशें पेश कीं। विलंबित बंदिश के बोल थे माँ शारदा वर दे। इसके बाद तीन ताल में निबद्ध द्रुत बंदिश तुम ना सिखाओ पेश की। इसी कड़ी में द्रुत तीन ताल में कोयलिया काहे करत पुकार को बेहतरीन अलापचारी के साथ पेश कर रसिकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अपनी सुरीली आवाज़ में प्रसिद्ध ठुमरी नैना मोरे तरस गए आजा बलम परदेसी- सुनाकर अपने गायन को विराम दिया। उनके साथ तबले पर शशांक मिश्रा, हारमोनियम पर जितेन्द्र शर्मा और सारंगी पर उस्ताद अब्दुल मजीद खां ने कमाल की संगत की। दानेदार, बुलंद एवं सुरीली आवाज़ में जब पण्डित ब्रजभूषण गोस्वामी ने राग सामंत सारंग में नोम तोम के आलाप के बाद ताल चौताल में तानसेन रचित बंदिश पेश की तो प्रांगण उच्च कोटि की ध्रुपद गायिकी से गुंजायमान हो उठा। विभिन्न प्रकार की लयकारियों का उन्होंने बहुत ही सुंदर प्रयोग किया। देश की राजधानी दिल्ली से तानसेन समारोह में प्रस्तुति देने आए पं ब्रजभूषण ने विलंबित, मध्यलय और द्रुत लय में जो अलापचारी आज पेश की उससे गुणीय रसिक सम्मोहित हो गए। राग सामंत सारंग में अलाप और बंदिश से शुरू हुआ उनके गायन का सिलसिला राग बिंद्राबनी सारंग तक पहुँचा। उन्होंने इस राग में एक बंदिश-रुपे दुलारी पेश कर अपने गायन को विराम दिया। उनके साथ पखावज पर विख्यात पखावज वादक अखिलेश गुंदेचा व सारंगी पर कुलभूषण गोस्वामी ने शानदार संगत की।

बगिया में तमाशे होय..

गुरुवार की प्रातःकालीन सभा का विशेष आकर्षण रहा ग्वालियर के सांगीतिक घराने में जन्मे पण्डित उमेश कंपूवाले का ख्याल गायन। उमेश जी ने खूब डूबकर गाया। उन्होंने राग मुल्तानी में संक्षिप्त आलाप से शुरू करके एक ताल में बड़ा ख्याल गोकुल गाँव का छोरा पेश किया। इसके बाद तीन ताल में छोटा ख्याल बगिया में तमाशे होय का गायन कर खांटी घरानेदार गायकी जीवंत कर दी। उमेश जी ने अपने गायन को विस्तार देते हुए द्रुत एक ताल में बंदिश आँगन में अनबान और राग मुल्तानी में ही एक तराने का सुमधुर गायन किया। इसी क्रम में उन्होंने ठुमरी कागा पिया से कहियो.. को बड़ी रंजकता के साथ गाया।

सराहनीय कार्यों के लिए मिला सम्मान

● गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर स्थित सभागार में ''महिला हिंसा उन्मूलन'' जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं की ब्रांड एंबेसडर मेधा परमार, अति. पुलिस महानिदेशक/पुलिस महानिरीक्षक ग्वालियर जोन श्री डी.श्रीनिवास वर्मा,भापुसे, श्री सुरेश सिंह तोमर, संयुक्त निदेशक महिला बाल विकास विभाग भोपाल, पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी,भापुसे, एवं महिला सेल की नोडल अधिकारी/अति. पुलिस अधीक्षक शहर (मध्य/यातायात) ग्वालियर श्रीमती मृगाखी डेका,भापुसे सहित पुलिस के अधिकारी व कर्मचारीगण व स्कूल/कॉलेज की छात्राएं उपस्थित रही। कार्यक्रम के प्रारम्भ में उपस्थित अतिथियों का बुके देकर स्वागत किया गया। ग्वालियर जिले में महिला संबंधी उत्कृष्ट विवेचना, महिला संबंधी अपराधों में त्वरित कार्यवाही, महिला हिंसा उन्मूलन, महिला अपराधों की रोकथाम हेतु जागरूकता अभियान के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया गया। अतिथि मेघा परमार द्वारा उक्त क्षेत्र में किये गये सराहनीय कार्य के लिये सीएसपी महाराजपुरा श्री रवि भदौरिया, सीएसपी इन्दरगंज विजय भदौरिया, निरीक्षक संजीव नयन शर्मा, निरीक्षक राजकुमारी परमार, उप निरीक्षक दिव्या तिवारी, उप निरीक्षक अंकिता भार्गव, प्र.आर. पुष्पा मुखर्जी, महिला आरक्षक पूनम तोमर को सम्मानित किया गयाकार्यक्रम के दौरान मेघा परमार ने कहा कि महिला का पहला कदम ही सुरक्षा है, यदि कोई व्यक्ति आपसे बात करता है तो उसे एक मर्यादा तक ही सीमित रखना चाहिए। महिलाओं को कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिसके संबंध में वह अपने परिजनों को न बता सके। इस अवसर पर एडीजीपी ग्वालियर जोन ने कहा कि सफल इंसान से हमें प्रेरणा लेना चाहिए तथा आप जो

भी कार्य दिल व जुनून से करेंगे उसमें आप अवश्य ही सफल होंगे। उन्होने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए अनेक कानून बनाये गये हैं लेकिन महिला हिंसा उन्मूलन के लिये सभी वर्गों को एक साथ आकर साझा प्रयास करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में उपस्थित पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों व छात्राओं को संबोधित करते हुए श्री सुरेश सिंह तोमर, संयुक्त निदेशक महिला बाल विकास विभाग भोपाल ने कहा कि ग्वालियर जिले में 1000 लड़कों पर 828 लड़कियां है जो कि लेंगिक भेदभाव में बहुत ज्यादा अंतर है। उन्होने कहा कि जहां महिलाओं की संख्या कम होती है वह महिलाओं पर हिंसा ज्यादा होती है इसलिए महिला हिंसा उन्मूलन के लिये महिलाओं को आगे आना चाहिए। पुलिस अधीक्षक ग्वालियर ने कहा कि पुलिस विभाग में महिला आरक्षक से लेकर महिला आईपीएस ऑफीसर तक सभी पुरूषों की तरह बराबर ड्यूटी करती हैं, हमारे यहां की महिला पुलिस ऑफीसर किसी से कम नहीं है जो कि एक प्रेरणा स्त्रोत है। इस अवसर पर उन्होने कहा कि स्कूल/कॉलेज जाने वाली छात्राओं को यदि रास्ते में कोई लड़का छेड़ता है या कमेंट करता है तो उसे इग्नोर नही करना चाहिए, बल्कि अपने माता-पिता और टीचर को बताना चाहिए, इग्नोर करने से वह किसी बड़ी घटना को अंजाम दे सकता है इसलिए महिलाओं को महिला हिंसा एवं ईव टीजिंग के विरूद्ध आवाज उठाने के लिये आगे आना चाहिए। कार्यक्रम में अति0 पुलिस अधीक्षक श्रीमती मृगाखी डेका,भापुसे, अति0 पुलिस अधीक्षक श्री मोती उर रहमान,भापुसे, अति0 पुलिस अधीक्षक शहर (पूर्व/अपराध) श्री राजेश डण्डोतिया, अति0 पुलिस अधीक्षक शहर (पश्चिम) श्री गजेन्द्र सिंह वर्धमान, अति0 पुलिस अधीक्षक ग्रामीण श्री जयराज कुबेर के अलावा समस्त राजपत्रित अधिकारी एवं पुलिस के अधिकारी व कर्मचारी एवं स्कूली छात्राएं उपस्थित थे।

मैराथन दौड़ में भाग लेने वाले सभी बच्चे बनेंगे गौरव दिवस के साक्षी: महापौर

● गूंज न्यूज नेटवर्क

नगर निगम ग्वालियर द्वारा भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई की जयंती को गौरव दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष में आयोजित सात दिवसीय कार्यक्रमों की श्रंखला में आज महाराज बाड़े से मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। मैराथन दौड़ को महाराज बाड़े पर महापौर डॉ शोभा सतीश सिंह सिकरवार एवम नगर निगम आयुक्त किशोर कन्याल द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर पूर्व नेता प्रतिपक्ष सुधीर गुप्ता, डीएसपी ट्रैफिक नरेश अनोतिया, जिला शिक्षा अधिकारी एवं नगर निगम के उपायुक्त अमर सत्य गुप्ता नोडल अधिकारी खेल सत्यपाल सिंह चैहान उपस्थित रहे महाराज बाड़े से प्रारंभ होकर मैराथन दौड़ सराफा बाजार, राम मंदिर चैराहा, गस्त का ताजिया, छप्पर वाला पुल, शिंदे की छावनी, गुरुद्वारा होते हुए फूल बाग पहुंची। जहां मैराथन का समापन हुआ। मैराथन के शुभारंभ अवसर पर श्री सचिन पाल के निर्देशन में विद्याभवन स्कूल के बच्चों द्वारा बैंड की प्रस्तुति दी गई। मैराथन दौड का रास्ते में चैक प्वाइंट पर धावकों के लिए केले, फूटी एवं ग्लूकोज वितरित किया गया तथा विभिन्न स्थानों पर पुष्पवर्षा से स्वागत किया गया। वहीं समापन कार्यक्रम स्थल पर सभी बच्चों को कैप का वितरण किया गया समापन

अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में महापौर डॉ शोभा सतीश सिंह सिकरवार एवं नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार की राशि एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर महापौर डॉक्टर सिकरवार ने कहा कि मैराथन दौड़ में भाग लेने वाले सभी बच्चे एवं युवा गौरव दिवस के साक्षी बनेंगे। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों का स्वागत सहायक खेल अधिकारी अयोध्या शरण शर्मा द्वारा किया गया कार्यक्रम का संचालन जिला फुटबॉल संघ के शिव वीर सिंह भदोरिया एवं सहायक नोडल अधिकारी खेल सुश्री विजेता चैहान द्वारा किया गया। भारत सरकार के खेल युवा कल्याण विभाग की हिंदी साहित्य समिति के सदस्य श्री अंशुल श्रीवास्तव एवं वरिष्ठ नेता लोकेश शर्मा, डीएसपी ट्रैफिक श्री नरेश अनोतिया, नगर निगम के उपायुक्त श्री अमर सत्य गुप्ता नोडल अधिकारी खेल श्री सत्यपाल सिंह चैहान, उपायुक्त डॉ अतिबल सिंह यादव, सहायक नोडल खेल अधिकारी धर्मेंद्र सोनी, भूपेन्द्र शर्मा नानू सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहेपुष्पेंद्र सिंह ने प्रथम तो उदय प्रताप सिंह ने प्राप्त किया द्वितीय स्थानगौरव दिवस के उपलक्ष में आयोजित अटल मैराथन दौड़ में प्रथम स्थान श्री पुष्पेंद्र सिंह द्वारा प्राप्त किया गया तथा द्वितीय स्थान उदय प्रताप सिंह तोमर एवं तृतीय स्थान आशीष धाकड़ ने प्राप्त किया।

महिला सशक्तिकरण

बात तो बहुत होती है पर स्थिति दयनीय क्यों है?

आज़ादी का अमृत महोत्सव मना चुके राष्ट्र में विधायी संस्थानों लोकसभा एवं विधानसभाओं में महिला प्रतिनिधियों की संख्या दयनीय है, नगण्य है। 75 वर्षों में लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 10 प्रतिशत तक भी नहीं बढ़ा है जबकि विधानसभाओं में यह स्थिति और भी चिन्तनीय है, वहां 9 प्रतिशत ही महिला प्रतिनिधि है। इस बार हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव नतीजों के बाद यह मुद्दा फिर सुर्खियों में है कि वहां अड़सठ सदस्यीय विधानसभा में सिर्फ एक महिला विधायक होगी। हालांकि इस बार के चुनाव में वहां अलग-अलग दलों की ओर से कुल चौबीस महिला प्रत्याशी थीं। मुख्यधारा की राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व क्यों नहीं बढ़ रहा है, क्यों राजनीतिक दल महिलाओं को प्रतिनिधित्व देने के नाम पर उदासीन है? आखिर क्या वजह है कि जब संसद में बिना बहस के भी कई विधेयक पारित हो जाते हैं, तब भी संसद और विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कानूनी तौर पर सुनिश्चित कराने को लेकर राजनीतिक पार्टियां गंभीर नहीं दिखती हैं?

दुनिया का सबसे बड़ा एवं सशक्त लोकतंत्र होने का दावा करने वाला भारत महिलाओं के प्रतिनिधित्व के नाम पर ईमानदारी नहीं दिखा पा रहा है। चिन्तनीय पहलू है कि चुनावी प्रतिनिधित्व के मामले में भारत, अंतर-संसदीय संघ की संसद में महिला प्रतिनिधियों की संख्या के मामले में वैश्विक रैंकिंग में कई स्थान नीचे आ गया है, जिसमें वर्ष 2014 के 117वें स्थान से गिरकर जनवरी 2020 तक 143वें स्थान पर आ गया। इस बार के गुजरात एवं हिमाचल प्रदेश के चुनाव में महिला प्रतिनिधित्व के लिहाज से देखें तो स्थिति और दयनीय हुई है। गुजरात में भी पिछले विधानसभा चुनाव में तेरह के मुकाबले इस बार सिर्फ दो महिला प्रतिनिधियों की बढ़ोतरी हुई। जबकि वहां विधानसभा की कुल क्षमता एक सौ बयासी विधायकों की है और इस बार कुल एक सौ उनतालीस महिलाएं चुनाव के मैदान में थीं। अमेरिका में राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ चुकीं हिलेरी क्लिंटन का कहना है, ÷जब तक महिलाओं की आवाज़ नहीं सुनी जाएगी तब तक सच्चा लोकतंत्र नहीं आ सकता। जब तक महिलाओं को अवसर नहीं दिया जाता, तब तक सच्चा लोकतंत्र नहीं हो सकता।÷ आदर्श एवं सशक्त लोकतंत्र के लिये महिला

प्रतिनिधित्व पर गंभीर चिन्तन एवं ठोस कार्रवाई जरूरी है। भारत में महिलाएँ देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। यूँ तो यह आधी आबादी कभी शोषण तो कभी अत्याचार के मामलों को लेकर अक्सर चर्चा में रहती है, कभी सबरीमाला मंदिर में प्रवेश और तीन तलाक पर कानून के मुद्दों को लेकर महिलाओं की समानता का सवाल उठ खड़ा होता है। लेकिन जब भी हम महिलाओं की समानता की बात करते हैं तो यह भूल जाते हैं कि किसी भी वर्ग में समानता के लिये सबसे पहले अवसरों की समानता का होना बेहद ज़रूरी है। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि देश में आधी आबादी राजनीति में अभी भी हाशिये पर है। यह स्थिति तब है, जब महिलाओं को राजनीति के निचले पायदान से ऊपरी पायदान तक जितना भी और जब भी मौका मिला, उन्होंने अपनी योग्यता और क्षमताओं का लोहा मनवाया है। सोनिया गांधी, मायावती, ममता बनर्जी, निर्मला सीतामरण, वृंदा करात, वसुंधरा राजे, स्मृति इरानी, उमा भारती, अगाथा संगमा, महबूबा मुफ्ती ऐसे चमकते महिला राजनीतिक चेहरे हैं, जो वर्तमान राजनीति को नयी दिशा देने को तत्पर है।

जाहिर है, जिस दौर में हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए आवाज उठ रही है, सरकारों की ओर से कई तरह के विशेष उपाय अपनाए जा रहे हैं, नीतियां एवं योजनाओं पर काम हो रहा है, वैसे समय में राजनीति में महिलाओं की इस स्तर तक कम नुमाइंदगी निश्चित रूप से सबके लिए चिंता की बात होनी चाहिए। लेकिन यह केवल हिमाचल प्रदेश या गुजरात जैसे राज्यों की बात नहीं है। पिछले हफ्ते लोकसभा में सरकार की ओर से पेश आंकड़ों के मुताबिक, आंध्र प्रदेश, असम, गोवा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, केरल, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, ओड़िशा, सिक्किम, तमिलनाडु और तेलंगाना में दस फीसद से भी कम महिला विधायक हैं। देश की संसद में थोड़ा सुधार हुआ है, लेकिन आज भी लोकसभा और राज्यसभा में महिला सांसदों की हिस्सेदारी करीब चौदह फीसद है।

न्यूज़ीलैंड की संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 50 प्रतिशत का आँकड़ा पार कर गया है। अंतर-संसदीय संघ के अनुसार, न्यूज़ीलैंड दुनिया के ऐसे आधा दर्जन देशों में से एक है जो वर्ष 2022 तक संसद में कम-से-कम 50 प्रतिशत महिला प्रतिनिधित्व का दावा कर सकता है। भारत में यह स्थिति बहुत दूर की बात है, फिलहाल महिला आरक्षण विधेयक 2008 जो कि भारत की संसद के निचले सदन, लोकसभा और सभी राज्य विधानसभाओं में कुल सीटों में से महिलाओं के लिये 1/3 सीटों को आरक्षित करने हेतु भारत के संविधान में संशोधन करने का प्रस्ताव करता है। लेकिन ऐसा न हो पाना कहीं-न-

कहीं राजनीति में भी महिलाओं को दोयम दर्जा पर रखने एवं महिलाओं की उपेक्षा का ही द्योतक है। बड़ा तथ्य एवं सच है कि राष्ट्रीय राजनीति में प्रतिनिधित्व की कसौटी पर अगर कोई सामाजिक तबका पीछे रह गया है तो बाकी सभी क्षेत्रों में उसकी उपस्थिति पर इसका सीधा असर पड़ता है। क्यों नहीं विभिन्न राजनीति दल महिलाओं को सम्मानजनक प्रतिनिधित्व देने की पहल करते। चुनाव के वक्त ये दल महिला प्रतिनिधित्व के अपने वायदों एवं दावों से विमुख हो जाते हैं। इस तरह की कोई पहलकदमी तो दूर, संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए तैंतीस फीसद आरक्षण सुनिश्चित करने का मुद्दा पिछले करीब ढाई दशक से अधर में लटका है।

भारत के प्रमुख राजनीतिक दलों में महिला कार्यकर्ताओं की भरमार है, वे चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है, परंतु ज्यादातर उन्हें चुनाव लड़ने के लिए जरूरी टिकट नहीं दी जाती है और उन्हे हाशिये पर रखा जाता है। हालांकि, भारतीय राजनीति में महिलाओं के इस दयनीय प्रतिनिधित्व के लिए और भी कई कारण जिम्मेदार है जैसे चली आ रही लिंग संबंधी रूढ़ियाँ, राजनीतिक नेटवर्क की कमी, वित्तीय तनाव, संसाधनों की कमी, पारिवारिक जिम्मेदारियां, पुरुषवादी मानसिकता आदि। परंतु एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक जो राजनीति में महिलाओं की सहभागिता में बाधक है वो है देश के भीतर महिलाओं में राजनीतिक शिक्षा की कमी। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 के अनुसार, 153 देशों में भारत ने शिक्षा प्राप्ति के क्षेत्र में 112वें पायदान पर है, जिससे पता चलता है कि राजनीति में महिलाओं की सहभागिता में शिक्षा एक गंभीर साझेदारी अदा करती है। महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता, शिक्षा से काफी प्रभावित हो रही है। शैक्षिक संस्थानों में दिए जाने वाले औपचारिक शिक्षा, लोगों में नेतृत्व के अवसर और उनमे महत्वपूर्ण नेतृत्व क्षमता पैदा करती है। राजनीतिक ज्ञान की कमी के कारण, महिलायें अपनी बुनियादी और राजनीतिक अधिकारों से बेखबर है। जरूरत है महिलाएं अपनी सोच को बदले। उन्हें खुद को हिम्मत करनी ही होगी साथ ही समाज एवं राजनीतिक दलों को भी अपने पूर्वाग्रह छोड़ने के लिये तैयार करना होगा। इससे न केवल महिलाओं का बल्कि पूरे देश का संतुलित विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा। बाबा साहेब आंबेडकर ने भी कहा था कि मैं महिलाओं के विकास की स्थिति को ही समाज के विकास का सही पैमाना मानता हूं।' नया भारत एवं सशक्त भारत को निर्मित करते हुए हमें राजनीति में महिलाओं की भागीदारी पर सकारात्मक पहल करते हुए उन्हें बराबरी नहीं तो वन थर्ड हिस्सेदारी दें।

महिलाओं के खिलाफ़ हिंसा

महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मामले बढ़े, समाज की सोच में आखिर क्यों नहीं आ रहा बदलाव?

इन दिनों स्त्रियों के घरेलू जीवन में उन पर अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। विशेषतः कोरोना महामारी के लॉकडाउन के दौरान एवं उसके बाद महिलाओं पर हिंसा, मारपीट एवं प्रताड़ना की घटनाएं बढ़ी हैं। ऐसी ही पीलीभीत की एक घटना ने रोंगटे खड़े कर दिये। खाने में बाल निकलने के बाद पत्नी को पीलीभीत के युवक जहीरुद्दीन ने जिस बेरहमी, बर्बरता एवं क्रूरता से मारा, जमीन पर गिरा दिया, घर में रखी बाल काटने वाली मशीन (ट्रिमर) को पत्नी के सिर पर चला दिया, इन दुभाग्यपूर्ण एवं शर्मसार करने वाली नृशंसता की घटना की जितनी निन्दा की जाये, कम है। स्त्री को समानता का अधिकार देने और उसके स्त्रीत्व के प्रति आदर भाव रखने के मामले में आज भी पुरुषवादी सोच किस कदर समाज में हावी है, इसकी पीलीभीत की यह ताजा घटना निन्दनीय एवं क्रूरतम निष्पत्ति है। दुभाग्यपूर्ण पहलू यह है कि जब एक स्त्री पर यह अनाचार हो रहा था तो दूसरी स्त्री यानी उसकी सास भी खड़ी थी और उसके बचाव में नहीं आई। जब उक्त युवक को अपने अपराध का अहसास हुआ तो भी वह पश्चाताप करने की बजाय पत्नी को ऐसे ही बंधा छोड़कर फरार हो गया।

रह-रह कर समाज में घटित हो रही ये महिला अत्याचार, हिंसा, उत्पीड़न की घटनाएं चिन्तित करती एवं इन पर नियंत्रण के लिये कुछ प्रभावी कदमों की जरूरत व्यक्त करती है। यह देखना भी दिलचस्प है कि जहां साल में दो बार लड़कियों को महत्व देने के लिए उसे पूजने के पर्व मनाए जाते हों, वहां लड़कियों को दोयम दर्जे का मानने वाले भी बहुत हैं, महिलाओं के अस्तित्व एवं अस्मिता को नोंचने वाले भी कम नहीं हैं, आये दिन ऐसी घटनाएं देखने और सुनने को मिलती हैं कि किस तरह आज भी महिलाओं के साथ हिंसा एवं अत्याचार किया जाता है। जबकि आधुनिक होते भारत में महिलाओं ने अपने प्रयास के दम पर कई उपलब्धियां हासिल की हैं। यह देखकर गर्व होता है लेकिन जब ऐसी घटनाएं होती हैं, जैसी पीलीभीत में हुई, तो यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि समाज की वास्तविकता क्या है? महिला समानता आज का सच है या अपवाद? प्रगति के

प्रतिमान लिखने वाली महिलाएं हमारे समाज का वास्तविक सच हैं या वह, जो पीलीभीत की पीड़िता के साथ हुआ। इस पर गंभीरता से चिंतन करना होगा।

महिलाओं के प्रति यह संवेदनहीनता एवं बर्बरता कब तक चलती रहेगी? भारत विकास के रास्ते पर तेजी से बढ़ रहा है, लेकिन अभी भी कई हिस्सों में महिलाओं को लेकर गलत धारणा है कि महिलाएं या बेटियां परिवार पर एक बोझ की तरह हैं। एक विकृत मानसिकता भी कायम है कि वे भोग्य की वस्तु हैं? उन्हें पांव के नीचे रखा जाना चाहिए। यों यह घटना आए दिन होने वाले जघन्य अपराधों की ही अगली कड़ी है, मगर यह पुरुषवादी सोच और समाज के उस ढांचे को भी सामने करती है, जिसमें महिलाओं की सहज जिंदगी लगातार मुश्किल बनी हुई है, संकटग्रस्त एवं असुरक्षित है। भले ही महिलाओं ने अपनी जंजीरों के खिलाफ बगावत कर दी है, लेकिन देश में ऐसा वर्ग भी है जहां आज भी महिलाएं अत्याचार का शिकार होती हैं। भले एक खास महिला वर्ग ने आर्थिक मोर्चे पर आजादी हासिल की है, लेकिन एक बड़ा महिला वर्ग आज भी पुरुषप्रधान समाज की सोच की शिकार है। ऐसा माहौल है तभी आजादी के अमृत महोत्सव मना चुके राष्ट्र की तमाम महिलाएं 'मुझे पति और पति के परिवार से बचाओ' की गुहार लगातीं हुई दिखाई देती हैं। इसलिये कि उन्हें सदियों से चली आ रही मानसिकता, साजिश एवं सजा के द्वारा भीतरी सुरंगों में धकेल दिया जाता है, अत्याचार भोगने को विवश किया जाता है। महिलाएं सभी समाजों, सभी देशों और सभी कालों में महत्वपूर्ण भूमिका में रही हैं। चाहे वेदों की बात करें, जो महिलाओं को पूजनीय बताते हैं, या गांधीजी की बात करें जो उन्हें परिवार की धुरी बताते हैं, हर समय महिलायें महत्वपूर्ण रही हैं। वेद कहते हैं कि वह व्यवस्था सबसे उत्तम है, जहां महिलाओं का सम्मान होता है। गांधीजी मानते थे कि अगर पूरे परिवार को और आगे आने वाली पीढ़ी को सुसंस्कृत बनाना है, तो केवल उस परिवार की महिलाओं को शिक्षित कर देना चाहिये।

कोरोना जाते जाते लोगों के हृदय के साथ बड़ा खिलवाड़

कोरोना भले ही अब अंतिम सांसें गिनने लगा हो पर कोरोना प्रभावित इसके दुष्प्रभाव से अभी तक मुक्त नहीं हो पाये हैं। कोरोना प्रभावितों द्वारा दोनों टीकों यहां तक कि बूस्टर डोज लगवाने वाले भी इन दुष्प्रभावों से बच नहीं पा रहे हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार दुनिया के 20 करोड़ लोग कोरोना के साइड इफेक्ट से प्रभावित हो रहे हैं। अचानक दिल का दौरा, भूलने की आदत, सरदर्द, अधिक बाथरूम जाना, अचानक डायबिटिक होना, मनोबल में कमी और इसी तरह के साइड इफेक्ट से दो चार हो रहे हैं। कोरोना दुष्प्रभाव के चलते मौत का आंकड़ा भी बढ़ता जा रहा है। हालिया अध्ययनों से यह तो साफ हो गया है कि कोरोना की छाप कहीं जल्दी जाने वाली नहीं है। दरअसल कोरोना का दुष्प्रभाव अब तेजी से सामने आने लगा है। अध्ययनों की मानें तो कोरोना के बाद अचानक हृदय गति रुकने के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है तो दूसरी ओर यह भी साफ हो गया है कि कोरोना से रूबरू हो चुके लोगों में स्मृति लोप या भ्रम की स्थिति भी देखने को मिलने लगी है। हालांकि यह माना जा रहा था कि कोरोना का प्रभाव फेफड़ों पर तेजी से बढ़ते संक्रमण के रूप में देखा गया और इसके कारण कोरोना से अधिकांश मौतें हुई पर पिछले दिनों में कम उम्र में जो साइलेंट अटैक के मामले सामने आए हैं वह अत्यधिक चिंतनीय हैं। पिछले दिनों पारिवारिक फंक्शन में नाचते नाचते मौत हो जाना, जिम में एक्सरसाइज करते करते हार्ट अटैक के कारण मौत या इसी तरह के अनेक मामले तेजी से सामने आ रहे हैं। एम्स के ताजातरीन अध्ययन ने इसे अतिगंभीर

माना है तो विदेशों में कराए गए अध्ययनों की रिपोर्ट भी इसकी पुष्टि करती है। खासतौर से 30 साल या इससे अधिक उम्र के कोरोना के संक्रमण में आ चुके लोगों को गंभीर हो जाना चाहिए और समय समय पर जांच करवाते रहना चाहिए। यह कोई भयाक्रांत करने की बात नहीं है अपितु कोरोना राक्षस ही ऐसा रहा है कि उसके दुष्प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। फ्रांस के एक शोध के अनुसार कोरोना के बाद अस्पताल के बाहर यानी कि घर पर या अन्य स्थान पर कार्डियक अरेस्ट के मामले लगभग दोगुने हो गए हैं। फिलाडेल्फिया में 700 लोगों पर अध्ययन करने पर भी कुछ इसी तरह के परिणाम सामने आये हैं। इटली में किए गए शोध के अनुसार इस तरह के मामलों में 70 फीसदी की बढ़ोतरी देखी जा रही है। अमेरिका में किए गए अध्ययन के भी कमोबेश यही परिणाम देखने को मिल रहे हैं। हमारे देश में भी 357 जिलों के करीब 32 हजार कोरोना प्रभावित रहे लोगों का सर्वे किया गया है और इसके दुष्प्रभाव सामने आये हैं।

एम्स कार्डियोलोजी विभाग के प्रोफेसर राकेश यादव का कहना है कि कोरोना से गंभीर बीमार हुए लोगों के दिल में दौरे का जोखिम अधिक हो गया है। कोरोना के बाद धड़कन आसामान्य होना, दिल की मांसपेशियों के के कमजोर होने और खून के थक्कों का फेफड़ों तक पहुंच जाना आम होता जा रहा है। ऐसे में ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रोल और शुगर की समय समय पर जांच कराते रहना जरूरी हो गया है। दरअसल कोरोना प्रभावितों के खून के थक्के जमने का खतरा अधिक हो गया हैं वहीं कोरोना संक्रमितों की दिल की मांसपेशियां कमजोर हो जाती हैं। यहां तक सामने आ रहा है कि दिल की धड़कन असामान्य होने लगी है।

अंतरिक्ष में ऊंची उड़ान

अब प्राकृतिक आपदाओं पर आसमान से नजर रख सकेगा भारत

इसरो के वैज्ञानिकों ने बीते कुछ वर्षों में अंतरिक्ष की दुनिया में कई बड़े मुकाम हासिल किए हैं। पिछले दिनों भी इसरो ने अंतरिक्ष में सफलता का ऐसा ही परचम लहराया। आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर से इसरो ने महासागरों के वैज्ञानिक अध्ययन और चक्रवातों पर नजर रखने के लिए तीसरी पीढ़ी के ओशनसैट सैटेलाइट का प्रक्षेपण किया। इसरो ने 44.4 मीटर लंबे अपने विश्वसनीय पीएसएलवी-54 रॉकेट से ईओएस-06 मिशन के तहत कुल 321 टन भार के साथ उड़ान भरी और ओशनसैट-3 सैटेलाइट के अलावा भूटान के एक उपग्रह सहित 8 नैनो उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण किया। इस वर्ष का इसरो का यह पांचवां और आखिरी मिशन था, जो वैज्ञानिकों द्वारा किए गए सबसे लंबे समय तक चलने वाले मिशनों में से एक था। इसरो के पीएसएलवी (पोलर सैटेलाइट लांच व्हीकल) रॉकेट का यह 54वां तथा पीएसएलवी-एक्सएल प्रारूप का 24वां मिशन था, इसीलिए इसरो द्वारा अपने इस मिशन को पीएसलीवी सी-54 नाम दिया गया।

पीएसएलवी-54 के जरिये ओशनसैट-3 के अलावा प्रक्षेपित किए गए आठ लघु उपग्रहों में भूटान के खास रिमोट सेंसिंग भूटानसैट सहित बेंगलुरू आधारित निजी कम्पनी पिक्सेल द्वारा निर्मित उपग्रह 'आनंद', हैदराबाद की निजी स्पेस कम्पनी ध्रुव द्वारा निर्मित दो थायबोल्ट उपग्रह, स्पेसफ्लाइट और यूएसए के चार एस्ट्रोकास्ट उपग्रह शामिल थे। करीब एक हजार किलोग्राम वजनी ओशनसैट-3 सैटेलाइट को इसरो ने 'अर्थ

ऑब्जरवेशन सैटेलाइट-6' (ईओएस-06) नाम दिया है और ईओएस-06 तथा 8 नैनो उपग्रहों का कुल वजन 1117 किलोग्राम था। पीएसएलवी-सी54 ने ईओएस-06 को पृथ्वी से 742 किलोमीटर की ऊंचाई पर अपनी कक्षा में प्रक्षेपण के बाद 17 मिनट में पहुंचाया और अन्य सभी 8 उपग्रह भी अपनी निर्धारित कक्षाओं में करीब 528 किलोमीटर ऊंचाई पर स्थापित किए गए तथा कुल दो घंटे के उड़ान समय में मिशन सफलतापूर्वक पूरा हुआ। इसरो के लिए यह मिशन बेहद खास इसलिए था क्योंकि इसरो के वैज्ञानिकों द्वारा पहली बार दो कक्षाओं में उपग्रह प्रक्षेपित किए गए, जिसमें ऑर्बिट चेंज थ्रस्टर्स (ओसीटी) उपयोग हुए। ओशनसैट को 742 किलोमीटर की ऊंचाई पर पहुंचाने के बाद पीएसएलवी-सी54 रॉकेट को नीचे की ओर लाया गया और बाकी 8 उपग्रह 513 से 528 किलोमीटर पर स्थापित किए गए।

इसरो द्वारा अंतरिक्ष की अलग-अलग कक्षाओं में स्थापित किए उपग्रहों की विशेषताओं की बात करें तो आनंद और थायबोल्ट निजी स्पेस कम्पनियों के भारतीय उपग्रह हैं, जिनमें पिक्सल कम्पनी के आनंद उपग्रह का कुल वजन 16.51 किलोग्राम है, जो व्यावसायिक उपग्रह क्षमता और तकनीक के प्रदर्शन के लिए अंतरिक्ष में भेजा गया है। 'आनंद' एक हाइपरस्पैक्ट्रल नैनो सैटेलाइट है, जिसमें 150 से अधिक तरंगदैर्ध्य हैं, जो इसे आज के गैर-हाइपरस्पैक्ट्रल उपग्रहों (जिनकी तरंग दैर्ध्य 10 से अधिक नहीं है) की तुलना में अधिक विस्तार से पृथ्वी की तस्वीरें लेने में सक्षम बनाएंगी।

वैश्विक मंदी-युद्ध के बीच भारत के हाथों में उम्मीद की मशाल

जिस पल का इंतजार हरेक देशवासी को था वो घड़ी आ गईय् भारत ने एक दिसंबर को आधिकारिक तौर पर जी 20 की अध्यक्षता संभाल ली है। जी 20 दुनिया की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का समूह है। इसकी अध्यक्षता संभालते ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये समय भारत की आध्यात्मिक परंपरा से प्रोत्साहित होने का है। प्रधानमंत्री मोदी ने सिलसिलेवार कई ट्वीट कर कहा कि अब समय पुरानी घिसी-पिटी मानसिकता में फंसे रहने का नहीं है। यह समय हमारी आध्यात्मिक परंपराओं से प्रेरित होने का है, जो वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए मिलकर काम करने की वकालत करता है। सरकारी सूत्रों के अनुसार, नई दिल्ली 1 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक एक वर्ष के लिए ज20 की अध्यक्षता ग्रहण करने के लिए तैयार है। विदेश मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि भारत 2023 में 9 और 10 सितंबर को नई दिल्ली में ज-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा। जी20 शिखर सम्मेलन तक देश भर के 50 शहरों में 200 से अधिक बैठकों की योजना बनाई गई है। इनमें से कुछ बैठकों की मेजबानी करने के लिए देश के उन हिस्सों का चयन किया गया है जिनके बारे में लोगों को बेहत कम जानकारी है।

क्यों है अहम

भारत का मानना है कि यह एक ऐसा ग्लोवल इवेंट है, जिसके माध्यम से भारत अपने देश की विविधता और विकास के 75 सालों के सफर को पूरे विश्व के सामने पेश कर सकता है।

कौन-कौन है जी-20 में

जी-20 यानी दुनिया के शक्तिशाली और उभरते 20 देशों का समूह। इसका मुख्य सम्मेलन अगले साल 9 और 10 सितंबर को भारत में होगा। जी-20 देशों में अमेरिका, रूस, चीन, भारत के अलावा अर्जेंटिना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, सऊदी अरव, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, ब्रिटेन, और यूरोपीय संघ (ईयू) शामिल हैं। इसके अलावा भारत ने इसमें शामिल होने के लिए बांग्लादेश, यूएई, मॉरीशस, अफ्रीकी यूनियन, रवांडा, नाइजीरिया, ओमान क भी आमंत्रण दिया है।

समस्या का हल बताएगा भारत

सरकार के एक सीनियर अधिकारी ने कहा कि हर जी-20 सम्मेलन में एक बड़ी समस्या से निपटने का रास्ता दिखाया जाता है और भारत भी अगले सम्मेलन में ऐसा ही करेगा।

किन मुद्दों पर फोकस

सीनियर अधिकार ने कहा कि आने वाले समय में मंदी की आशंका के बीच कई अहम मसले सामने आएंगे। साथ ही इसमें डिजिटल क्रांति और गवर्नेंस पर बड़ा फोकस रहेगा। रिन्युएबल एनर्जी पर भी विस्तार से बात होगी। पर्यावरण भी चर्चा के केंद्र में होगा। महिलाओं से जुड़े मुद्दे भी चर्चा में आ सकते हैं।

रूस यूक्रेन युद्ध का क्या असर

इंडोनेशिया में आयोजित सम्मेलन पर रूस-युक्रेन युद्ध का साया नजर आया था। रूस के राष्ट्रपति पूतिन नहीं पहुंचे थे। अगले साल तक युद्ध के मौजूदा हालात के सामान्य होने की संभावना कम ही है। ऐसे में भारत के सामने बड़ी चुनौती रहेगी।

भारत के पास क्या मौका

विश्व के सबसे ताकतवर देशों की इस इवेंट का मेजवान वनने पर भारत के पास मौका होगा कि वह पूरी दुनिया के सामने खुद को जोरदार तरीके से पेश कर सके। इसी मंशा से भारत ने दस महीनों में 200 से ज्यादा इवेंट करने की योजना बनाई है। भारत जी-20 में संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, विविधता और 75 वर्षों की अपनी उपलब्धियों और प्रगति को भी पेश करेगा। विदेश मंत्रालय की तरफ से जारी बयान के अनुसार भारत अपनी अध्यक्षता में अगले साल 9 और 10 सितंबर को जी-20 के नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा। पहली तैयारी बैठक 4-7 दिसंबर को उदयपुर में होगी।

New Year Celebration

कम बजट में एन्जॉय करें खूबसूरत वादियों में

नए साल 2023 के स्वागत प्लान बना रहें हैं तो खुश हो जाइये क्योकि इस बार साल के पहले दिन की शुरुआत वीकेंड से हो रही है। ऐसे में आप कहीं भी दो से तीन दिन के लिए न्यू ईयर सेलिब्रेशन के लिए जा सकते हैं। अगर आप कन्फ्यूज है डेस्टिनेशन और बजट को लेकर तो आप किसी भी कम बजट वाले हिल स्टेशन पर इंजॉय कर सकते हैं। उत्तराखंड के कुछ हिल स्टेशन आपके न्यू ईयर सेलिब्रेशन का मजा दुगना कर देंगे क्योकि आप यहां कम खर्च में भी पूरा इंजॉय कर सकते हैं। आइये जानते हैं इन स्थानों के बारे में-

ऋषिकेश

ऋषिकेश का नाम सुनते ही आपके जेहन में रिवर राफ्टिंग, कैम्पिंग जैसी एक्टिविटीज़ आने लगती है। ऋषिकेश में साल भर देशी विदेशी पर्यटकों की भरमार रहती है। यहां बहुत सी धर्मशालाएं है जहां आप मुफ्त में भी ठहर सकते हैं। तीन दिन की ऋषिकेश ट्रिप का खर्च लगभग पांच हजार रूपये आ सकता है। दिल्ली से ऋषिकेश की दूरी 263 किलोमीटर है और किराया भी आपके बजट में है।

लैंसडाउन

लैंस डाउन की दूरी दिल्ली से 280 किलोमीटर है जानें में लगभग 7 घंटे लगते हैं। कम खर्च वीकेंड इंजॉय करने के लिए लैंस डाउन आपके लिए बेस्ट ऑप्शन है। यहां के शांत वातावरण में आप फैमिली और दोस्तों के साथ फुल इंजॉय कर सकते हैं। यहां आप रिवर रॉफ्टिंग और ट्रैकिंग का मजा ले सकते हैं। लैंसडाउनमें भी कम बजट में न्यू ईयर का सेलिब्रेशन का पूरा आनंद मिलेगा।

अल्मोड़ा

अल्मोड़ा दिल्ली से लगभग 305 किलोमीटर की दूरी पर है यहां पहुंचने में आपको 7 घंटे लगते हैं। अल्मोड़ा के पहाड़ो की खूबसूरती और यहां का जीरो पॉइंट डियर पार्क आपके न्यू ईयर सेलिब्रेशन को यादगार बना देंगे। अल्मोड़ा हिमालय के पहाड़ो से घिरा हुआ है। यहां भी आप कम बजट में एन्जॉय कर सकते हैं।

कसोल

कम पैसों में नए साल का स्वागत आप कसोल में कर सकते हैं। हिमांचल में बसा कसोल आपका मन मोह लेगा यहां की नैचुरल खूबसूरती आपके न्यू ईयर सेलिब्रेशन में चार चांद लगा देगी। कसोल जानें के लिए आपको दिल्ली से बस मिल जाएगी जिसका किराया 500-1000 तक हो सकता है। यात्रा में लगभग 12 घंटे लगते हैं। नजदीकी एयरपोर्ट कुल्लू है। कुल्लू यहां से लगभग 42 किलोमीटर की दूरी पर है। कसोल की ट्रिप भी कम पैसों में इंजॉय कर सकते हैं। यहां का मलाणा गांव भी घूम सकते हैं। यहां के घने जंगल और उनके बहती पार्वती नदी की खूबसूरती आपके सेलिब्रेशन को यादगार बना देंगे ।

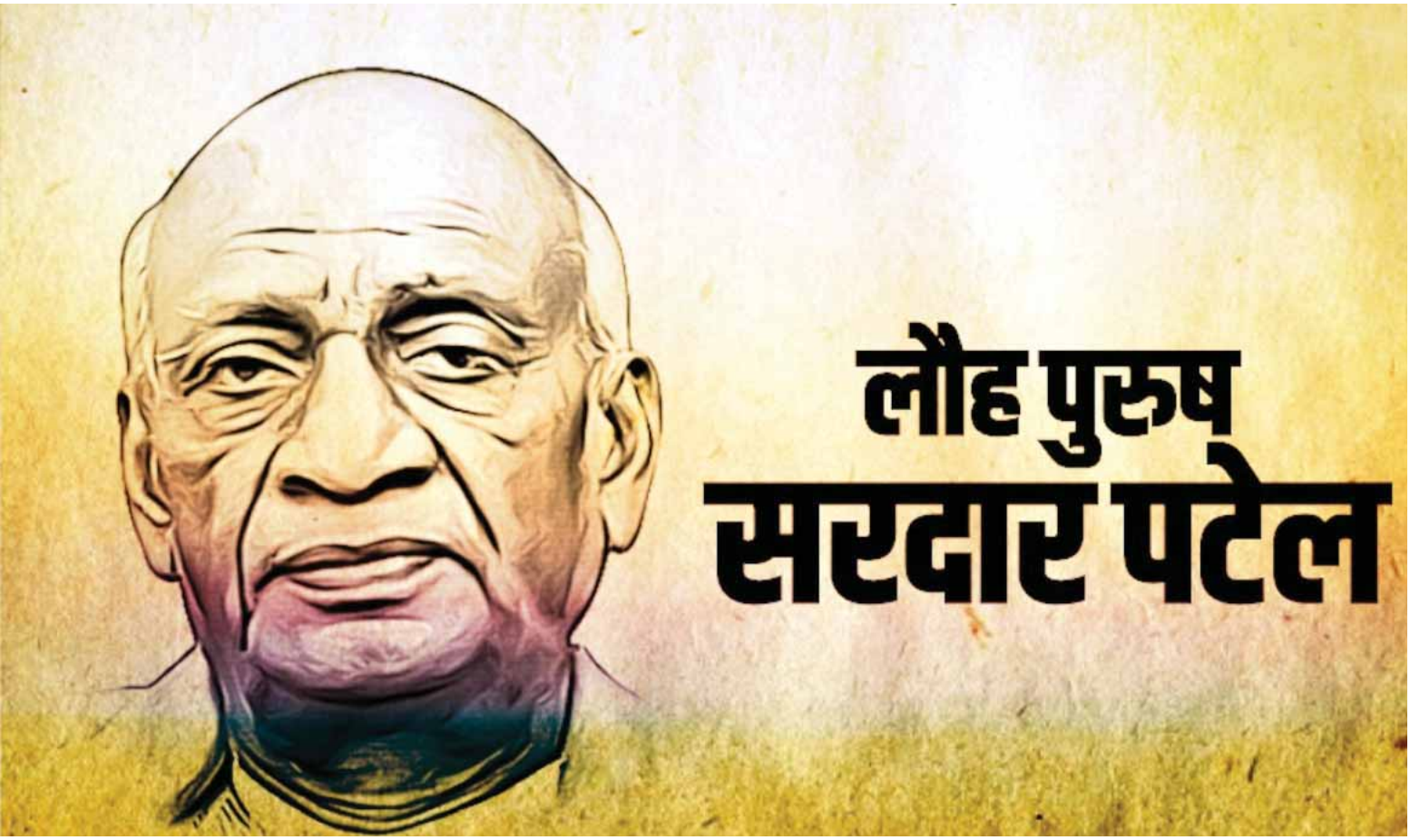

लौह पुरुष सरदार पटेल

जब-जब मजबूत और अखंड भारत के बाद आएगी तब तक पर लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का जिक्र जरूर आएगा। देश को एकता और अखंडता के सूत्र में पिरोने वाले पहले उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल अपने मजबूत संकल्प शक्ति के लिए हमेशा जाने गए। वह सरदार पटेल ही थे जिन्होंने बिखरे भारत को एक करने की कोशिश की। वह सरदार पटेल ही थे जिन्होंने छोटे-छोटे राजवाड़े और राजघरानों को भारत में सम्मिलित किया। दूसरे शब्दों में कहे तो विशाल भारत की कल्पना बिना वल्लभ भाई पटेल के शायद पूरी नहीं हो पाती। सरदार पटेल की विशाल व भव्य भारत की कल्पना हमेशा इतिहास में अंकित रहेगा। नवीन भारत के निर्माता सरदार वल्लभ भाई पटेल भारत के पहले गृह मंत्री थे और अपने शांत स्वभाव तथा सुदृढ़ व्यक्तित्व के लिए जाने जाते थे।

वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नाडियाड में उनके ननिहाल में हुआ था। वह एक सधारण किसान परिवार के थे। नवीन भारत का निर्माता तथा राष्ट्रीय एकता के शिल्पी के रुप में प्रसिद्ध सरदार पटेल ने गांधी जी के साथ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उनकी माता का नाम लाडबा पटेल था। बचपन से ही वह बहुत मेधावी थे। उन्होंने वकालत की पढ़ाई पूरी की और ज़िला अधिवक्ता की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। जिससे उन्हें वकालत करने की अनुमति मिली। उनके जीवन से जुड़े अनेक ऐसे किस्से सुनने-पढ़ने को मिलते रहे हैं, जिससे उनकी ईमानदारी, दृढ़ निश्चय, समर्पण, निष्ठा और हिम्मत की मिसाल मिलती हैं। सरदार पटेल बचपन से अन्याय नहीं सहन कर पाते थे। नडियाद में उनके स्कूल में अध्यापक पुस्तकों का व्यापार करते थे तथा छात्रों को बाहर से पुस्तक खरीदने से रोकते थे। सरदार पटेल ने इसका विरोध किया तथा साथी छात्रों को आंदोलन के प्रेरित किया। इस तरह छात्रों के विरोध के कारण अध्यापकों को अपना व्यापार बंद करना पड़ा।

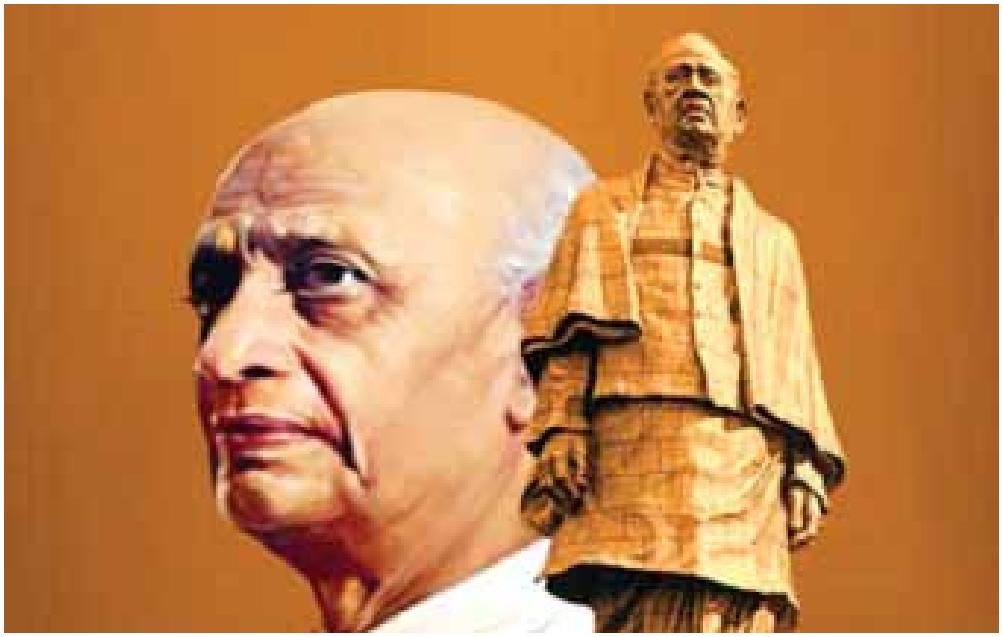

500 रियासतों को मिलाने का किया था कार्य

सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पहले पी.वी. मेनन के साथ मिलकर कई देशी रियासतों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। उनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप तीन राज्यों को छोड़ सभी भारत संघ में सम्मिलित हो गए। 15 अगस्त 1947 तक हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ को छोड़कर शेष भारतीय रियासतें 'भारत संघ' में सम्मिलित हो चुकी थी। ऐसे में जब जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध विद्रोह हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहां सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया।

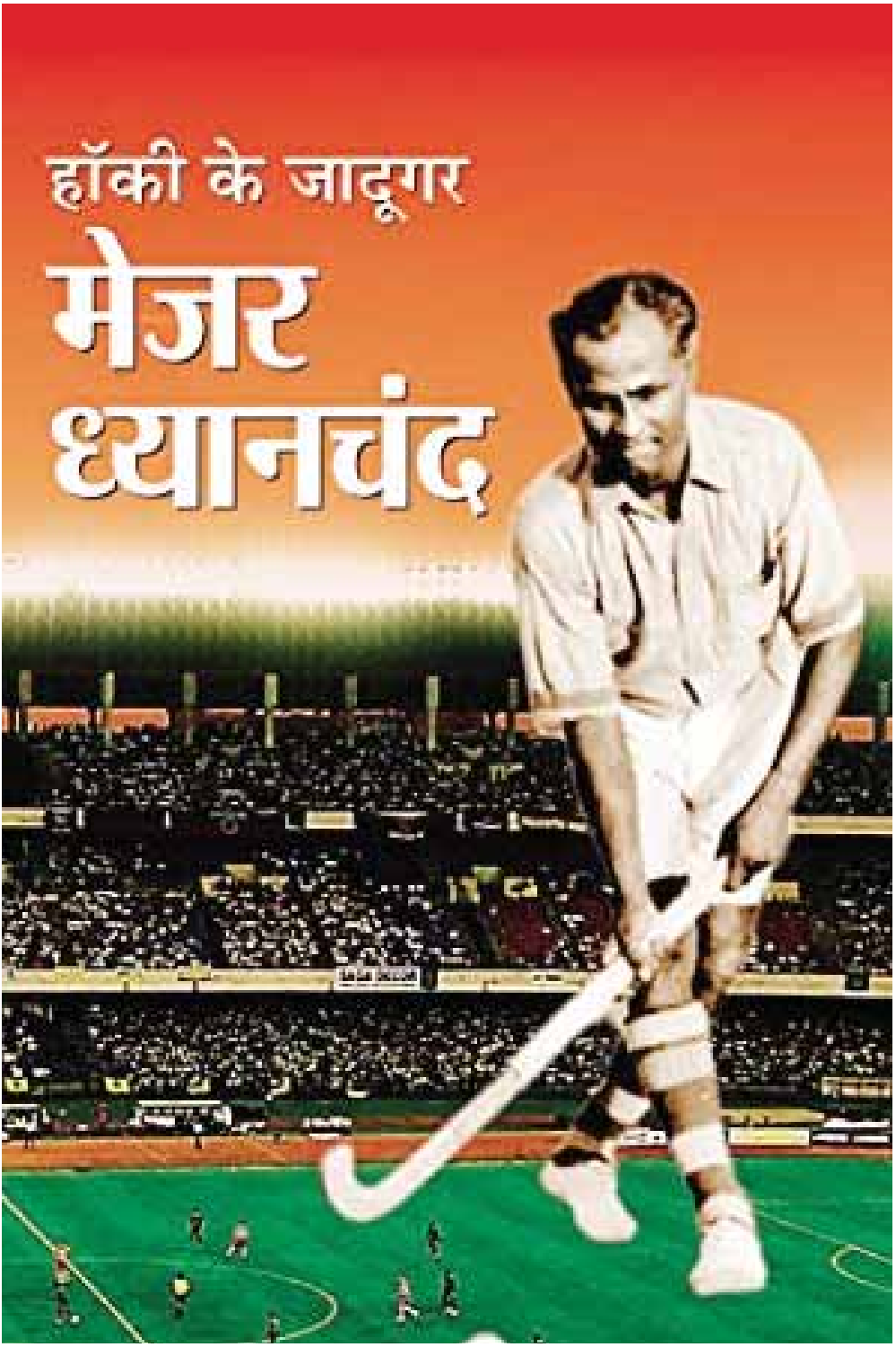

हॉकी के जादूगर ने अपनी काबिलियत के दम पर पूरे दुनिया में अपना नाम कमाया। तो आइए हॉकी के महारथी मेजर ध्यान चंद के बारे में कुछ रोचक बातें बताते हैं। ध्यानचंद का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर में हुआ था। इनके पिता का नाम समेश्वर सिंह था जो आर्मी में थे। ध्यानचंद के छोटे भाई भी हाकी खेलते थे। ध्यानचंद का परिवार झांसी में बस गया था।

ध्यानचंद को अपने बचपन के दिनों में पहलवानी पसंद थी। वह 16 साल की आयु मे आर्मी में भर्ती हो गए। ध्यानचंद केवल आर्मी हॉकी और रेजिमेंट गेम्स खेलते थे। ध्यानचंद ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे उन्होंने केवल छठवीं तक पढ़ाई की थी। इसके पीछे कारण यह था कि उनके पिता का हमेशा तबादला होता रहता था जिसके कारण उन्हें स्थायी रूप से पढ़ने का मौका नहीं मिला।

कैरियर

ध्यानचंद अभूतपूर्व प्रतिभा के धनी थे। उनके खेल के दौरान भारत ने ओलम्पिक में तीन गोल्ड मैडल जीते थे। ये गोल्ड मैडल 1928, 1932 और 1936 में जीते गए। ध्यानचंद का पहला विदेशी दौरा 1926 में हुआ था जब हॉकी टीम मैच खेलने न्यूजीलैंड जा रही थी। 1928 में एम्सटर्डम में खेल के दौरान ध्यानचंद ने 14 गोल किए। वह सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी थे। 1932 में ओलंपिक फाइनल का मैच के ऐसा मैच था जिसमें ध्यानचंद अपने भाई के साथ खेल रहे थे। उसमें उनके भाई रूप सिंह ने 10 गोल किए थे। विएना के स्पोर्टस क्लब में ध्यानचंद की चार हाथों वाली मूर्ति लगी है जिसमें दो हाथों के अलावा दो हॉकी भी बनी हुई है।

पुरस्कार

भारत के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार पद्मभूषण से ध्यानचंद को 1956 में सम्मानित किया गया। उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय खेल दिवस घोषित किया गया है। उनके जन्मदिन के अवसर पर अर्जुन तथा द्रौणाचार्य पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। भारतीय ओलम्पिक संघ ने ध्यानचंद को शताब्दी का खिलाड़ी कहा है। ध्यानचंद की याद में डाक टिकट जारी किया गया था। उनके सम्मान में दिल्ली में ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम का निर्माण भी कराया गया था।

बड़ी हस्तियां भी थीं ध्यानचंद की मुरीद

दुनिया में क्रिकेट के लिए मशहूर ब्रैडमैन भी ध्यानचंद की प्रशंसा करते थे। यह संयोग है कि 27 अगस्त को जहां ब्रैडमैन का जन्मदिन है वहीं 29 अगस्त को ध्यानचंद की जन्मतिथि मनायी जाती है। यही नहीं जर्मनी के हिटलर भी ध्यानचंद के खेल से बहुत प्रभावित थे। हिटलर के अलावा जर्मनी की जनता भी ध्यानचंद की बहुत प्रशंसक थी।

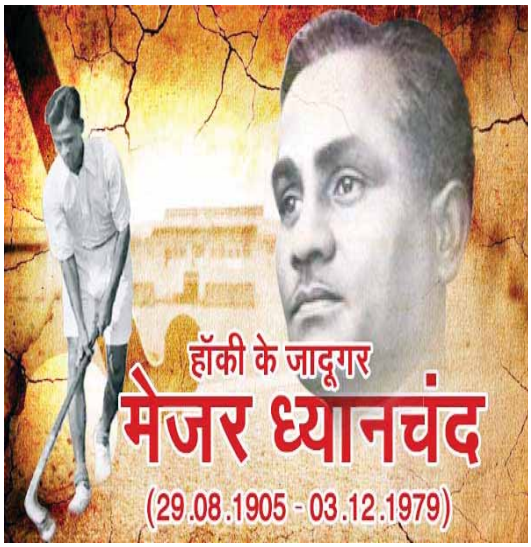

हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान के उपासक थे मदन मोहन मालवीय जी

आधुनिक भारत में प्रथम शिक्षा नीति के जनक, शिक्षा के विशाल केंद्र काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक, सांस्कृतिक नवजागरण स्वदेशी एवं हिंदी आंदोलनों के प्रवर्तक राष्ट्रभक्त महान समाज सुधारक भारतीय काया में पुनः नयी चेतना एवं ऊर्जा का संचार करने वाले महामना मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर 1861 को हुआ था। मालवीय जी के पिता पण्डित ब्रजनाथ कथा, प्रवचन और पौरोहित्य से ही अपने परिवार का पालन-पोषण करते थे। प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करके मालवीय जी ने संस्कृत व अंग्रेजी पढ़ी। मालवीय जी युवावस्था में अंग्रेजी तथा संस्कृत दोनों ही भाषाओं में धाराप्रवाह बोलते थे। महामना मदन मोहन मालवीय बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। खेलकूद, व्यायाम,कुश्ती, बांसुरी एवं सितार वादन में उनकी रुचि थी। बाल जीवन में ही एक भाषण-दल बनाया था जो चौराहों पर तथा मेलों, सभाओं में विभिन्न विषयों पर भाषण दिया करता था। कवि और साहित्यकार की प्रतिभा भी विद्यमान थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र की कवि मंडली में भी जुड़े हुए थे।

स्नातक करने के बाद मालवीय जी ने अध्यापक की नौकरी की तथा बाद में वकालत भी की। उनकी वकालत की विशेषता थी- गरीबों तथा सार्वजनिक हित के मामलों में कोई फीस न लेना, जिसमें झूठ बोलना पड़े ऐसा केस न लेना। महामना ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी कार्य किया। जुलाई 1887 से जून 1889 तक हिंदी दैनिक हिन्दोस्थान(कालांकर) के मुख्य संपादक,जुलाई 1889 से 1992 तक अंग्रेजी पत्र ÷इण्डियन यूनियन÷ के सह संपादक और 1907 में साप्ताहिक अभ्युदय 1909 में अंग्रेजी दैनिक लीडर 1910 में हिंदी पाक्षिक मर्यादा एवं 1933 में हिंदी साप्ताहिक सनातन धर्म के संस्थापक तथा कुछ वर्षों तक इन सभी पत्रों के संपादक रहे। मालवीय जी 1924 से 1940 तक हिंदुस्तान टाइम्स दिल्ली के चेयरमैन रहे। मालवीय जी ने 1908 में अखिल भारतीय संपादक सम्मेलन, प्रयाग के अध्यक्ष पद से समाचार पत्रों की स्वतंता का हनन करने वाले सरकारी प्रेस एक्ट तथा न्यूज पेपर एक्ट की कड़ी आलोचना की थी। सन 1910 में मालवीय जी ने प्रान्तीय कौंसिल में सरकारी प्रेस विधेयक का कड़ा विरोध किया। जनचेतना एवं जनआंदोलन की लहर जगाने में महामना की पत्रकारिता ने एक बड़ी भूमिका निभायी थी। उनके लिये पत्रकारिता कोई व्यवसाय नहीं अपितु एक धर्म था। वे पत्रकारिता को एक कला मानते थे। हिंदू धर्म व समाज पर जब भी कोई संकट आता तो वे तुरंत सक्रिय हो जाते थे। हिंदी, हिंदू और हिंदुस्तान के लिए 24 घंटे कार्यरत रहते थे। उन्होने 10 अक्टूबर 1910 को काशी में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की और अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने सभी से हिंदी सीखने का आह्वान किया। 19 अप्रैल 1919 को बम्बई में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मालवीय जी ने देवनागरी लिपि में लिखी गयी हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा की मान्यता प्रदान करने पर जोर दिया। मालवीय जी भारतीय विद्यार्थियों के लिए प्राचीन भारतीय दर्शन, साहित्य, संस्कृति और अन्य सुविधाओं के साथ-साथ अर्वाचीन नीतिशास्त्र, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, विधि विज्ञान, अर्थशास्त्र और राजनीति का अध्ययन आवश्यक समझते थे। हिंदी की सेवा और गोरक्षा में उनके प्राण बसते थे।

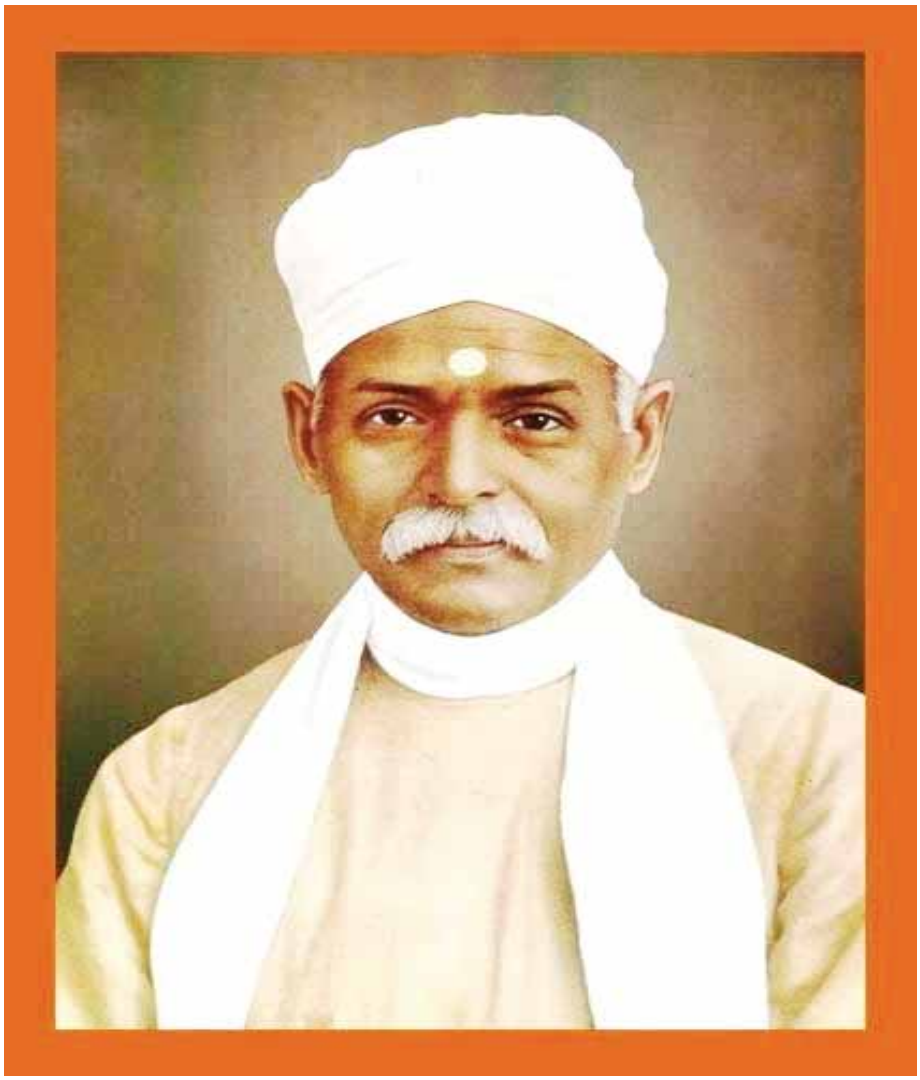

उन्होने लाला लाजपत राय और स्वामी श्रद्धानंद के साथ मिलकर अखिल भारतीय हिंदू महासभा की स्थापना की थी। वे 1923, 24 और 36 में अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष रहे। जबकि 1909, 18, 32, 33 में वे अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। वे महान समाजसेवी भी थे। समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए सतत प्रयास किये। महिलाओं में निरक्षरता को समाप्त करने के लिए अनेक शिक्षण संस्थाएं खुलवायीं।उन्होनें अपने जीवनकाल में ही व्यायामशाला, गौशाला और मंदिर भी बनवाये और हिंदू के प्रति प्रेम होने के कारण उन्होनें हजारों हरिजन बंधुओं को ऊँ नमः शिवाय और गायत्री मंत्र की दीक्षा दी। मालवीय जी ने नवम्बर सन 1889 में भारती भवन नाम से पुस्तकालय स्थापित करवाया। जिसका उद्देश्य हिंदी और संस्कृत पुस्तकों का संग्रह और अध्ययन था। मालवीय जी ने हिंदू विद्यार्थियों के रहने के लिए एक छात्रावास के निमित्त प्रांतों में घूम -घूमकर धन एकत्र किया। वे जीवन पर्यंत समाजसेवा में रत रहे ।

अगस्त 1946 में जब मुस्लिम लीग ने सीधी कार्यवाही के नाम पर पूर्वोत्तर भारत में कत्लेआम किया तो मालवीय जी बीमार थे। वहां हिंदू नारियों पर अत्याचारों को सुनकर वे रो पड़े। इसी अवस्था में 12 नवंबर 1946 को उनका देहान्त हुआ।

जिलेटिन फेस मास्क से पायें निखरी त्वचा

क्या आप भी अपने खोये हुए ग्लो को वापस पाना चाहते है या फिर ओपन पोर्स की समस्या ने आपके चेहरे की खूबसूरती को बिगाड़ रखा है। आज हम आपको एक ऐसा उपाय बता रहे है जिससे आप अपने चेहरे की खोई चमक को वापस पा सकते है। हम बात कर रहे है जिलेटिन की। खानें में जिलेटिन का ज़्यादा उपयोग ठीक नहीं होता है लेकिन यह स्किन केयर के लिए बहुत अच्छा होता है। आप जिलेटिन फेस मास्क का यूज़ करके स्किन के खोये हुए ग्लो को वापस पा सकती है। जिलेटिन फेस मास्क सभी प्रकार की त्वचा के लिए उपयोगी साबित हो सकता है। डेड सेल्स को हटाने के लिए इसका उपयोग फेस मास्क के रूप में किया जा सकता है। यह ब्लैकहेड्स की प्रॉब्लम दूर करने में भी असरदार है और ओपन पोर्स की समस्या भी कम करता है। यह कोलेजन का अच्छा सोर्स है और स्किन का लचीलापन बनाए रखने में मददगार है। रिंकल्स, पिग्मेंटेशन, काले धब्बे, से छुटकारा पाने में मदद कर सकता है। जिलेटिन फेस मास्क आपकी त्वचा को तरोताज़ा बना देता है। दोनों को मिक्स करके धीमी आंच पर लगभग पांच मिनट

तक गरम करें। थोड़ा गाढ़ा होने पर आंच से हटा लें और ठंडा होने के लिए रख दें। अगर आप फ्रिज में ठंडा होने को रखते है तो ज्यादा देर तक फ्रिज में ना रखें। ब्रश की सहायता से फेस पर लगायें। 15 मिनट तक लगा रहने दें। मास्क सूखने के बाद आराम से हटायें। उसके बाद गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। अपनी स्किन टाइप को ध्यान में रखते हुए ही फ्रूट जूस चुने अगर आपकी स्किन ऑयली है तो ऑरेंज जूस, अंगूर, टमाटर या गाजर का रस इस्तेमाल कर सकती है। अगर स्किन ड्राई है तो सेब, स्ट्रॉबेरी, नाशपाती का इस्तेमाल करें। अगर आप चाहें तो फ्रूट्स को मिक्स कर के भी लगा सकती है। सर्दियों में आप फ्रूट जूस की जगह दही का भी इस्तेमाल कर सकती है इसके लिए आप एक चम्मच जिलेटिन को दो-तीन चम्मच दही में मिक्स करें इसमें आधा चम्मच मैदा मिक्स करें। इसे अच्छी तरह मिक्स करिये जब यह अच्छी तरह मिक्स हो जाये फेस पर लगायें। 20 मिनट तक लगा रहने दें फिर गुनगुने पानी से चेहरा धो लें। कोई भी मास्क अप्लाई करने के बाद चेहरे को मॉश्चराइज जरूर करना चाहिए नहीं तो स्किन ड्राई हो जायेगी।

बालों की प्रॉब्लम्स को जानकर चुनें सही हेयर ऑयल

हर किसी के बाल अलग तरह के होते है किसी के स्ट्रेट और सॉफ्ट तो किसी के कर्ली तो किसी के रफ। इसी तरह हर किसी के बालों को पोषण की जरुरत भी अलग तरह की होती है। बालों के लिए ऑयल भी बालों की जरूरत के हिसाब से चूज करना होता है लेकिन हम जो भी हेयर ऑयल घर में मौजूद होता है उसको अपने बालों में इस्तेमाल करते है या फिर टीवी के विज्ञापनों में सुझाये गए हेयर ऑयल का यूज करते हैं। इस तरह से बालों की जरुरत समझे बिना हेयर ऑयल इस्तेमाल करने से आपके बाल डैमेज होते हैं। आज हम आपको बालों के लिए हेयर ऑयल चूज करने का सही तरीका बताएंगे-

रूखे बाल

अगर आपके बाल एकदम रूखे और बेजान रहते हैं तो अंगूर के बीजों का तेल या फिर अनार के बीजों का तेल आपके बालों में जान डाल देंगे। यह तेल आप थोड़ी मात्रा में नारियल तेल में मिक्स करके बालों में अप्लाई कर सकते हैं। ऑलिव ऑयल भी आपके बालों का रूखापन दूर करके उनको शाइनी बनाने में आपकी हेल्प करेगा, ऑलिव ऑयल में एंटी ऑक्सीडेंट और विटामिन श्च पाया जाता है। यह तेल आपके बालों को नरिशमेन्ट देंगे और उनको रिपेयर भी करेंगे। अनार का तेल

बालों का रूखापन भी दूर करने में मददगार है।

ऑयली बाल

अगर आपके बाल शैम्पू करने के बाद भी चिपचिपे रहते हैं तो आपके बाल ऑयली हैं। ऑयली बालों के लिए आंवला ऑयल बेस्ट है। यह आपके बालों के ऑयलीनेस को दूर करके सीबम को बैलेंस रखेगा। आंवला आपके बालों की डैमेज को भी रिपेयर करने में सहायक है,आंवला बालों की शाइन बढ़ाने में भी हेल्प करता है।

होम मेड सीरम, ग्लोइंग स्किन और दाग धब्बों से छुटकारा पाने के लिए

मार्केट में स्किन टाइप के मुताबिक कई तरह के फेस सीरम जैसे, रेटिनॉल फेस सीरम, विटामिन सी फेस सीरम, एंटी ऑक्सीडेंट युक्त फेस सीरम, हाइलुरोनिक फेस सीरम उपलब्ध हैं, आप अपनी स्किन की जरुरत के हिसाब से सीरम चूज कर सकती हैं। रोजाना सीरम का इस्तेमाल आपको कई स्किन प्रॉब्लम्स से छुटकारा दिला सकता हैं। केमिकल युक्त सीरम के लम्बे समय तक प्रयोग से आपको कुछ स्किन प्रॉब्लम्स हो सकती है। होम मेड सीरम के इस्तेमाल से आप इन सभी परेशानियों से बच सकती हैं और इनको घर पर बनाना भी आसान है, आइये जानते हैं होम मेड फेस सीरम बनाने का तरीका- अगर आपके पास एलोवेरा की पत्तियां हैं तो उनका छिलका हटाकर गुदा निकाल लें और उसमें गुलाब जल मिलाकर अच्छे से मिक्स करें। अब इसमें विटामिन इ कैप्सूल को काटकर इसका लिक्विड मिलाएं, इन तीनो को अच्छी तरह से मिक्स करें, आपका होम मेड फेस सीरम तैयार है, इसे एक कंटेनर में स्टोर कर लें। यह दो महीने तक इस्तेमाल कर सकती हैं। **कैसे लगाएं सीरम:** चेहरे को पानी और फेस वॉश से साफ करें।सीरम की कुछ बूंदे लें और इससे चेहरे की मसाज करें। कुछ देर लगा रहने दें फिर पानी से धो दें।इसका प्रयोग आप रात और दिन में कर सकती हैं।

सीरम लगाने के फायदे: यह सीरम नैचुरल चीजों से बना है तो आपको किसी तरह की स्किन एलर्जी की परेशानी नहीं होगी और केमिकल के दुष्प्रभावों से आपकी त्वचा बची रहेगी। इसमें विटामिन इ मौजूद है जो आपकी स्किन को नरिशमेंट प्रदान करता है और फ्री रेडिकल्स से बचाव करके आपके स्किन ग्लो को इम्प्रूव करने का कार्य करता है। गुलाब जल स्किन को हाइड्रेट बनाये रखने के साथ ही अच्छा स्किन क्लींजर भी है।

डार्क सर्कल्स को कर सकते हैं दूर, जानें आसान घरेलू उपाय

आप चाहें कितने भी खूबसूरत हो लेकिन किसी भी तरह का दाग या धब्बा आपके चेहरे की खूबसूरती को बिगाड़ देता है। खासकर आंखों के नीचे अगर डार्क सर्कल्स हैं तो यह आपकी सुंदरता में दाग जैसे लगतें हैं। आंखों के नीचे डार्क सर्कल नींद ना पूरी होने की वजह से या आंखों की थकान की वजह से भी हो सकते हैं। कोई लम्बी बीमारी भी इन डार्क सर्कल्स का कारण हो सकती है। पानी की कमी है तो भी डार्क सर्कल यानि आंखों के नीचे काले घेरे हो जाते हैं। कभी कभी यह मेकअप से नहीं छुप पाते है इसलिए हम आज आपको कुछ ऐसे घरेलू उपाय जिससे आप इनसे आसानी से छुटकारा पा सकते हैं।

ठंडा दूध और गुलाब जल

दूध स्किन के लिए क्लीन्ज़र का काम करता है और स्किन को हाइड्रेट रखने का भी काम करता है। एक कटोरी में

कच्चा दूध और एक चम्मच गुलाब जल मिक्स करें और कॉटन बॉल को इसमें भिगोकर आंखों पर दस से पंद्रह मिनट के लिए रखें। ध्यान रहें कॉटन बॉल से डार्क सर्कल्स का पूरा एरिया कवर हो जाये। उसके बाद साफ़ पानी से आंखों को साफ़ कर लें। ऐसा आप लगातार दो से तीन हफ्तों तक करें। आपको असर दिखने लगेगा।

शहद, नींबू और कच्चा दूध

एक कटोरी दूध में नींबू का रस मिलायें जब दूध फट जाये तो आधा चम्मच शहद मिलायें। अब इस मिश्रण से आंखों पर मसाज करें। थोड़ी देर तक ऐसे ही लगा रहने दें। दस से पंद्रह मिनट बाद साफ़ पानी से साफ़ करिये। अगर आप यह उपाय दिन में दो बार करते हैं तो आपको असर देखने को मिलेगा।

बादाम का तेल और दूध

एक चम्मच बादाम के तेल में दो चम्मच कच्चा दूध मिक्स करें और कॉटन बॉल को इसमें डुबोकर डार्क सर्कल्स को कवर करते हुये आंखों पर रखें। पंद्रह मिनट के बाद साफ़ पानी से आँखों को साफ़ कर लें। ऐसा कुछ दिनों तक करने से डार्क सर्कल्स कम हो जायेंगे

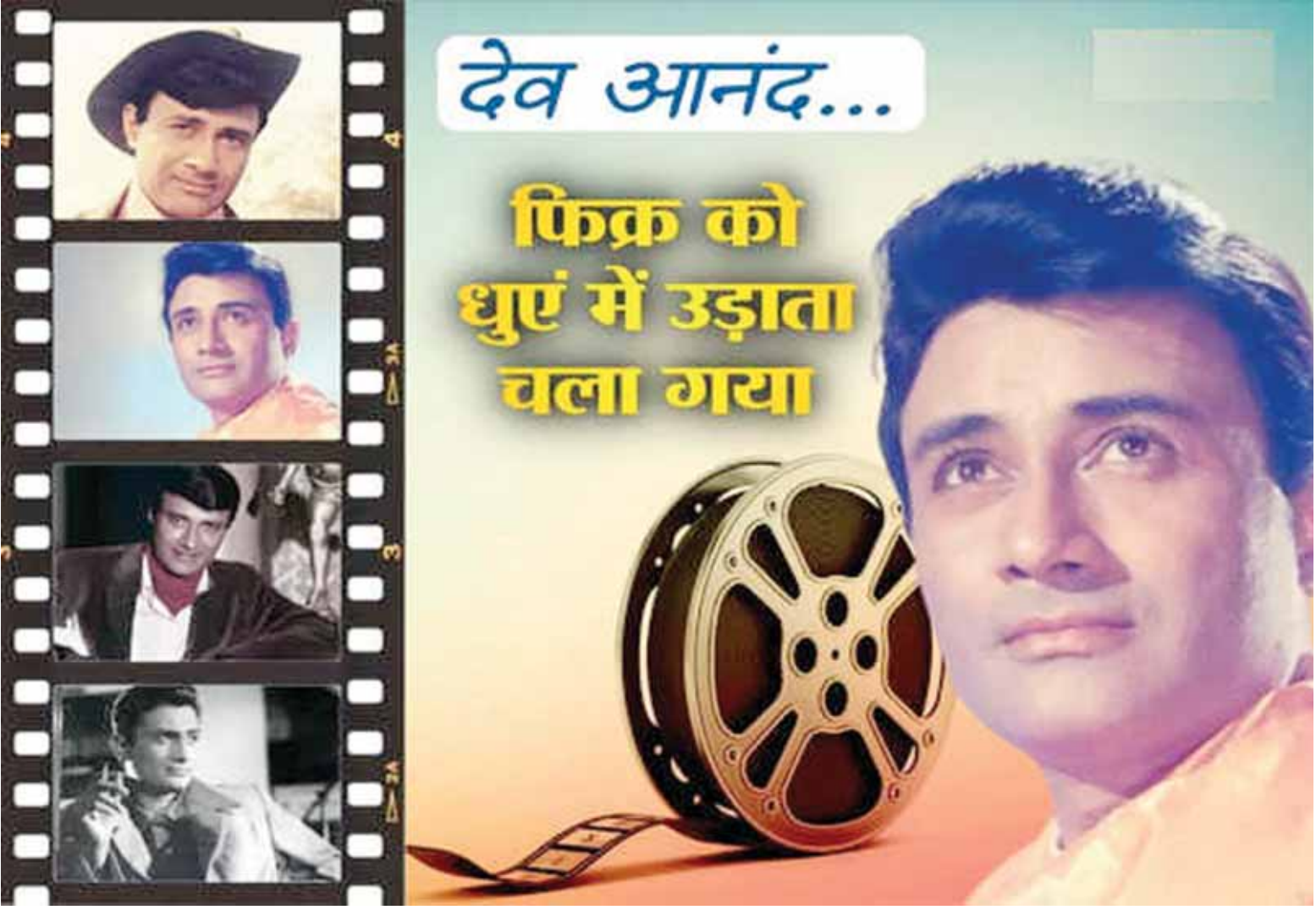

सदाबहार एक्टर देव आनंद की 12वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आज देव से जुड़ीं कुछ अहम किस्से पाठकों को बता रहे हैं। हिंदी सिनेमा के इतिहास में देव आनंद पहले एक्टर थे, जिनकी लड़कियों में सबसे ज्यादा फैन फॉलोइंग थी। देव आनंद अपनी फिल्मों के साथ ही जीने के अंदाज के लिए भी जाने जाते थे। कम ही लोग जानते हैं कि फिल्मों में आने से पहले देव आनंद ब्रिटिश सरकार के मुलाजिम हुआ करते थे। फिल्म स्टार बनने की चाह में अंग्रेजों की नौकरी छोड़ी और सिनेमा का स्ट्रगल शुरू किया। अपने दौर की सबसे खूबसूरत एक्ट्रेस सुरैया से अफेयर था। ये प्यार इतना गहरा था कि जब घर वाले इनके रिश्ते के खिलाफ हुए तो सुरैया ने ताउम्र शादी नहीं की। हालांकि देव आनंद ने अपनी को-एक्ट्रेस कल्पना कार्तिक से शादी की थी। वो भी फिल्म के सेट पर ही। फिर अलगाव भी हुआ।

बॉलीवुड में कई एक्टर आए और गए लेकिन एक ऐसे एक्टर जिन्होंने अपने टैलेंट से करीब 6 दशकों तक लोगों के दिल पर राज किया वो थे लीजेंड देव आनंद साहब जी। देव आनंद की एक्टिंग और डायलॉग का हर कोई दिवाना था। अपने हुनर, अदाकारी के जादू से उन्होंने लाखों फैन बनाए। अपने जमाने के फैशन आइकन कहे जाने वाले देव आंनद की एक झलक पाने के लिए लोग बेकरार रहते थे। आज भले ही वो हमारे साथ न हो लेकिन उनकी फिल्में आज भी उनकी यादों को ताजा करने के लिए बहुत है। देव आनंद का जन्म 26 सितंबर 1923 को पंजाब में हुआ था। देव आंनद ने अपने करियर की शुरूआत साल 1946 से की और उनकी पहली फिल्म का नाम था हम एक है। हालांकि, ये फिल्म कुछ ज्यादा हिट साबित नहीं हुई और बाद में उन्होंने एक से बढ़कर एक फिल्मों में काम किया जो सुपरहिट साबित हुई। देव आनंद ने लगभग 116 फिल्मों में काम किया। बता दें कि लड़कियां देव आनंद की एक झलक पाने के लिए किसी

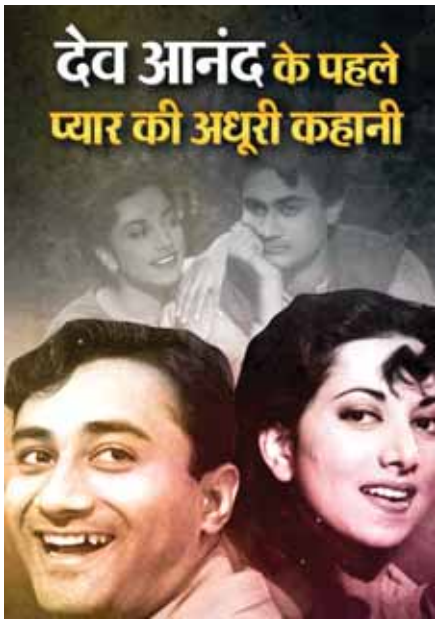

भी हद तक चली जाती थी। फिल्मों के साथ-साथ देव आंनद के जिंदगी के जुड़े किस्से काफी मशहूर थे। साल 2011 में दिल का दौरा पड़ने से उनकी मौत लंदन में हो गई थी। देव आनंद एक ऐसे एक्टर थे जिनके पहनावे पर कोर्ट को भी दखल देना पड़ गया था। वह अपने जमाने में काले कोट को लेकर काफी सुर्खियों में रहे। जब वह काला कोट पहनकर पब्लिक प्लेस में निकलते थे तो उनकी एक झलक पाने के लिए लोग दिवाने हो जाते थे। उस दौर में देव आनंद का काला कोट और व्हाइट शर्ट बहुत ज्यादा पॉपुलर हुआ। हर कोई उनके एक लुक को देखने के लिए दिवाने हो जाते थे। यहां तक की लोग उनके स्टाइल को कॉपी करने की कोशिश करते थे लेकिन कोई भी उन्हें टक्कर नहीं दे पाता था। देव आनंद की फिल्म काला पानी के बाद उनके काले कोट पहनने पर कोर्ट ने रोक लगा दी थी। कहा जाता है कि देव आनंद ने इस फिल्म में काला कोट पहना था जिसमें वह काफी हैंडसम दिख रहे थे। वह जब भी काले कोट में बाहर निकलते तो उनकी एक झलक पाने के लिए लड़कियां छत से कूद जाती थी। देव आनंद की दीवानगी को देखते हुए कोर्ट ने उन्हें पब्लिक प्लेस में काला कोट पहनने पर बैन लगा दिया था। फिल्म विद्या में देव आनंद को सुरैया से प्यार हो गया था। देव आनंद ने फिल्म के सेट से किसी से तीन हजार रुपए लेकर सुरैया के लिए एक अंगूठी खरीदी थी और सुरैया को प्रपोज किया था। लेकिन सुरैया की नानी को ये रिश्ता मंजूर नहीं जिसके बाद वह सारी उम्र कुंवारी रही। देव आनंद ने बॉलीवुड के कई दिग्गज अभिनेताओं के साथ फिल्मों में काम किया सिवाए अमिताभ बच्चन के। माना जाता है कि अमिताभ बच्चन जंजीर फिल्म में काम कर रहे थे जो पहले देव आनंद के लिए कास्ट की गई थी। देव आनंद खुद को कभी भी फिल्मों में मरा हुआ नहीं दिखाना चाहते थे। इसके अलावा वह भारत से बाहर अपनी आखिरी सांस लेना चाहते और ऐसा ही हुआ। देव आनंद का 3 दिसंबर 2011 को दिल का दौरा पड़ने से 88 साल की उम्र में लंदन में निधन हो गया था।

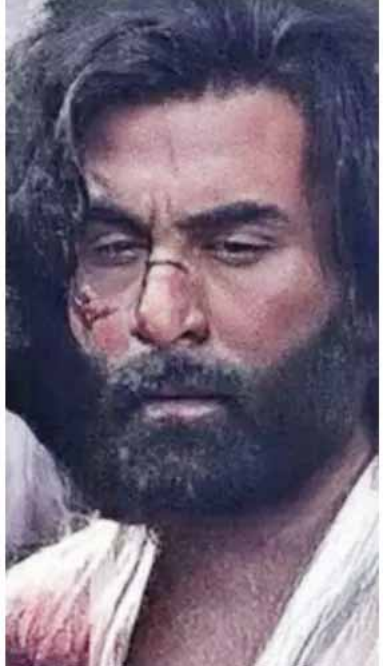

2023 में रिलीज होंगी बड़ी फिल्में

साल 2022 दृश्यम 2, गंगूबाई काठीवाड़ी और आरआरआर सहित कई फिल्मों के लिए गेम-चेंजर रहा है। दो साल बाद, दर्शकों ने अपने महामारी-प्रेरित आराम क्षेत्र (लॉकडाउन) से बाहर निकलकर फिर से सिनेमाघरों का रुख किया। खैर, 2023 सिनेप्रेमियों के लिए और भी अधिक रोमांचक वर्ष होने जा रहा है क्योंकि ए-लिस्टर्स के साथ कई बड़े बजट की बॉलीवुड फिल्में रिलीज होने वाली हैं। साल 2023 आपके लिए एक ट्रीट है! रोम-कॉम, एक्शन-ड्रामा, सुपरनैचुरल-कॉमेडी से लेकर बायोपिक्स तक, हर तरह की फिल्में सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली हैं। शाहरुख खान की पठान और डंकी, रणवीर सिंह-आलिया भट्ट की रॉकी और रानी की प्रेम कहानी से लेकर सलमान खान की टाइगर 3 तक, हम आपके लिए लेकर आए हैं, 2023 की सभी बड़ी रिलीज़।

पठान

बॉक्स ऑफिस पर धमाका करने के लिए शाहरुख खान की फिल्म पठान रिलीज होने वाली हैं। फिल्म पठान से शाहरुख खान लगभग चार साल बाद फिल्मों में वापसी कर रहे है। फिल्म में उन्हें एक जासूस की भूमिका निभाते हुए देखा जा सकता है। सिद्धार्थ आनंद द्वारा निर्देशित, पठान यशराज फिल्म्स द्वारा निर्मित है। इसमें दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम भी हैं। यह फिल्म 25 जनवरी, 2023 को गणतंत्र दिवस के वीकेंड पर तमिल और तेलुगु में डब किए गए संस्करणों के साथ रिलीज होने वाली है।

जवान

एटली द्वारा निर्देशित, शाहरुख की जवान हाई-ऑक्टेन एक्शन सीन और भारतीय सिनेमा से एकत्रित प्रतिभा के साथ एक शानदार इवेंट फिल्म होने का वादा करती है। शाहरुख ने जवान को एक विस्फोटक एंटरटेनर बताया। इसे एक्शन से भरपूर फिल्म कहते हुए स्त्रक्च ने कहा कि यह 2 जून, 2023 को हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ में रिलीज़ होगी।

डंकी

शाहरुख खान बहुप्रतीक्षित राजकुमार हिरानी निर्देशित डंकी में नजर आएंगे। ये पहली बार है कि शाहरुख और हिरानी

एक साथ काम कर रहे हैं। फिल्म की शूटिंग अप्रैल 2022 से शुरू होगी, जिसके अगले शेड्यूल की शूटिंग बड़े पैमाने पर पंजाब में की जाएगी। फिल्म में शाहरुख के अलावा तापसी पन्नू मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। खैर स्त्रक्च 2023 का धमाकेदार अंत करेगा क्योंकि डंकी 22 दिसंबर, 2023 को सिनेमाघरों में उतरेगी।

टाइगर 3

सलमान खान और कैटरीना कैफ स्टारर दिवाली 2023 को सिनेमाघरों में उतरेगी। मनीष शर्मा द्वारा निर्देशित टाइगर 3 में कथित तौर पर इमरान हाशमी खलनायक की भूमिका में हैं। कबीर खान द्वारा निर्देशित पहली किस्त एक था टाइगर 2012 में रिलीज़ हुई थी। दूसरी टाइगर ज़िंदा है 2017 में रिलीज़ हुई थी और इसे अली अब्बास ज़फ़र ने निर्देशित किया था। यह फिल्म तीन भाषाओं- हिंदी, तमिल और तेलुगू में रिलीज होगी।

एनिमल

खबर है कि रणबीर कपूर अपनी अगली फिल्म एनिमल पर काम कर रहे हैं। उन्होंने फिल्म निर्माता संदीप रेड्डी वांगा के साथ सहयोग किया है, जिन्होंने अपनी पहली फिल्म अर्जुन रेड्डी से धूम मचाई थी। अनिल कपूर, बॉबी देओल, रश्मिका मंदाना और तृप्ति डिमरी की विशेषता वाली इस फिल्म को पिता-पुत्र के रिश्ते के साथ एक गैंगस्टर ड्रामा कहा जाता है। एनिमल, एक अखिल भारतीय परियोजना है जो सभी दक्षिणी भाषाओं के साथ-साथ हिंदी में भी रिलीज़ होगी। यह फिल्म 11 अगस्त, 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

आदिपुरुष

प्रभास-स्टारर आदिपुरुष एक मेगा कैनवास, पैन इंडिया प्रोजेक्ट है जो अपनी घोषणा के बाद से ही चर्चा में रहा है। फिल्म में सैफ अली खान और कृति सेनन भी मुख्य भूमिका में हैं। ओम राउत द्वारा निर्देशित, यह फिल्म पहले 12 जनवरी, 2023 को रिलीज़ होने वाली थी। हालाँकि, अब यह 16 जून, 2023 को सिनेमाघरों में उतरेगी। यह फिल्म भारतीय महाकाव्य रामायण पर आधारित है। प्रभास ने भगवान राम की भूमिका निभाई है जबकि सैफ ने फिल्म में विरोधी लंकेश की भूमिका निभाई है।

कंट्रोवर्सी क्वीन दीपिका!

दीपिका पादुकोण और शाहरुख खान की फिल्म का पहला गाना रिलीज होते ही विवादों के घेरे में आ गया है. सोशल मीडिया पर इस बात की बहस चल रही है कि दीपिका पादुकोण ने पठान के गाने बेशर्म रंग में भगवा रंग की बिकिनी पहनी है. फिल्म को लेकर बायकॉट ट्रेंड तक चल पड़ा है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है कि दीपिका पादुकोण अपने फिल्मी करियर में विवाद और बायकॉट ट्रेंड पहली बार देख रही हैं. दीपिका पादुकोण का हर फिल्स से पहले कोई ना कोई विवाद सुर्खियों में छाने लगता है. आइए, यहां जानते हैं दीपिका किस फिल्म से पहले कौन-से विवाद के घेरे में आई थीं. सिड अटैक पीड़िता पर बनी फिल्म छपाक की रिलीज से पहले दीपिका पादुकोण जेएनयू स्टूडेंट्स के प्रोटेस्ट में शामिल हुई थीं. स्टूडेंट प्रोटेस्ट में दीपिका के शामिल होने को लेकर खूब बवाल मचा था. फिल्म को बायकॉट करने तक की मांग उठी थी. दीपिका पादुकोण की फिल्म पद्मावत खूब विवादों में आई थी. फिल्म की रिलीज से पहले करणी सेना ने इतिहास से खिलवाड़ करने का आरोप लगाते हुए कई जगह हंगामा भी किया था लेकिन जब फिल्म रिलीज हो गई तो किसी भी तरह का विवाद सामने नहीं आया. संजय लीला भंसाली की फिल्म राम-लीला में दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह मुख्य भूमिका में नजर आए थे. इस फिल्म को लेकर भी खूब बवाल देखने को मिला था. कई लोगों का कहना था कि रामलीला नाम से खिलवाड़ किया जा रहा है. बाद में फिल्म का नाम बदलकर विरोधियों को शांत करा दिया गया था.दीपिका पादुकोण की फिल्म गहराईयां सोशल मीडिया पर लंबे समय तक चर्चा का विषय बनी रही थी. फिल्म में जमकर बोल्ड सीन्स और कपड़ों को लेकर खूब बवाल हुआ था. जिसके कारण फिल्म इंटरनेट पर अच्छा-खासा बज बनाने में कामयाब रही थी. ठान से शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण का गाना बेशरम रंग इस वक्त धूम मचा रहा है। विवाद के बीच इस गाने ने महज पांच दिनों में ही 100 मिलियन से ज्यादा व्यूज पार कर लिए हैं। इस हिसाब से पठान पहले से ही सुपरहिट होती दिख रही है। जहां प्रशंसकों ने बेशरम रंग में शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण की सिजलिंग केमिस्ट्री की सराहना की, यशराज फिल्म्स के आधिकारिक ट्विटर हैंडल ने खबर साझा की और लिखा, 100 मिलियन से अधिक बार देखा गया और लोगों अभी भी इसपर प्यार बरसा रहे हैं।

7 आई वर्ल्ड स्कूल के बच्चों ने गूंज स्टूडियो में गाया क्रिसमस केरल्स

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर। क्रिसमस के अवसर पर गूंज द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिसमें क्रिसमस से जुड़ीं बातें बच्चों को बताई जा रहीं हैं। इसी के अन्तर्गत ग्वालियर स्थित 7 आई वर्ल्ड स्कूल के नन्हें-मुन्ने बच्चों ने गूंज स्टूडियो का विजिट किया और रेडिया के बारे में कई जानकारी उन्हें टीम गूंज द्वारा दी गईं कि किस तरह से स्टूडियो में रेडिया के लिए कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। और कैसे दर्शकों तक पहुंचते हैं। बच्चों ने यहां आकार रेडियो के बारे में जाना कैसे इसका प्रसारण होता है और साथ ही रेडियो में कैसे रिकॉर्डिंग, एडिटिंग और शो होते है इस बारे में करीब से जाना और क्रिसमस केरल्स साँग भी गाया और खूब मस्ती भी की।

असली हीरो बनी ये लेडी पुलिस इंस्पेक्टर, मौत के मुंह से बुजुर्ग को बचा लाई...गृहमंत्री ने की बहादुरी की तारीफ

सोनम के जज्बे को सलाम

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

मध्य प्रदेश की एक महिला पुलिस कर्मी ने जो इंसानियत की मिसाल पेश की है, उसका हर कोई कायल हो गया है। कैसे एक राहगीर को जब हार्ट अटैक आया तो लेडी इंस्पेक्टर ने अपनी सूझबूझ से उसकी जान बचा ली। अगर जरा सी भी देरी होती तो युवक की मौत भी हो सकती थी। ये बात सामने आने के बाद अब लोग लेडी पुलिस ऑफिसर की तारीफ कर रहे हैं। खुद प्रदेश के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने वीडियो कॉल कर बहादुरी को सलाम किया। बीती 12 दिसंबर को गोले का मन्दिर चैराहे पर एक बुजुर्ग व्यक्ति को अटैक आने से वह रोड पर गिर पड़े थे, तभी चैराहे पर यातायात व्यवस्था सम्हाल रहीं सूबेदार सोनम पाराशर की नजर रोड पर गिरे हुए बुजुर्ग व्यक्ति पर पड़ी। उन्होंने मानवता दिखाते हुए तत्काल अचेत पड़े बुजुर्ग को सीपीआर देकर जान बचाई और बुजुर्ग को एम्बूलेंस की सहायता से अस्पताल पहुंचाया। सूबेदार सोनम द्वारा बुजुर्ग की जान बचाकर सेवाभाव का परिचय दिया और पुलिस के मानवीय पहलू को भी उजागर किया। सोनम पाराशर के जज्बे को गूंज सलाम करती है। जिन्होंने अपने फर्ज से बढ़कर काम किया और एक बुजुर्ग की जान बचाने में अहम भूमिका निभाई। विगत दिनों सूबेदार सोनम पाराशर

गूंज ने किया सोनम पाराशर का सम्मान

90.8 एफ. एम. में बतौर गेस्ट आईं और सोनम ने अपनी जिंदगी से जुड़े कई पहलूओं पर हमसे बातचीत भी की। इस अवसर पर गूंज मीडिया ग्रुप की पूरी टीम मौजूद रही। गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह ने सुबेदार सोनम पाराशर का शॉल श्रीफल एवं फूल माला पहनाकर स्वागत एवं सम्मन किया।

एडीजीपी ने किया महिला सूबेदार सोनम को सम्मानित

सूबेदार सोनम पाराशर के द्वारा किये गये उक्त पुनीत कार्य की सभी लोगों ने प्रशंसा जा रही है। विगत दिनों ग्वालियर पुलिस के इस कार्य से आमजन में पुलिस की एक अच्छी छबि बनकर उभरी

दिव्यांग पुल पर नहीं चढ़ा पाया ट्राईसाइकल, तो ट्रैफिक के जवान ने दिया सहारा, फूल माला पहनाकर सम्मानित किया

है। अति. पुलिस महानिदेशक/पुलिस महानिरीक्षक ग्वालियर जोन डी.श्रीनिवास वर्मा एवं पुलिस अधीक्षक ग्वालियर अमित सांघी द्वारा पुलिस कन्ट्रोल रूम सभागार में सूबेदार सोनम पाराशर को सम्मानित किया गया और उनके द्वारा किये गये सराहनीय व पुनीत कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की और कहा कि ड्यूटी के दौरान हमें समाज सेवा करने का मौका मिलता है और इस दौरान किसी की जान बचाना सबसे बड़ी ड्यूटी है, सूबेदार सोनम पाराशर द्वारा अपने कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए पुनीत कार्य किया है। इस अवसर पर एडीजीपी ग्वालियर जोन एवं एसपी ग्वालियर ने यातायात पुलिस के एक आरक्षक बृजेश तोमर को भी सम्मानित किया। जिसने विगत दिनों दिव्यांग युवक जो अपनी ट्राई साइकिल से पड़ाव पुल पर जा रहा था लेकिन पुल पर अपनी ट्राई साइकिल चढ़ा नहीं पा रहा था, यह नजारा ड्यूटी प्वाइंट पर खड़े एक ट्रैफिक आरक्षक ने देखा तो उसके तत्काल दौड़ते हुए दिव्यांग युवक को ट्राई साइकिलसहित पुल पार कराया। ग्वालियर पुलिस के मानवता से भरे इन कार्यों की सोशल मीडिया, समाचार पत्र व आमजन के द्वारा प्रशंसा की जा रही है। जिससे आमजन में पुलिस की एक अच्छी छवि बनकर उभरी है। इस अवसर पर अति. पुलिस अधीक्षक शहर (मध्य/यातायात) ग्वालियर श्रीमती मृगाखी डेका, अति. पुलिस अधीक्षक शहर दक्षिण मोती उर रहमान, अति. पुलिस अधीक्षक शहर (पूर्व/अपराध) राजेश डण्डोतिया, सीएसपी इन्दगंज विजय भदौरिया, ट्रेफिक डीएसपी नरेष बाबू अन्नोटिया, विक्रम कनपुरिया सहित पुलिस के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

जादूगर सिकंदर के साथ गूंज टीम ने किया धमाल

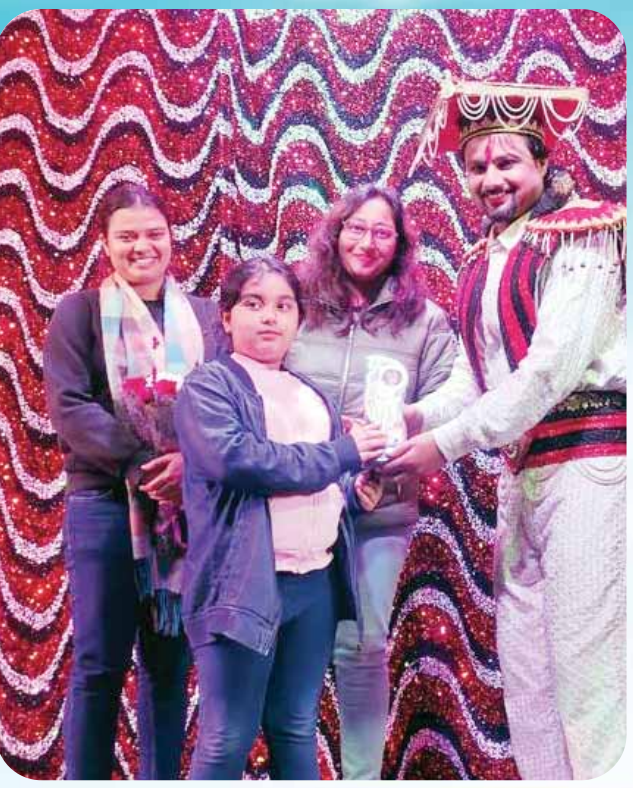

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर शहर में जादूगर सिकंदर ने शहरवासियों को अपने जादू से मंत्रमुग्ध कर दिया। लोगों के सिर चढ़कर बोला जादूगर सिकंदर का जादू। उनके मैजिक का हर कोई फैन हो गया तो गूंज की टीम कहां पीछे रहने वाली थी। जादूगर सिकंदर के साथ धमाल करने गूंज टीम जब पहुंची तो खूब मस्ती धमाल हुआ और कई हेरतअंगेज करतब जादूगर सिकंदर द्वारा दिखाए गए। जादूगर सिकंदर की मीडिया पार्टनर गूंज की टीम जादूगर सिकंदर का जादू देखने पहुंची इस अवसर पर गूंज ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह, के साथ पूरी टीम ने जादूगर सिकंदर के जादू का आनंद लिया और सभी ने खूब मस्ती की। जादूगर सिकंदर ने शहरवासियों को अपने जादू का दीवाना बना दिया। जादूगर सिकंदर का

कहना है कि आगे भी ग्वालियर आने का अवसर मिला तो जरूर आएंगे और ग्वालियरवासियों को ऐसे ही जादू के नए रंग दिखाएंगे।

गूंज स्टूडियो में जादूगर सिकंदर हुए ऑन एयर

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

जादूगर सिकंदर गूंज 90.8 एफ. एम. में बतौर मेहमान पधारे। इस अवसर पर गूंज मीडिया ग्रुप की डायेरक्टर कृति सिंह के साथ पूरी टीम ने उनका स्वागत किया। गूंज एफ एम पर ओन एयर होकर जादूगर सिकंदर ने अपनी जिंदगी से जुड़े कई पहलूओं पर हमसे बातचीत की। उन्होंने जादू से जुड़े कई पहलूओं के बारे में रेडियो के माध्यम से गूंज के दर्शकों को बताया और अपने अनुभव साझा किए। जादूगर सिकंदर ने गूंज मीडिया ग्रुप की टीम को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

सीक्रेट सेंटा से गिफ्ट पाकर खुशी से झूमे बच्चे

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

क्रिसमस के त्यौहार पर नन्हें मुन्नों को सेंटा का इंतजार रहता है कि कब जल्दी से क्रिसमस का त्यौहार आए और सेंटा हमें अच्छे-अच्छे गिफ्ट दें। बच्चों की इसी भावना को ध्यान में रखते हुए। गूंज ने इस बार 'सीक्रेट सेंटा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस क्रिसमस गूंज 90.8 की पहल गूंज का सीक्रेट सेंटा में सभी लोगों ने बढ़ चढ़ कर अपना योगदान दिया और लोगो के द्वारा पहुंचाए गए गिफ्ट को हमने नन्हें मुन्ने बच्चों के साथ शेयर किया और इस गिफ्ट को पाकर बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे इस अवसर पर गूंज की डायरेक्टर कृति सिंह, मैनेजर स्तुति सिंह, करिश्नी सिंह, आरजे कल्पना, आरजे प्रिया, आरजे अर्जुन, अभय बघेल, अछेंद्र सिंह राजावत उपस्थित रहे।

विज़न ज़ीरो

EDUCATION AND TRAINING ARE CRUCIAL IN INSTILLING APPROPRIATE BEHAVIORS AND ATTITUDES IN ROAD USERS

CRACKING DOWN ON TRAFFIC OFFENCES WILL MAKE A DIFFERENCE

90% of ALL ACCIDENTS ARE LINKED TO HUMAN ERROR

THE BEHAVIORS OF ROAD USERS IS THE ARE WITH
BY FAR THE BIGGEST POTENTIAL FOR IMPROVING ROAD SAFETY

IN 30% OF FATAL ACCIDENTS SPEEDING

DISTRACTION CAUSES 10-30% OF ROAD DEATHS

25% OF ALL ROAD FATALITIES IN EUROPE ARE ALCOHOL- RELATED

ABOUT 65% OF FATAL ACCIDENTS ARE CAUSED BY VIOLATIONS OF TRAFFIC RULES

गूंज परिवार की ओर से सभी पाठकों को क्रिसमस एवं नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

We wish you a

Merry Christmas

and

Happy New Year

2023

90.8 FM GOONJ
आपकी अपनी आवाज़

Goonj media

- Goonj 90.8FM
- Goonj Magazine
- Goonj news portal

Call us on 7880075908

Presents 2 month certificate courses + 1 month internship in

› Radio Jockey › Radio Production › Content Writing › News anchoring
› News Reporting